~~बृहत्पाकावली~~ Compiled and ~~commented upon in Hindi by~~

commentary ~~मनोहरी~~ in Hindi by

~~राजवैद्य पं० गंगाप्रसाद शर्मा~~ – Edited by

श्री श्यामसुन्दर शुक्ल शास्त्री वैद्य.

4/e, Lucknow, 1951.



बृहत्पाकावली



संग्रहकर्ता तथा 'मनोहरी'-व्याख्याकर्ता—

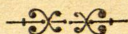
राज्यवैद्य पं० श्रीगङ्गाप्रसादशर्मा



परिष्कर्ता—

वै० भू० श्रीश्यामसुन्दर शुक्ल वैद्यशास्त्री

बृहत्पाकावली



संग्रहकर्ता तथा 'मनोहरी'-व्याख्याकर्ता,—

राज्यवैद्य पं० श्रीगङ्गाप्रसाद शर्मा

परिष्कर्ता—

वै० भू० श्रीश्यामसुन्दर शुक्ल वैद्यशास्त्री

चतुर्थ संस्करण

प्रकाशक

तेजकुमार-प्रेस बुकडिपो,

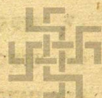
उत्तराधिकारी—नवलकिशोर-प्रेस बुकडिपो,

लखनऊ

सन् १९५१ ई०


Indira Gandhi National
Centre for the Arts

सूचीपत्र।



भूमिका।

इस संसार में काय्यों के भारवहन के लिये नैरोग्य और बलवान् होना परमावश्यक है। बल से ही मनुष्य शत्रुओं का दमन और बल से ही बड़े २ गुरुतर काय्यों को तृणसमान पूर्ण करने में उत्साही होता है। यहाँ तक कि मनुष्य बलद्वारा ही तपकर मोक्ष भी प्राप्त कर लेता है। तब क्या हमको योग्य नहीं कि ऐसे अमूल्य पदार्थ की रक्षा करने के ऐसे उपाय का अवलम्बन करें कि जिससे संसार के सुखों का अनुभव करते हुये उसकी रक्षा कर सकें। अहा! हमें बहुत दूर जाकर व अधिक सोचने की आवश्यकता ही नहीं क्योंकि हमारे कल्याण के लिये पूज्यपाद महर्षियों ने अपने तपोबलद्वारा ओषधियों के गुण विचार २ कर उत्तमोत्तम उपाय सिद्ध कर रक्खे हैं। उन महानुभवी महर्षियों के ग्रन्थ देखने से ज्ञात होता है कि बलवीर्य्य की रक्षा करने और नैरोग्यता सम्पादन करने को पाकविद्या ही मुख्य है। परन्तु अभी तक कोई ऐसा संगृहीत भाषानुवाद सहित बड़ा ग्रन्थ नहीं दृष्टि पड़ता था कि जिससे यह कार्यसिद्ध हो। अब मैंने अनेक मित्रों और चिकित्सकों के अनुरोध से अनेक आयुर्वेदग्रन्थों से संग्रहकर यह बृहत्पाकावली भाषा-टीका-सहित प्रकाशित की है। इन पाकों से वैद्यलोग स्वयं सेवन कर व औरों को कराकर अपना और पराया उपकार साधन कर सकेंगे। प्रस्तुत ग्रन्थ में जो तौल लिखी गई है वह नीचे लिखी हुई "मानपरिभाषा" के अनुसार है और "चारतोले की एक छटाँक और चौंसठ तोले का एक सेर" यही व्यवस्था इस सम्पूर्ण ग्रन्थ में है। किमधिकम्।

श्रावण शुक्ल १३ रवौ
संवत १९५९

पण्डित गंगाप्रसाद शर्मा दुबेपुर
डाकघर मगरायल, जिला उन्नाव

६ सर्षपैः	....	....१ यव
३ यवैः / ४ धान्यैः	....	....१ गुंजा (रक्तिः)
२ रक्तिकाभिः		....१ वल्ल
१० रक्तिकाभिः		....१ माशा वा =) आनाभर
४ माषैः†		....१ शाण, धरण, टंक वा ॥) आनाभर
२ शाणाभ्यां	....	....१ कोल, शुद्रक, वटक, द्रंक्षण वा १) तोला
२ कोलाभ्यां	....	....१ कर्ष, पाणि, माणिका, अक्ष, पिचु, पाणितलकिंचित्पाणि, तिंदुक, विडालपदक, षोडशिका, करमध्य, हंसपद, सुवर्ण, कवलग्रह, उदुम्बर वा २) तोला
२ कर्षाभ्यां	....	....१ शुक्ति, अर्द्धपल, अष्टमिका वा ४) तोला वा ऽ– एक छटांक
२ शुक्तिभ्यां	....	....१ पल, मुष्टि, आम्र, चतुर्थिका, प्रकुञ्च, षोडशी, बिल्व वा ८) तोला वा ऽ= आधपाव
२ पलाभ्यां	....	....१ प्रसृति, प्रसृत, १६) तोला वा ऽ। पावभर
२ प्रसृतिभ्यां	....	....१ अंजलि, कुडव, अर्द्धशराव, अष्टमान ३२) तोला वा ऽ॥ सेर

---

† दशगुञ्जाभिर्माषस्तु चरकस्याभिमतः। सुश्रुतानुसारिणस्तु षड्भिर्गुञ्जाभिर्माषं च ॥

२ कुडवाभ्यां ....१ माणिका, शराव, अष्टपल वा ६४) तोला वा ऽ१ सेर

२ शरावाभ्यां ....१ प्रस्थ वा ऽ२ सेर

४ प्रस्थैः ....१ आढक, भाजन, कंस, पात्र, चतुःषष्टिपल वा ऽ८ सेर

४ आढकैः ....१ द्रोण, कलश, नल्वण, अर्मण, उन्मान, घट, राशि वा ।।।ऽ२ सेर

२ द्रोणाभ्यां ....१ सूर्प, कुंभ, चतुःषष्टिशरावक वा १।।ऽ४ सेर

२ सूर्पाभ्यां ....१ द्रोणी, बृहद्द्रोणी वा ३ऽ८ सेर

२ द्रोणीभिः ....१ खारी वा १२।।।ऽ२ सेर

१०० पलैः ....१ तुला वा ।ऽ२।। सेर

२००० पलैः ....१ भार वा ६।ऽ मन



सहत के अभाव में	पुराना गुड़ लेवे	महामेदा के अभाव में	शतावर लेवे
शालीधान ,,	साठीधान ,,	जीवक / ऋषभक ,,	विदारीकंद ,,
तगरमूल ,,	सिंहलीमूल ,,	ऋद्धी / वृद्धी ,,	असगन्ध ,,
अनार के ,,	वृक्षाम्ल ,,	काकोली / क्षीरकाकोली ,,	वाराहीकंद* ,,
मिश्री ,,	सफेद शक्कर ,,		
चाब / गजपीपरि ,,	पिपलामूल ,,		
सोरठीमाटी ,,	चहलाकी पपरी ,,		
रसाञ्जन ,,	दारुहल्दी का क्वाथ ,,		
दारुहरिद्रा ,,	हरिद्रा ,,		
लौह ,,	मंडूर ,,		
सुवर्ण / चांदी ,,	लौह ,,		
मुंजातक ,,	तालकाखोसा ,,		
वाराहीकन्द ,,	पनियारीकीजड़ (चर्मकारालुक) ,,		
पुष्करमूल ,,	कूट ,,		
सेंधानमक ,,	सामुद्र (विड) लवण ,,		
कुस्तुम्बुरु (ओदी धनियां ,,	धनियां ,,		
फूल ,, ,,	कच्चाफल ,,		
उदरामय में	बेलकाफल ,,		
भिलावां के न सहने में	लालचन्दन ,,		
सिद्धार्थक के अभाव में	सेरसै ,,		
मेदा ,,	शताबर ,,		

भेषज-ग्रहण-संकेत ।

चन्दन शब्द कहा हो तो	लालचन्द लेवे†	
लवण ,,	सेंधा लवण ,,	
मूत्र ,,	गोमूत्र ,,	
विष्टारस / दूध / घी ,,	गऊ का घी ,,	

खैर आदि का सार ले
निम्बादि की त्वचा ले
अनार आदि का फल ले
परवर आदि के पत्ते ले
फल प्रधान वृक्षों के फल ले
चीत शब्द कहा हो तो लालचीतकी जड़ ले
अंग अनुक्त हो तो जड़ ले
भाग ,, समभाग ले
पात्र ,, मट्टी का पात्र ले
काल ,, प्रातःकाल
द्रव ,, जल देवे

---

* वाराहीकन्दसंज्ञस्तु पश्चिमे गृष्टिसंज्ञकः। अनूपसम्भवे देशे वराह इव लोमवान् ॥ भावप्रकाशः ।

† चूर्णस्नेहासवस्नेहाः साध्या धवलचन्दनैः । कषायलेपयोः प्रायो युज्यते रक्तचन्दनम् ॥ भावप्रकाशः ।

बड़ीत्रिफला

१ आंवला, २ हर्र, ३ बहेड़ा

छोटीत्रिफला

१ खंभारि, २छोहारा, ३फालसा के फल

त्रिमद

१ नागरमोथा, २ चीत, ३ वायविडंग

त्र्यूषण (त्रिकटु)

१ पिपली, २ मिर्च, ३ सोंठि

चतुरूषण

१ पिपली, २ मिर्च, ३ सोंठि, ४ चीत

पञ्चोषण

१ पिपली, २ पिपलामूल, ३ सोंठि, ४ चीताकी जड़, ५ चाब

षडूषण

१ पिपली, २ मिर्च, ३ सोंठि.४ पिपलामूल, ५ चीत, ६ चाब

त्रिजात

१ तज, २ पत्रज, ३ इलायची

चातुर्जात

१ तज, २पत्रज, ३इलायची, ४नागकेशर

सर्वगन्ध

१ तज, २ पत्रज, ३ इलायची, ४नागकेशर, ५ कपूर, ६ कंकोल, ७ अगुरु, ८ शिलारस, ९ लवंग

चातुर्भद्रक

१ सोंठि, २अतीस, ३नागरमोथा, ४गुर्च

क्षीरवृक्ष

१ गूलर, २ बरगद, ३पीपल, ४पारस पीपल, ५ पाकरि

चतुरम्ल

१ बेर, २ बिजौरा नींबू, ३ वृक्षाम्ल, ४ अम्लबेतस

पञ्चाम्ल

१ बेर, २ अनार, ३ वृक्षाम्ल, ४अम्लबेतस, ५ बिजौरा

पञ्चगव्य

१ दही, २ दूध, ३ घी, ४ गोमूत्र, ५ गोमय

लवणवर्ग

१ सेंधा, २ कालानमक, ३ सांभर, ४ सामुद्र, ५ विड़

पञ्चमूल

१ बेल, २ अरलू, ३ खंभारी, ४पाढर ५ अरनी



दशमूल

१ बेल, २अरलू, ३ खंभारी, ४ स्योनाक

५ अरनी, ६ सरिवन, ७ पिठवन, ८ छोटी भटकटैया, ९ बड़ीभटकटैया, १० गोखुरु

तृणपञ्चमूल

१ कुश, २ कास, ३ शरपत, ४ डाभ, ५ ऊंख

जीवनीय व मधुरगण

१ जीवक, २ ऋषभक, ३ मेदा, ४ महामेदा, ५ काकोली, ६ क्षीरकाकोली, ७ मुरेठी, ८ माषपर्णी, ९ मुंगौन, १० जिवई

अष्टवर्ग

१ मेदा, २ महामेदा, ३ काकोली, ४ क्षीरकाकोली, ५ जीवक, ६ ऋषभक, ७ ऋद्धि, ८ वृद्धि ॥



श्रीगणेशाय नमः ।

बृहत्पाकावली

सटीक

सच्चिदानन्दमव्यक्तं सर्वेशं गणनायकम् ॥
वन्दे शुभकरं भक्त्या प्रत्यूहव्यूहध्वस्तये ॥ १ ॥
बृहत्पाकावलिं वच्मि कटुतिक्तादिभेषजैः ॥
सुचिकित्सावतां नृणां राजन्यानां हिताय वै ॥ २ ॥
चिकित्सायां द्वयं सारं पाकविद्या रसायनम् ॥
पाकोऽवलेहभेदः स्यात् सो मृदुः सघनः परः ॥ ३ ॥
काष्ठौषध्यः पृथक् पेष्यः सुगन्ध्यादि पृथग्विधम् ॥
संपेष्य वस्त्रसम्पूतमुभयं स्थापयेद्भिषक् ॥ ४ ॥
द्राक्षाश्रीफलवातामप्रभृति स्याद्यथात्र तु ॥
तन्न पेष्यं भिषग्वर्यैः किन्तु भूरि विखण्डयेत् ॥५॥
खसतण्डुलचारस्य बीजानि तु यथास्थितिः ॥
पाके द्राक्षादिचारस्य मज्जानां मात्रयाऽधिकम् ॥ ६ ॥

पाकानुसारतो ग्राह्यं भक्षणे तत्सुखावहम् ॥
पाके जाते क्षिपेत्तत्र काष्ठौषधिभवं रजः ॥ ७ ॥
दार्व्यां विघट्टयेत्सम्यक् किञ्चिदुष्णे सुगंधि च ॥
मुहुर्विघट्टयेत्पश्चाद्द्राक्षादि प्रक्षिपेन्मुहुः ॥ ८ ॥

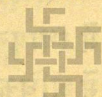
विघ्नसमूहों के नाश के लिये भक्ति से शुभ करनेवाले सच्चिदानन्द, अव्यक्त और सबके स्वामी गणनायक की वन्दना करता हूँ ॥१॥ कटु तिक्तादि ओषधियों से दवा करनेवाले मनुष्यों और राजाओं के लिये पाकावली कहता हूँ ॥२॥ पाक और रसायन विद्या यह दो ही चिकित्सा के सार हैं—पाक अवलेह का ही भेद है, अवलेह मृदु और पाक गाढ़ा होता है ॥३॥ काष्ठादि ओषधियों और सुगन्धित द्रव्यों को अलग अलग चूर्ण कर छान लेवे ॥ ४ ॥ दाख, गरी, बादामादि मेवों को पीसे नहीं किन्तु छोटे छोटे टुकड़े कर डाले ॥५॥ खसखास और चिरौंजी को ज्यों का त्यों रहने दे और इनको मात्रा में भी अधिक लेवे ॥ ६ ॥ और बाकी सब चीजें पाकानुसार ले जिसमें पाक खाने में स्वादिष्ठ हो, जब मिश्री या शक्कर का पाक ठीक हो जाय तब उसमें पिसी हुई काष्ठादि ओषधियों को डाले ॥ ७ ॥ पुनः करछी से खूब मिलाकर कुछ उष्ण रहने पर सुगन्धित द्रव्य डाल दे और अच्छी तरह मिलाने के पीछे दाख आदि मेवा डाले ॥८॥

काश्मीरं घृतपिष्टञ्च किञ्चिदुष्णं विमिश्रयेत् ॥
अहिफेनं क्षीरसंपिष्टं योजयेत्पाककर्मणि ॥ ९ ॥

पुनः संघट्टयेत्सर्वमेकीभावो यथा भवेत् ॥
ज्वालाग्निं वर्जयेद्द्रव्यः प्रक्षिपेत्समये ध्रुवम् ॥१०॥
अन्यथा हीनवीर्य्याणि भेषजानि प्रतापतः ॥
केचिच्चातुर्य्यसंसिक्तबुद्धयो हि भिषग्वराः ॥ ११ ॥
विमिश्रयन्ति वैपाके सूक्ष्मीकृतफलादिकान्॥१२॥
अनुक्तमपि पाकादौ धात्वादि प्रक्षिपेत्सुधीः ॥
चन्द्रमभ्रादि तद्वच्च यथाविभवमर्पयेत् ॥ १३ ॥
तारपत्रादिसंयुक्तं संपुटे तच्च संधृतम् ॥
यदि स्याद्राजयोग्योयमिति वैद्यविदो विदुः॥१४॥

॥ केशर को घी में पीस और कुछ गर्म कर मिलावे और अफीम को दूध में घोलकर मिलाना चाहिये ॥ ६ ॥ सब दवाइयाँ अच्छी तरह मिलावे जिससे सब एकदिल हो जायँ और पाक बनाते समय ज्वालाग्नि न दे, पाक सिद्ध होते ही औषधें छोड़े॥१०॥ अन्यथा आँच लगने से औषधें वीर्य्यहीन हो जाती हैं । कोई चतुर बुद्धिमान् राजवैद्य ॥ ११ ॥ सब मेवादिकों के छोटे छोटे टुकड़े करके मिलाते हैं ॥१२॥ अनुक्त धात्वादि को भी पाक में मिलाते हैं, कपूर, अभ्रक आदि को अपनी सामर्थ्य के अनुसार मिलाना चाहिये ॥ १३ ॥ यदि चाँदी या सोने के वर्क चढ़ाकर सिफये इमर्तबान में रक्खे तो यह पाक राजाओं के योग्य होता है ॥ १४ ॥

सुगन्धतैलांचितभाजनान्ते
स्थाप्योऽवलेहः किल राजयोग्यः ॥



वर्षासु वैद्याः प्रवदन्त्यकाले
लेहादिकं नो बहु तत्प्रकुर्य्यात् ॥ १५ ॥
मितं कृतं द्वित्रिदिनान्तराले
स्थाप्यं सुघर्मे ह्यवलेहकादि ॥
वर्षाकृतं यत्नविवर्जितं त-
द्भवेत्तु जुष्टं किल जन्तुकीटैः ॥ १६ ॥
पाके ग्राह्या सिता श्वेता विमला गुणकारिणी ॥
समलां शोधयेद्यत्नाद्यावन्मलविनिर्गमः ॥ १७ ॥
समलां च सितां प्लाव्य कटाहे विपचेत्सुधीः ॥
संसेच्यं सर्वतस्तत्र गोदुग्धं सजलं मुहुः ॥ १८ ॥
वस्त्रपोतकयोगेन ततोर्ध्वस्थं मलं हरेत् ॥
एवं पुनः पुनः कुर्य्याद्यावन्मलविनिर्गमः ॥ १९ ॥
पश्चात्पाकत्वमानीय प्रक्षिपेदौषधानि तु ॥
इति किञ्चिन्मया प्रोक्तं पाकशासनमुत्तमम् ॥ २० ॥
शेषं लोकाज्ज्ञेयम् ॥

इति शिक्षा ॥

राजयोग्य अवलेह को सुगन्धित गुलाब के इत्र से चुपरे हुये पात्र में स्थापन करे। वैद्य लोग कहते हैं कि पाक वर्षाऋतु और अकाल में अधिक न बनावे, यदि थोड़ा हो तो भी दो दो या तीन तीन दिन के उपरान्त उसको घाम में रख दिया करे क्योंकि वर्षा में बना और

यत्न से न रक्खा हुआ पाक कीड़ों से युक्त हो जाता है ॥ १५।१६ ॥ पाक में गुणकारिणी श्वेत शक्कर ले यदि मलिन हो तो मल निकल जाने तक उसे शुद्ध करे ॥ १७ ॥ मलिन खाँड़ को पानी में घोलके कड़ाह में पकावे और पानी मिला हुआ दूध वस्त्र के पोते से बारबार सेचन करे ॥ १८ ॥ और जो मल ऊपर आता जाय उसको वस्त्र के पोते से निकालता जाय जब तक सब मल न निकल जाय तब तक यह क्रिया बार बार करता रहे ॥ १९ ॥ स्वच्छ होजाने पर चाशनी करे चाशनी ठीक हो जाने पर औषधें छोड़े इस प्रकार कुछ पाक बनाने की रीति कही गई है ॥ २० ॥ बाकी गुरुविधान से करै ॥

इति शिक्षा ॥

बृहत्पूगपाकः ॥ १ ॥

पूगं दक्षिणदेशजं दशपलोन्मानं भृशं कर्त्तयेत्
तत्स्वच्छं जलयोगतो मृदुतरं संकुट्य चूर्णीकृतम् ॥
तच्चूर्णं पटशोधितं वसुगुणे गोशुद्धदुग्धे पचेद्
गव्याज्यांजलिसंयुतेतिनिबिडे दद्यात्तुलार्धांसिताम् १
पक्वं तज्ज्वलनात्क्षितिं प्रतिनयेत्तस्मिन्पुनः प्रक्षिपे-
द्यद्यत्तत्तदुदाहरामि बहुला दृष्ट्वादरात्संहिताः ॥
एलानागबलावलासचपला जातीफलालिंगिता
जातीपत्रकमत्र पत्रकयुतं तद्वत्त्वचा संयुताम् ॥२॥

विश्वावीरणवारिवारिद्वरावांशीवरीवानरी
द्राक्षा सेक्षुरगोक्षुराथ महती खर्जूरिका क्षीरिका ॥
धान्याकं सकशेरुकं समधुकं शृंगाटकं जीरकं
पृथ्वीकाथयवानिकावरटिकामांसिर्मिसिर्मेथिका ३॥
कंदेष्वत्र विदारिकाथ मुसली गन्धर्वगन्धा तथा
कर्चूरं करिकेशरं समरिचं चारस्य बीजानि च ॥
बीजं शाल्मलिसम्भवं करिकणाबीजं च राजीवजं
श्वेतं चंदनमत्र रक्तमपि च श्रीसंज्ञपुष्पैः समम् ॥४॥

सवासेर ऽ१। दक्षिणी सुपारी को अत्यंत सूक्ष्म कतर कर जल में पकावे जब मृदु हो कूटकर चूर्ण करे और ।ऽ दशसेर गऊ के दूध में पकाकर ऽ॥ आधसेर घी में भूने और फिर उसमें ऽ६। सवा छः सेर शुद्ध शक्कर डाले ॥ १ ॥ जब पक जाय तब चूल्हे से उतारकर पृथ्वी पर रक्खे उसमें नीचे की ओषधियों का चूर्ण डाले, छोटी इलायची, गुलसकरी, बरियारी, पीपरि, जायफल, शिवलिंगी, (पचगुरिया), जावित्री, तेजपात, तजकलमी ॥ २ ॥ सोंठि, उशीर, सुगन्धबाला, नागरमोथा, त्रिफला, वंशलोचन, शतावरी, कौंच बीज, दाख, तालमखाने के बीज, गोखुरू, छोहार, खिरनी, धनियां, कसेरू, मुरेठी, सिंघाड़ा, ज़ीरा स्याह, कलौंजी, जवाइनि, बरैं (कुसुम के बीज), जटामांसी, सौंफ, मेथी ॥३॥ कंदों में से बिदारीकन्द, सफ़ेद दिल्लीवाल मुसली, नागौरी असगंध, कचूर

नागकेशर, मिर्च, चिरौंजी, सेमर के बीज, गजपीपरि, कमलगट्टा, श्वेत चन्दन, लाल चन्दन, लवंग इन ४९ ओषधियों को ॥ ४ ॥

सर्वं चेति पृथक् पृथक् पलमितं संचूर्ण्य तत्र क्षिपे-
त्सूतं वंगभुजंगलोहगगनं संमारितं स्वेच्छया ॥
कस्तूरीघनसारचूर्णमपि च प्राप्तं यथा प्राक्षिपे-
त्पश्चादस्य तु मोदकान्विरचयेद्बिल्वप्रमाणं तथा ५॥
तान्भुक्त्वा च सदा यथानलबलं भुंजीत नाम्लं रसं
पूर्वस्मिन्नशिते गते परिणतिं प्राग्भोजनाद्भक्षयेत् ॥
नित्यं श्रीरतिवल्लभाख्यकमिमं यः पूगपाकं भजे-
त्तस्याद्वीर्यविवृद्धिवृद्धिमदनोवाजीवशक्तोरतौ ॥ ६ ॥
दीप्ताग्निर्बलवान्बली सुखयुतो हृष्टःसुपुष्टः सदा
वृद्धो यो ऽपि युवेव सोपि रुचिरः पूर्णेन्दुवत्सुन्दरः॥७॥

इति रतिवल्लभाख्यो बृहत्पूगपाकः ॥ १ ॥

८) आठ २ तोले लेवे और वंग, नागेश्वर, कान्तीसार, अभ्रक, कस्तूरी, शुद्ध कर्पूर इच्छानुसार यथासंभव डालकर आठ २ तोले की गोली बना ले ॥ ५ ॥ इनको पूर्व दिन के खाये हुए भोजन के पच जाने पर और भोजन करने के पूर्व पाचनशक्ति के अनुसार खावे, खटाई न खावे । जो सदा श्रीरतिवल्लभ बृहत्पूगपाक का सेवन करते हैं वे वीर्य्यवृद्धि से मदनरूप बनकर वाजी की तरह समर्थ ॥ ६ ॥ दीप्ताग्नि बलवान् सुखी और पुष्ट हो जाते हैं

अधिक क्या, वृद्ध मनुष्य भी जवान पुरुष की तरह कान्तिमान् और सुन्दर हो जाता है ॥ ७ ॥

इति रतिवल्लभाख्यो बृहत्पूगपाकः ॥ १ ॥

महाकामेश्वरबृहत्पूगपाकः ॥ २ ॥

एतस्मिन् रतिवल्लभे यदि पुनः सम्यक् खुरासानिका
धत्तूरस्य च बीजमर्ककरभः पाथोऽब्धिशोषस्तथा ॥
सन्माजूफलकं तथा खसफलं त्वक्चापि निक्षिप्यते
चूर्णार्द्धा विजया तथा सहि भवेत्कामेश्वरो मोदकः ८

इति महाकामेश्वरबृहत्पूगपाकः ॥ २ ॥

और यदि इसी पूर्वोक्त बृहत्पूगपाक में खुरासानी अजवाइन, धतूरे के शुद्ध बीज, अकरकरहा, शुद्ध समुद्रशोष, अच्छे माजूफल, पोस्ता का दाना और बोड़ी डाले और सब चूर्ण की आधी शुद्ध भाँग मिला दे तो वह महाकामेश्वर बृहत्पूगपाक हो जाता है ॥ ८ ॥

इति महाकामेश्वरबृहत्पूगपाकः ॥ २ ॥

पूगपाकः ॥ ३ ॥

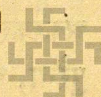
हेमांभोरुहचन्दनं त्रिकटुकं धात्रीप्रियालाकुहा
मज्जानास्त्रिसुगन्धि जीरकयुगं शृंगाटकं वंशजम् ॥
जातीकोशलवंगधान्यकयुतं प्रत्येककर्षद्वयं
पूगस्याष्टपलं विचूर्ण्य च पयःप्रस्थत्रये सर्पिषः ॥ ६ ॥

द्द्याद्गोः कुडवं सिताऽर्द्धकतुलां धात्रीवराद्यंजलिं
मन्दाग्नौ विपचेद्भिषक् शुभदिने सुस्निग्धभाण्डे क्षिपेत्।
यःखादेदनिशं प्रभातसमये मेहाश्च जीर्णज्वरं
पित्तं साम्लमसृक्स्रुतिं गुदहशोर्वक्त्रनासासु च॥१०॥
मन्दाग्निं च विजित्य पुष्टिमतुलां कुर्य्याच्च शुक्रप्रदं
पूगं गर्भकरं परं गदहरं स्त्रीणामसृग्दोषजित् ॥ ११ ॥

इति तृतीयः पूगपाकः ॥ ३ ॥

शुद्ध धतूरे के बीज, नीलोफर, लालचन्दन, सोंठि, पीपरि, मिर्च, आँवला, चिरौंजी, बेर की गूदी, तज, पत्रज, छोटी इलायची, जीरा स्याह, जीरा सफेद, सिंघाड़ा, वंशलोचन, जायफल, लवंग, धनियां प्रत्येक चार२ तोले और दक्षिणी चिकनी सुपारी ऽ१ एक सेर बांटकर ऽ६ छः सेर दूध में पकावे और गाय का घी ऽ॥ आध सेर ॥ ६ ॥ मिश्री ऽ६। सवा छः सेर आँवला तथा शतावर ऽ॥ आध २ सेर लेकर मन्दाग्नि में पकाकर शुभदिन में सिफये पात्र में रखे इसे सदा जो प्रातःकाल खाता है उसके बीसों प्रमेह, जीर्णज्वर, अम्लपित्त, गुदा, नेत्र, मुख और नासिका से रक्त बहना ॥ १० ॥ और मन्दाग्नि नाश होते हैं, अतुल पुष्टि और वीर्य्यवृद्धि करता है यह सुपारीपाक गर्भ करनेवाला, बड़े २ रोगों का नाशक और स्त्रियों के प्रदरादि रक्तदोषों का जीतनेवाला है ॥ ११ ॥

इति सुपारीपाकः ॥ ३ ॥



अथ विजयापाकः ॥ ४ ॥

विजयाया रसं शुद्धं तुलामात्रं प्रदापयेत् ॥
क्षीरं गव्यं तुलार्द्धं तु शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥ १ ॥
घनीभूतं तदुत्तार्य्य खण्डायाः पलविंशतिम् ॥
चातुर्जातं लवंगं च व्योषमाकल्लकं तथा ॥ २ ॥
जातीफलं जातिपत्री ह्यश्वगन्धा पुनर्नवा ॥
नागार्जुनी स्वगुप्तानां सबलानां पलार्द्धकम् ॥ ३ ॥
सर्वं संचूर्ण्य संमिश्रय पलार्द्धं गुटिका भवेत् ॥
प्रातः प्रातः प्रभुक्ता हि धातुपुष्टिबलप्रदा ॥ ४ ॥
प्रमेहव्याधिशमनी सर्वातीसारनाशिनी ॥
श्वासं कासं तथाध्मानं स्त्रीणां दुष्प्रदरं तथा ॥५॥
नाशयत्येव विजया वीर्य्यस्तम्भविधायिनी ॥ ६ ॥

इति विजयापाकः ॥ ४ ॥

भांग का शुद्ध रस ।ऽ२॥ साढ़े बारह सेर, गाई का दूध ऽ६। सवा छः सेर, सबको मिलाकर धीरे धीरे मन्दाग्नि से पकावे ॥ १ ॥ खोवा हो जाने पर आग पर से उतार ले और खांड़ ऽ२॥ ढाई सेर तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, लवंग, मिर्च, सोंठि, पीपरि, अकरकरहा ॥ २ ॥ जायफल, जावित्री, नागौरी असगन्ध, गदा-पुरैना, छोटी दुधिया, कौंचबीज, बीजबन्द यह सब दवा चार चार तोला ॥ ३ ॥ चूर्ण कर और कपड़छान कर खूब मिला देवे चार

तोला की गोली बनाकर सदा प्रातःकाल खाने से वीर्य्य पुष्ट? होता है ॥ ४ ॥ प्रमेह, अतीसार, श्वास, कास, अफरा और स्त्रियों का प्रदर नाश होता है ॥ ५ ॥ यह बलिष्ठ और वीर्य्यस्तम्भकारक है ॥ ६ ॥ इति विजया पाकः ॥ ४ ॥

सौभाग्यशुण्ठीपाकः ॥ ५ ॥

नागरं खंडशः कृत्वा प्रस्थमात्रं भिषग्वरः ॥
अजादुग्धाढकद्वंद्वे विपचेन्मन्दवह्निना ॥ १ ॥
घनीभूते तु पयसि शुंठीं तस्मात्समुद्धरेत् ॥
अतिसूक्ष्मं च निष्पेष्य शोषयेदातपे दिनम् ॥ २ ॥
घृतमानीं समावाप्य तद्दुग्धं च पुनः पचेत् ॥
यावत्पिंडत्वमायाति पुनस्तत्र विमिश्रयेत् ॥ ३ ॥
चातुर्जातं तुगावेल्लं धान्यकं जीरकद्वयम् ॥
मिसिकुस्तुम्बुरुकुष्ठानि लवङ्गञ्च शतावरी ॥ ४ ॥
तालमूली त्रिकटुकं कपिकच्छुं च षट्कटुम् ॥
जातीफलं जातिकोशं शृंगाटं वृद्धदारुकम् ॥ ५ ॥
त्रिवृत्तं पद्मबीजं च त्रिफलाश्च बलात्रयम् ॥
जलं सैन्धवं वाजिगन्धा चन्दनागुरुकारवीम् ॥ ६ ॥
कंकोलमजगंधां च द्राक्षामक्षोडचारकम् ॥
अजमोदा च वातामनारिकेरगरं तथा ॥ ७ ॥

कर्पूरमभ्रकं लोहं वंगं ताम्रं शिलाजतु ॥
स्वर्णमाक्षिकमप्येतत्प्रत्येकं कर्षसंमितम् ॥ ८ ॥
चूर्णीकृत्य क्षिपेत्तत्र पाणिभ्यां मर्दयेद्दृढम् ॥
ततः खण्डन्तुलां पक्त्वा तथा तच्च क्रियां चरेत् ॥९॥
खंडं नागरकं नाम्ना भैषज्यमिदमुत्तमम् ।
यथा बलमिदं खादेत्प्रातर्नक्तं च भेषजम् ॥ १०
स्त्रीणामतिहितं नात्र पथ्यापथ्य विचारणा ॥
क्षये पाण्डौ ज्वरे कासे श्वासे मन्दानले तथा ॥ ११ ॥
संग्रहण्यां रक्तगुल्मे प्रदरे सोमरोगके ॥
रक्तपित्ते चाम्लपित्ते सर्ववातामयेषु च ॥ १२ ॥
धातुशोषे प्रमेहे च रक्तदोषे स्वरक्षये ॥
दुग्धक्षये मूत्ररोगे कामलायां गलग्रहे ॥ १३ ॥
सूतिकानिलव्याधौ च शस्तमेतन्न संशयः ॥
अश्विभ्यां पूर्वमुदितः शस्तो योगोऽयमुत्तमः ॥१४॥
एषा सौभाग्यदा शुंठी स्त्रीणां पुत्रप्रदोत्तमा ॥ १५ ॥

इति सौभाग्यशुंठीपाकः ॥ ५ ॥

दो सेर ऽ२ सोंठि को टुकड़े २ कर सोलह सेर ।ऽ६ बकरी के दूध में मन्दाग्नि से पचावे ॥ १ ॥ जब दूध गाढ़ा हो जाय सोंठि निकाल अति सूक्ष्म बाँटकर एक दिन घाम में सुखा ॥ २ ॥ एक

सेर घी ऽ१ डालकर सोंठि व खोवा तीनों को खूब लाल पका लेवे फिर उसमें नीचे की औषधें मिलावे ॥ ३ ॥ चातुर्जात अर्थात् (तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर), वंशलोचन, बायबिड़ंग, धनियाँ, जीरास्याह, जीरासफेद, सौंफ, धनियाँ की सूखी पत्ती, कूट, लवंग, शतावरि ॥ ४ ॥ मूसली सफेद, त्रिकटु (सोंठि, पीपरि, मिरच) केवाँच के बीज, षट् कटु (सोंठि, पीपरि, मिरच, पिपलामूल, चीता गजपीपरि), जायफल, जावित्री, सिंघाड़ा, विधारा ॥ ५ ॥ गुजराती, निसोथ, कमलगट्टा, त्रिफला (अँवरा हर्र, बहेरा), बलात्रय (बरियारी, गुरशकरी, कंघी), सुगन्धबाला, खसखस, असगन्ध, लालचन्दन, अगर, कलौंजी ॥ ६ ॥ कंकोल, बबई के बीज मुनक्का, अखरोट, चिरौंजी, अजमोद, बादाम, गरी ॥ ७ ॥ कपूर, अभ्रक, कांतीसार, बंग, ताम्रेश्वर, शिलाजीत, स्वर्णमाक्षिक भस्म यह सब दवा दो दो तोले लेवे ॥ ८ ॥ इनका चूर्ण पूर्वोक्त खोवे में मिलाकर हाथों से अच्छी तरह मर्दनकर, फिर साढ़े बारह सेर ।ऽ२॥ खाँड़ की चासनी करके,उसमें पूर्वोक्त औषधि मिश्रित खोवा को मिला कर, गोली बना ले ॥ ९ ॥ यह सौभाग्यशुंठी प्रातःसायं बल के अनुसार खाना ॥१०॥ स्त्रियों को अति हितकारी है, इसमें पथ्यापथ्य का विचार नहीं है। क्षयरोग, पांडुरोग, खाँसी, श्वास और मन्दाग्नि ॥ ११ ॥ ग्रहणी, रक्त-गुल्म, प्रदर, सोमरोग, रक्तपित्त, अम्लपित्त, सर्ववात के रोग ॥ १२ ॥ धातुशोष, प्रमेह, रक्तदोष, स्वरक्षय, दुग्धक्षय, मूत्ररोग, कामला, गलग्रह ॥ १३ ॥ सूतिकारोग, वातरोग इन सब रोगों में हितकारी है और यह अश्विनीकुमारों का

कहा हुआ योग अति उत्तम है १४ और स्त्रियों को पुत्रप्रद भी है १५॥

इति सौभाग्यशुण्ठीपाकः ॥ ५ ॥

शुण्ठ्यवलेहः ॥ ६ ॥

नागरस्य पलान्यष्टौ गुडस्य पलषोडशम् ॥
घृतस्य कुडवं दद्याद्दुग्धाष्टकुडवं तथा ॥ १ ॥
जातीफलं लवङ्गञ्च चातुर्जातकमेव च ॥
ऋषभं चित्रकश्चैव कर्षं कर्षं प्रयोजयेत् ॥ २ ॥
स्थापयेन्मृण्मये भांडे मन्दानलविपाचिते ॥
ततः शीतं समुद्धृत्य मधुनः कुडवं क्षिपेत् ॥ ३ ॥
विश्वौषधावलेहोऽयं बाले वृद्धे प्रयोजयेत् ॥
(वृष्यो वाजीकरश्चैव बुद्धिकान्तिबलप्रदः)
प्रमेहान्नाशयत्याशु तमः सूर्योदये यथा ॥ ४ ॥

इति शुण्ठ्यवलेहः ॥ ६ ॥

एक सेर ऽ१ सोंठि, दो सेर ऽ२ गुड़, आधसेर ऽ॥ घी, चार सेर ऽ४ गौ का दूध ॥१॥ जायफल, लवंग, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, ऋषभ के अभाव में (विदारीकंद) चीत यह सब दो दो तोला ॥२॥ मन्दाग्नि में पकाकर माटी के पात्र में रख ले, ठंढा हो जाने पर आधसेर ऽ॥ सहत मिलाकर गोली बना ले ॥ ३ ॥ बालक और वृद्धों को खिलावे यह पाक बली,

वाजीकर, कान्ति और बल का देनेवाला है । सूर्य्य जैसे अंधकार को नाश करता है वैसे यह पाक प्रमेहों का नाश कर डालता है ॥४॥

इति शुण्ठ्यवलेहः ॥ ६ ॥

जातीपत्र्यवलेहः ॥ ७ ॥

जातिपत्रीं नवां सम्यक् प्रस्थमात्रां विचूर्णयेत् ॥
कटाहे निक्षिपेद्यत्नाद्द्रोदुग्धस्य तुलां शुभाम् ॥ १ ॥
तुलार्द्धं शर्करां श्वेतां शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥
यदा दार्वीप्रलेपः स्याद् घृतस्य कुडवं क्षिपेत् ॥२॥
कटुषटकञ्चतुर्जातं लवंगं मस्तकी नतम् ॥
मोचाह्वं मुशलीद्वंद्वं स्वयंगुप्तां च गोक्षुरम् ॥ ३ ॥
योगकं कुंकुमं चन्द्रं कंकोलं नलदं हिमम् ॥
खुरासानं कुबेरश्च कबाबं सिन्धुशोषणम् ॥ ४ ॥
कनकं व्यालफेनश्च वंगं ताम्राभ्रमायसम् ॥
त्रिंशच्चत्वारिसंख्यायाः पृथक् कर्षाणि चूर्णयेत् ॥५॥
निक्षिपेच्छोभने भाण्डे भक्षयेत्कर्षमात्रया ॥
बलवीर्य्यकरो वृष्यः प्रमदाह्लादकारकः ॥ ६ ॥
मतिकान्तिस्मृतिकरो वाजिवेगं करोति सः ॥
धात्वोजष्कप्रजननः सेवते सुन्दरीशतम् ॥ ७ ॥

प्रमेहान्विंशतिं हन्याच्छ्वासान् कासान् सुदारुणान् ॥
जीर्णज्वरं च यक्ष्माणं वह्निमांद्यमरोचकम् ॥ ८ ॥
नाशयेत्सकलान् रोगान् जातिपत्र्यवलेहकः ।
पूर्वाचार्य्यैश्चरचितो ह्यात्रेयाद्यैश्च पूजितः ॥ ९ ॥

इति जातीपत्र्यवलेहः ॥ ७ ॥

दो सेर ऽ२ नवीन जावित्री का चूर्ण और साढ़े बारह सेर ।ऽ२॥ गौ का दूध कड़ाह में डाले ॥ १ ॥ उसमें सवा छः सेर ऽ६। सफ़ेद शक्कर भी मिलाकर धीरे धीरे मन्दाग्नि में पकावे जब करछुली में लगने लगे तब आधसेर ऽ॥ घी ॥ २ ॥ सोंठि, मिरच, पीपरि, पिपलामूल, चाब, चीत, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, लवंग, रूमी मस्तगी, तगर, मोचरस, मूसली स्याह, मूसली सफ़ेद, केवाँच के बीज, गुखुरू ॥ ३ ॥ अगर, केसर, शुद्धकपूर, कंकोल, खस-खस, चन्दन सफ़ेद, खुरासानी अजवायन, उन्नाबदाना, कबाबचीनी, समुद्रशोष ॥४॥ शुद्ध धतूरे के बीज, शुद्धअफीम, वंग, ताम्र, अभ्रक, कान्तीसार यह ३४ औषधियाँ दो दो तोला लेकर चूर्ण करे और पूर्वोक्त खोवा में मिलाकर ॥ ५ ॥ सुन्दर पात्र में रक्खे और दो दो तोले प्रतिदिन खावे यह पाक बलवीर्य्य का बढ़ानेवाला, वृष्य और स्त्रियों को आनन्ददायी है ॥ ६ ॥ मति, शोभा, स्मरणशक्ति का वर्धक और धातुपराक्रम उत्पन्न करनेवाला है । इसका सेवन करनेवाला वाजी की तरह शतस्त्री गमन कर सक्ता है ॥ ७ ॥ बीस प्रमेह, दारुण श्वास, कास, जीर्णज्वर, राजयक्ष्मा, वह्निमांद्य, अरोचकता ॥८॥

आदि को यह जातिपत्री पाक नाश करता है । इसको आत्रेय आदि प्राचीन आचार्यों ने रचा है ॥ ६ ॥

इति जातीपत्र्यवलेहः ॥ ७ ॥

अहिफेनपाकः ॥ ८ ॥

अहिफेनं पलं कुर्य्याद्द्रोदुग्धं चाढकद्वयम् ॥
मृद्वग्निना पचेत्सर्वं ग्राह्यं खण्डश्च तत्समम् ॥ १ ॥
चातुर्जातं त्रिकटुकं लवङ्गं जातिपत्रिका ॥
जातीफलं च कङ्कोलमाकल्लमुशलीद्वयम् ॥ २ ॥
कोकिलाख्यस्य बीजानि केशरं चव्यचित्रकम् ॥
कर्षार्धश्च पृथक्कुर्य्याच्छीतीभूते च तत्क्षिपेत् ॥ ३ ॥
वल्लद्वयं ततः खादेत् बलकालाद्यपेक्षया ॥
प्रमेहं मधुमेहं च पांडुरोगं हलीमकम् ॥ ४ ॥
कासं श्वासं क्षयं पुंसां बलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥
अर्शांसि ग्रहणीं हन्ति वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ५ ॥

इत्यहिफेनपाकः ॥ ८ ॥

आठतोला ८) अफीम सोलह सेर ।१६ गौ के दूध में मन्दाग्नि से पचा और सोलह सेर ।१६ खाँड़ लेकर चासनी कर, नीचे की औषधियाँ ॥ १ ॥ तज, पत्रज, इलायची, नागकेसर, सोंठि, पीपरि, मिरच, लवंग, जावित्री, जायफल, कंकोल, अकरकरा,

मुसली स्याह, मुसली सफ़ेद ॥ २ ॥ तालमखाने के बीज, केशर, चाब, चीत, एक एक तोला चूर्ण कर मिलावे और ठंढा हो जानेपर पूर्वोक्त खोवा में अच्छी तरह मिलाकर ॥ ३ ॥ उसमें से छः २ रत्ती बल काल के अनुसार खावे तो प्रमेह, मधुप्रमेह, पांडुरोग, हलीमक पांडु ॥ ४ ॥ कास, श्वास, क्षयी आदि को यह नाश करता है और पुरुषों के बल, वर्ण और अग्नि का बढ़ानेवाला तथा बवासीरों को नाश करता है और उत्तम वाजीकरण है ॥ ५ ॥

इति अहिफेनपाकः ॥ ८ ॥

पिप्पलीपाकः ॥ ९ ॥

पिप्पलीप्रस्थमादाय पचेत्क्षीरे चतुर्गुणे ॥
अर्द्धाढकं घृतं गव्यं शुद्धखण्डाढकं तथा ॥ १ ॥
लेहं पचेद्‌ घनं तावद्यावत्पाकं सुपाचितम् ॥
ततो द्रव्याणि चैमानि सश्लक्ष्णानि प्रयोजयेत् ॥ २ ॥
एलात्वङ्‌ नागपुष्पञ्च लवङ्गं नलदं तथा ॥
नागरं पिप्पली मुस्ता श्रीखंडं मरिचं नतम् ॥ ३ ॥
कटुत्रिकं जातिपत्री कुंकुमं मधुकं तिलाः ॥
प्रत्येकं चाक्षमात्राणि रसभस्मयुतानि च ॥ ४ ॥
सर्वैः समांशं तच्चूर्णं लेहवत्साधु साधयेत् ॥
मधुनः कुडवं दत्त्वा खादेदग्निबलं यथा ॥ ५ ॥



वृष्यं पुष्टिकरं रुच्यं चक्षुष्यं त्वग्निवर्द्धनम् ॥
वल्यं दार्ढ्यकरश्चैव छर्दिमूर्च्छाभ्रमापहम् ॥ ६ ॥
दाहतृष्णाप्रशमनमौजस्यं धातुवर्द्धनम् ॥
बोधनं चेन्द्रियाणां वै प्रमेहान्हन्ति विंशतिम् ॥ ७ ॥
दोषत्रयप्रशमनं क्षयरोगविनाशनम् ॥
वीर्यस्तम्भकरश्चैव तथा वाजीकरं परम् ॥ ८ ॥
वातान्तकरणं हृद्यं पिप्पलीपाकसंज्ञकम् ॥ ६ ॥

इति पिप्पलीपाकः ॥ ६ ॥

दो सेर ﴿२ छोटी पीपरि के चूर्ण को आठसेर ﴿८ गौ के दूध में पचावे फिर चार सेर ﴿४ गौ का घी डाल कर खोवा भूने और आठ सेर ﴿८ स्वच्छ खांड की चासनी कर ॥ १ ॥ उसमें नीचे की औषधियों का चूर्ण मिलावे ॥ २ ॥ छोटी इलायची, तज, नागकेशर, लवंग, जटामांसी, सोंठि, पीपरि, नागरमोथा, सफेद चन्दन, मिरच, तगर ॥ ३ ॥ सोंठि, पीपरि, मिरच, जावित्री, केशरि, मुरेठी, तिल प्रत्येक दो दो तोले लेवे और रससिंदूर एक तोला ॥ ४ ॥ मिलाकर पाक की तरह सिद्ध करे और ठंढा होने पर उसमें आध सेर सहत मिलाकर अग्नि बल के अनुसार खावे ॥ ५ ॥ यह वृष्य, पुष्टिकारी, रोचक, दृष्टिवर्द्धक, अग्निवर्द्धक, बल्य, दृढ़ता करनेवाला और वमन, मूर्च्छा, भ्रम ॥ ६ ॥ दाह, प्यासनाशक और ओजोधातुवर्द्धक, इन्द्रियों का बोधक तथा बीस प्रकार के प्रमेहों का नाशक है ॥ ७ ॥ त्रिदोष-

शमन, क्षयनाशक, वीर्य्यस्तम्भक और वाजीकरण है ॥ ८ ॥
वातान्तकारक तथा हृदयप्रिय यह पिप्पलीपाक है ॥ ९ ॥
इति पिप्पलीपाकः ॥ ९ ॥

लघुपिप्पलीपाकः ॥ १० ॥

पिप्पलीनां रजःप्रस्थं क्षीरं दद्याच्चतुर्गुणम् ॥
खंडं चतुर्गुणं दद्याद्गोघृतं चार्द्धप्रस्थकम् ॥ १ ॥
चातुर्जातं लवङ्गञ्च सूक्ष्मैला जातिपत्रकम् ॥
एतानि समभागानि पलार्द्धानि प्रकल्पयेत् ॥ २ ॥
लेहीभूतं पचेत्पात्रे यावद्दार्व्या प्रलेपनम् ॥
अवतार्य्य ततः शीघ्रं स्निग्धे भांडे निधापयेत् ॥ ३ ॥
सेवयेत्सततं भक्त्या प्रातःप्रातर्यथाबलम् ॥
नष्टशुक्रक्षतक्षीणे दुर्बले व्याधिकर्षिते ॥ ४ ॥
स्त्रीप्रसक्ते तथा वृद्धे शस्तं जीर्णज्वरापहम् ॥ ५ ॥

इति लघुपिप्पलीपाकः ॥ १० ॥

दो सेर ऽ२ पिप्पली के चूर्ण को आठसेर ऽ८ गौके दूध में पकाकर खोवा करके एकसेर ऽ१ गौ के घी में भूने और आठ सेर ऽ८ खाँड़ की चासनी कर उसमें यह औषधियाँ डाले ॥ १ ॥ तज, पत्रज, छोटी इलायची, नागकेशर, लवंग, जावित्री प्रत्येक चार चार तोले लेकर ॥ २ ॥ मिलावे और उस चासनी को

गाढ़ा करके सिझये मिट्टी के पात्र में रक्खे ॥ ३ ॥ प्रातः प्रातः प्रतिदिन यथाबल सेवन करने से नष्टशुक्र, क्षत, क्षीण, दुर्बल, व्याधियुक्त ॥ ४ ॥ स्त्रीप्रसक्त और वृद्ध मनुष्य अच्छे होते हैं यह अत्यन्त शुभ और जीर्णज्वरनाशक है ॥ ५ ॥

इति लघुपिप्पलीपाकः ॥ १० ॥

बृहत्पिप्पलीपाकः ॥ ११ ॥

प्रस्थं तु पिप्पलीचूर्णं क्षीरं पलशतद्वयम् ॥
पचेन्मन्दाग्निना यामं घृतप्रस्थेन संयुतम् ॥ १ ॥
घनीभूते मधुनिभे सुगन्धानि विनिक्षिपेत् ॥
खण्डप्रस्थत्रयं तस्मिन् मधुप्रस्थार्द्धमेव च ॥ २ ॥
सुनिष्पन्नेव लेहे तु द्रव्याणीमानि दापयेत् ॥
चातुर्जातं पञ्चकोलं मरिचं तगरं तथा ॥ ३ ॥
जातीफलं जातिपत्रं देवपुष्पं कुठेरकम् ॥
अकल्लकाब्धिशोषञ्च ह्यगरं जीरकद्वयम् ॥ ४ ॥
शतपुष्पा शटी धान्या विडंगं ताम्रमेव च ॥
स्वर्णमाक्षिकलोहानां प्रत्येकं तु पलार्द्धकम् ॥ ५ ॥
तुगाकर्पूरयोः शुक्तिश्चूर्णमेषां विनिक्षिपेत् ॥
सुनिष्पन्नावलेहस्तु स्थाप्यो वै शुभ्रभाजने ॥ ६ ॥
सदा सेव्यो नरेन्द्रैस्तु आयुर्मेधाग्निकांक्षिभिः ॥

शुक्रवृद्धिं करोत्याशु वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ७ ॥
बलीपलितनिर्मुक्तः पूर्णधातुः प्रजायते ॥
अनेन सेव्यमानेन स्त्रीशतं रमते नरः ॥ ८ ॥
सर्वरोगविनिर्मुक्तो दृढकायो महाबली ॥
तेजोवृद्धिं करोत्याशु परोहि गुणकारकः ॥ ९ ॥
यथाबलं नरैः सेव्यो सर्वरोगापनुत्तये ॥
अशीतिश्लेष्मजांश्चैव नाशयत्यतिवेगतः ॥ १० ॥
तथाष्टादशकुष्ठानि विंशमेहानरोचकम् ॥
गुल्मक्षयं तथा कासं श्वासं च तमकादिकम् ॥ ११ ॥
जीर्णज्वरं मूत्रकृच्छ्रं प्रदरं पाण्डुरं तथा ॥
नराणाममृतं खेषो देवानाममृतं यथा ॥ १२ ॥

इति बृहत्पिप्पलीपाकः ॥ ११ ॥

दो सेर ऽ२ पिप्पली का चूर्ण, पच्चीस सेर ॥ऽ५ गाई का दूध और दो सेर ऽ२ घी मिलाकर मन्दाग्नि में पकावे ॥ १ ॥ जब खोवा सहत के रंग का सा लाल हो जाय तब छः सेर ऽ६ खाँड़ और एक सेर ऽ१ सहत मिलावे ॥ २ ॥ पाक सिद्ध हो जाने पर इन द्रव्यों का चूर्ण डारे तज, पत्रज, छोटी इलायची, नागकेशर, छोटी पीपरि, पिपलामूल, चाब, चीत, सोंठि, मिर्च, तगर ॥ ३ ॥ जायफल, जावित्री, लवंग, बबई के बीज, अकरकरा, समुद्रफेन, अगर, दोनों जीरे ॥ ४ ॥ सौंफ, कचूर, धनिया, बायबिड़ंग, ताम्रेश्वर, स्वर्ण-

माक्षिकभस्म, कान्तीसार प्रत्येक चार-चार तोला ॥ ५ ॥ वंशलोचन, शुद्ध कपूर दो दो तोले लेवे। पाक सिद्ध होने पर उसे स्वच्छ पात्र में रख ले ॥ ६ ॥ आयु, बुद्धि और जठराग्नि की वृद्धि चाहनेवाले नर इस पाक का सदा सेवन करें। यह पाक शीघ्र वीर्य की वृद्धि करनेवाला और उत्तम वाजीकरण है ॥७॥ इसके सेवन से नर बलीपलित वर्जित पूर्ण धातु हो जाता है इसके सेवन से बहुरमणियों का रमणकारक हो जाता है ॥ ८ ॥ सब रोगों से छूट-कर दृढ़काय और बली हो जाता है यह शीघ्र ही तेज की वृद्धि करता और परम गुणकारक है ॥ ९ ॥ सब रोगों के दूर करने के लिये इसे मनुष्य यथाबल सेवन करे तो यह अस्सी प्रकार के रोग ॥ १० ॥ १८ कुष्ठ, २० प्रमेह, अरोचक, बायगोला, क्षयी कास, तमकादि श्वास ॥ ११ ॥ जीर्णज्वर, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर और पाण्डुरोग इन सबको शीघ्र ही नाश करता है यह नरों के लिये देवों के अमृततुल्य है ॥ १२ ॥

इति बृहत्पिप्पलीपाकः ॥ ११ ॥

गोक्षुरपाकः ॥ १२ ॥

प्रस्थं गोक्षुरसूक्ष्मचूर्णमृदितं दुग्धाढके पाचितं
जात्रित्री च लवंगलोध्रमरिचं कर्पूरमाकल्लकम् ॥
अब्धेःशोषसुवर्णबीजरजनी धात्री कणा केशरं
चातुर्जातमथाहिफेनकशटी मुंडीकुबेराक्षकम् ॥ १ ॥

तुल्यं शर्करया तदर्द्धविजया प्रस्थार्द्धकं गोघृतं
युक्त्या वैद्यवरेण निर्मितमिदं मंदाग्निना पाचितम् ॥
प्रातः सेव्यमिदं महौषधवरं रोगौघविध्वंसनं
ह्यर्शोघ्नं सकलप्रमेहशमनं प्रौढांगनाद्रावणम् ॥२॥
वीर्य्यस्तंभनतुष्टिपुष्टिकरणं वाजीकरंकामिना-
मुच्चैर्गर्जति कामिनीमृगारिपुर्वातार्तिहृच्चौषधम् ॥ ३ ॥

इति गोक्षुरपाकः ॥ १२ ॥

दो सेर ऽ२ गोखुरू का सूक्ष्म चूर्ण, आठसेर ऽ८ गाई के दूध में पका कर खोवा करै और जावित्री, लवंग, लोध, मिर्च, शुद्ध कपूर, अकरकरा, समुद्रफेन, शुद्ध धतूरे के बीज, हल्दी, आँवला, पीपरि, केशर, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, शुद्ध अफीम, कचूर, गुलमुण्डी, पाढ़रि ॥ १ ॥ यह दो दो तोला लेकर सब ओषधियों के चूर्ण और पूर्वोक्त खोवा इन दोनों के बराबर अर्थात् पाँच सेर ऽ५ शक्कर और शक्कर की आधी अर्थात् ढाई सेर ऽ२॥ शुद्ध की हुई भाँग का चूर्ण, दो सेर ऽ२ गाय का घी मिलाकर वैद्य-वर इसे युक्ति से मन्दाग्नि में पकावे। इसका प्रातःकाल सेवन करने से यह पाक रोगों का नाश करनेवाला महौषधरूप बन जाता है। बवासीर व सब प्रकार के प्रमेहों का नाशक है, यौवनशालिनी अंग-नाओं का द्रावक है ॥ २ ॥ तथा वीर्य्यस्तम्भक, तुष्टि और पुष्टि-जनक और कामियों को वाजीकर है, यह वातपीड़ा का हरनेवाला है।

महिलागणों में यह महौषध सिंहवत् बड़े शब्द से गर्ज रहा है ॥३॥

इति गोक्षुरपाकः ॥ १२ ॥

अन्यच्च गोक्षुरपाकः ॥ १३ ॥

गोकण्टकं सदलमूलफलं गृहीत्वा
संकुट्य तं पलशतं क्वथितं च तोये ॥
पादावशेषसलिले च पलानि दत्त्वा
पंचाशतं परिपचेदथ शर्करायाः ॥ १ ॥
तस्मिन्घनत्वमुपगच्छति चूर्णितानि
दद्यात्पलद्वयमितानि सुभेषजानि ॥
शुण्ठी कणा मरिचनागदलं त्वगेला
सज्जातिकोषककुभं त्रपुसीफलानि ॥ २ ॥
वंशीपलाष्टकमिह प्रणिधाय नित्यं
लेह्याशु सिद्धिमपि वात्र पलं प्रमाणम् ॥
हन्त्याशु मूत्रपरिदाहविबन्धशुक्र-
कृच्छ्राश्मरीरुधिरमेहमधुप्रमेहान् ॥ ३ ॥
इति द्वितीयगोक्षुरपाकः ॥ १३ ॥

साढ़े बारह सेर ।ऽ२॥ गोखुरू का पंचांग कूटकर सवा मन १।ऽ जल में काढ़ा करै जब चतुर्थांश ।ऽ२॥ सेर शेष रहै तब ऽ६। सेर

शक्कर डालकर ॥ १ ॥ घन चासनी करै और सोंठि, पीपरि, मिर्च, नागकेशर, तज, छोटी इलायची, जायफल, अकरकरा, खीरा के बीज प्रत्येक पाव २ भर लेवे ॥ २ ॥ ऽ१ एक सेर वंशलोचन लेकर चूर्ण करे सबका चूर्ण पूर्वोक्त चासनी में मिलाकर चार २ तोला खाने से शीघ्र ही मूत्रदाह, विबंध, मूत्रकृच्छ्र, वीर्य्यपात, पथरी, रक्तमेह और मधुमेह नाश करता है ॥ ३ ॥

इति द्वितीयगोक्षुरपाकः ॥ १३ ॥

कपिकच्छुपाकः ॥ १४ ॥

निस्तुषं वानरीबीजं कृत्वा त्रिंशत्पलानि च ॥
त्रिंशत्पलं सितां दत्त्वा घृतं दत्त्वा पलाष्टकम् ॥ १ ॥
दुग्धमाढकसंयुक्तं मृदुना वह्निना पचेत् ॥
यावद्दार्वीप्रलेपः स्यात्तन्मध्ये चूर्णितं क्षिपेत् ॥ २ ॥
जातीफलं त्रिकटुकं त्रिगन्धं देवपुष्पकम् ॥
आकल्लकं जातिपत्रं कोकिलाबीजकेशरम् ॥ ३ ॥
पुनर्नवापले द्वे च मुसली चाहिफेनकम् ॥
पारदं गंधकं लोहं प्रत्येकं कर्षमात्रकम् ॥ ४ ॥
चन्दनागुरुकस्तूर्य्याः कर्पूरं शाणमात्रकम् ॥
पलार्धं भक्षयेदेतत् क्रमाद्वीर्य्यबलप्रदम् ॥ ५ ॥
निहन्ति सर्वमेहांश्च कामं दद्याच्चतुर्गुणम् ॥

तत्रापि क्षीणदेहस्य बलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ६ ॥
अनुपाने सदा देयं गोदुग्धं च सशर्करम् ॥
माषान्नभोजनं कार्य्यं सघृतं च यथाबलम् ॥ ७ ॥
दन्तदार्ढ्यकरं चैव प्रमदानन्दकारकम् ॥
कासे श्वासे बलासे च वह्निमांद्ये सुदारुणे ॥ ८ ॥

इति कपिकच्छुपाकः ॥ १४ ॥

ऽ३॥ सेर छिलके निकाले हुये केवांच के बीज ऽ३॥ सेर मिश्री ऽ१ सेर घी ॥ १ ॥ आठसेर ऽ८ गाई का दूध इनको मृदु वह्नि में पकावे जब करछी में चिपकने लगे तब इन ओषधियों का चूर्ण डाले ॥ २ ॥ जायफल, सोंठि, पीपरि, मिर्च, तज, पत्रज छोटी इलायची, लवंग, अकरकरा, जावित्री, तालमखाने के बीज, नागकेशर, गदापुरैना यह सब दो २ पल ॥ ३ ॥ मुसली सफेद, अफीम, पारा, गंधक (इनकी कजली कर ले), कान्तीसार यह दो २ तोला ॥ ४ ॥ और सफेद चन्दन, अगर, कस्तूरी और कपूर ये चार २ माशे लेवे इनको मिला सिद्ध कर चार तोले खावे तो क्रम से बल वीर्य्य बढ़े ॥ ५ ॥ यह सब प्रमेहों को नाश कर चौगुनी कामशक्ति बढ़ाता है और क्षीण देह मनुष्यों का तो बल, वीर्य्य और पुष्टि करनेवाला है ॥ ६ ॥ सदा शक्कर मिला दूध अनुपान के लिये देवे और यथाबल उड़द के व्यंजन और चावल, घी मिलाकर भोजन करै ॥ ७ ॥ दाँतों का

दृढ़कारक स्त्रियों का आनन्ददायी है । कास, श्वास, कफ और अग्निमांद्यनाशक है ॥ ८ ॥

इति कपिकच्छुपाकः ॥ १४ ॥

नारिकेरपाकः ॥ १५ ॥

नारिकेरस्य पाकोऽयं सगुणः कथ्यते मया ॥
सनीरं प्रस्थमादाय पृथक् पानीयमुद्धरेत् ॥ १ ॥
निस्तुषीकृत्य यत्नेन खंडं खंडं तु कारयेत् ॥
अश्मना मर्दयेत्तावद्यावत्पिण्डत्वमाप्नुयात् ॥ २ ॥
प्रक्षिप्य शोभने भांडे तच्च नीरं विमिश्रयेत् ॥
कुडवं च घृतं दद्याद्गव्यं क्षीरं तथाढकम् ॥ ३ ॥
नारिकेरस्य तुल्येन खण्डं दद्याद्यथाविधि ॥
पचेन्मंदाग्निना सम्यक् शनैर्दर्व्या विघट्टयेत् ॥ ४ ॥
दार्वीप्रलेपसंजाते द्रव्याणीमानि निक्षिपेत् ॥
जातीफलं त्वगेलां च पत्राणि मरिचानि च ॥ ५ ॥
विश्वाजाजीविडंगानि वृद्धैला जातिपत्रिका ॥
एतानि कर्षमात्राणि तस्मिञ्छीते विनिक्षिपेत् ॥ ६ ॥
स्थापयेत्स्निग्धभांडे च सुगंधिद्रव्यधूपिते ॥
एतद्यदि विपक्कं स्याद्विष्टम्भिगुरुशीतलम् ॥ ७ ॥
तर्पणं गुरु सुस्निग्धं बृंहणं बस्तिशोधनम् ॥

वृद्धिं करोति मन्दाग्निं रक्तपित्तविषापहम् ॥ ८ ॥
वातरक्तहरं चैव गृध्रसीनाशनं परम् ॥
मधुरं नेत्ररोगघ्नं वातपित्तनिवारणम् ॥ ९ ॥
वाजीकरं च हृद्यं च बल्यं शुक्रविवर्धनम् ॥
धातुपुष्टिकरं चैव भव्यं वर्णप्रसादनम् ॥ १० ॥
देहकंडूहरं चैतत्कण्ठहृद्रोगनाशनम् ॥
अर्शो हन्ति तथोन्मादं चतुर्धा प्रदरं तथा ॥ ११ ॥
अतिव्यवायक्षीणानां स्त्रीष्वसंतुष्टदेहिनाम् ॥
स्त्रीणां च बालवृद्धानां हितं स्यान्नारिकेरकम् ॥ १२ ॥
रसायनं नराणां वै देवानाममृतं यथा ॥ १३ ॥

इति नारिकेरपाकः ॥ १५ ॥

दो सेर ऽ२ सजल नारियल लेकर उसका पानी पृथक् कर लेवे ॥ १ ॥ गरी के सूक्ष्म खण्ड कर शिल पर अच्छी तरह बाँट कर गोला करले ॥ २ ॥ और अच्छे पात्र में रख वह पृथक् किया हुआ पानी मिलादे ऽ॥ सेर घी, ऽ८ सेर गाई का दूध ॥ ३ ॥ और ऽ२ सेर खाँड़ मिलाकर यथाविधि मन्दाग्नि से पकावे और शनैः शनैः करछी से चलाता रहे ॥ ४ ॥ जब करछी में लिपटने लगे तब इन द्रव्यों को डाले जायफल, तज, इलायची, पत्रज, मिर्च ॥ ५ ॥ सोंठि, जीरा सफ़ेद, बायबिड़ंग, बड़ी इलायची, जावित्री यह सब एक २ तोला चासनी मिले हुए खोवा के ठंढे हो जाने पर डाले ॥ ६ ॥

कासं श्वासं तथा हिक्कामजीर्णंवातशोणितम् ॥ १३॥
प्लीहामयं च वातं च आमवातं च दुर्जयम् ॥
शोफं शूलं च वातार्शः पांडुरोगं सकामलाम् ॥ १४॥
ग्रहणीगुल्मरोगं च अन्ये वातकफोद्भवाः ॥
विकारा विलयं यान्ति तमः सूर्य्योदये यथा ॥ १५॥
एकमासप्रयोगेण वृद्धः संजायते युवा ॥
मन्दाग्नीनां हितं बल्यं बालानां चांगवर्द्धनम्॥ १६॥
स्त्रीणां च कुरुते पुष्टिं प्रसवे स्तन्यवर्द्धनम् ॥
क्षीणानां चाल्पवीर्य्याणांयुक्तंकामाग्निदीपनम्॥ १७॥
सर्वव्याधिहरं श्रेष्ठं योगं सर्वोत्तमं विदुः ॥
अश्वगंधावलेहोऽयं परमं दिव्यमौषधम् ॥ १८ ॥

इत्यश्वगन्धावलेहः ॥ १६ ॥

ऽ१। सेर असगंध का चूर्ण, ऽ॥= सोंठि का चूर्ण ऽ।- अच्छी पीपरि का चूर्ण ॥१॥ ८)) मिर्च का सूक्ष्म चूर्ण, तज, छोटी इलायची, पत्रज और नागकेशर यह प्रत्येक आठ आठ तोला लेकर चूर्ण करै ॥ २ ॥ ऽ६। सेर गाई का दूध, ऽ१॥- अच्छा सहत ऽ॥०॥ गाई का घी, सवा छः सेर ऽ६। मिश्री ॥ ३ ॥ दूध, मिश्री और घी इन तीनों को एक में मिलावे, मिट्टी के कड़ाह में मृदु अग्नि से ॥४॥ दूध को आधा शेष रहने तक पकावे पुनः उसमें पूर्वोक्त अश्वगन्धादि औषधियों के चूर्ण को थोड़े दूध में घोलकर ॥ ५ ॥ मिला देवे और

पुनः धीरे धीरे पकावे जब करछी में लिपटने लगे तब तज आदि सुगन्ध द्रव्यों का चूर्ण डाले ॥ ६ ॥ जब खोवा से घृत चुहचुहाने लगे और चूर्ण चावल के आकार छिटक जाय तब अग्नि से उतार ले ॥ ७ ॥ जीरा, पिपलामूल, पत्रज, लवंग, तगर, जायफल, खसखस, सुगन्धबाला, जटामांसी ॥ ८ ॥ बेलगिरी, कमलगट्टा, धनियां, धव के फूल, वंशलोचन, आँवला, खैरसार, कपूर ॥९॥ गदापुरैना, बबई के बीज, चीत, शतावरि इन इक्कीस ओषधियों को छः २ माशे लेवे ॥ १० ॥ और आठ आठ तोला अभ्रक, वंग और कान्तीसार चार चार तोला पारा की भस्म और सिंदूर लेवे ॥११॥ इन सबको सूक्ष्म चूर्ण कर मिलावे और ठंढा हो जाने पर सहत मिला कर चिकने पात्र में रख लेवे ॥ १२ ॥ और ४) प्रति दिन खावे और अच्छी तरह से घृत युक्त भोजन करै तो कास, श्वास, हिचकी, अजीर्ण, वातरक्त ॥ १३ ॥ पिलही, वातरोग और दुर्जय आमवात, शोथ, शूल, वातार्श, पांडुरोग, क्षयांवर ॥ १४ ॥ संग्रहणी, बावगोला, वात और कफ से उत्पन्न हुए विकार जैसे सूर्योदय से अंधकार नष्ट हो जाता है वैसे नाश हो जाते हैं ॥ १५ ॥ एक मास सेवन से वृद्ध भी जवान हो जाता है मन्दाग्नि को हितकारी बल्य और बालकों के अंगों का वर्धक है ॥ १६ ॥ प्रसव होने पर स्त्रियों को पुष्टिकारक और दुग्ध का बढ़ानेवाला है, क्षीण और अल्पवीर्य्य लोगों के सेवन करने योग्य और कामाग्निदीपक है ॥१७॥ सर्व रोग हारक सर्वोत्तम परम दिव्य औषधयुक्त यह अश्वगंधावलेह है ॥१८॥

इत्यश्वगंधावलेहः ॥ १६ ॥

अश्वगन्धापाकः ॥ १७ ॥

अश्वगन्धाप्रस्थमेकं क्षीरे द्रोणद्वये पचेत् ॥
घृतप्रस्थमितं चैव खंडं प्रस्थत्रयं तथा ॥ १ ॥
प्रस्थार्द्धं च तिलान्माषान्विपचेन्मृदुवह्निना ॥
व्योषं त्रिजातहवुषा शताह्वा च शतावरी ॥ २ ॥
दीप्यकं पौष्कराजाजी शटी गोक्षुरकं बला ॥
यवानी ग्रन्थिकं लौहं नागं शुल्वं पलं पलम् ॥३॥
प्रक्षिपेदवतार्य्याथ खादेदग्निबलं यथा ॥
सर्वान् वातामयान्हन्तिकटिपृष्ठगुदस्थितान् ॥४॥
अस्थिभंगं तथा शोफं संधिवातं सुदारुणम् ॥
अध्महृद्रोगप्लीहार्तिश्वासकासप्रमेहनुत् ॥ ५ ॥
अश्वेभानां हितं बल्यं कांतिदं पुष्टिदं मतम् ॥६॥

इत्यश्वगन्धापाकः ॥ १७ ॥

ऽ२ सेर असगंध १॥ऽ४ दुग्ध में पकावे और ऽ२ घी और ऽ६ खांड़ ॥ १ ॥ ऽ१ तिल और घी में भुना हुआ ऽ१ उर्द का आटा मिलाकर मृदु अग्नि से पकावे सोंठि, पीपरि, मिर्च, तज, पत्रज, इलायची, हाऊबेर, सौंफ, शतावरि ॥ २ ॥ अजमोद, पोहकरमूल, जीरा सफ़ेद, कचूर, गोखुरू, बरियारी, अजवाइनि, पिपलामूल, कान्तीसार, नागेश्वर, ताम्रेश्वर इन सबको आठ आठ तोले लेके ॥३॥ पूर्वोक्त पाक में मिलावे और अग्निबल के अनुसार खावे तो

कटि-पृष्ठ गुदा में स्थित सर्व प्रकार के वातरोगों को नाश करता है ॥ ४ ॥ अस्थियों का टूटना, शोथ, संधिवात, अफारा, हृद्रोग, पिलही, श्वास, कास, प्रमेह इनको नाश करता है ॥ ५ ॥ यह घोड़े और हाथियों को भी हित होता है तथा कान्ति और पुष्टि का देनेवाला है ॥ ६ ॥ इत्यश्वगन्धापाकः ॥ १७ ॥

मधुपक्वधात्रीफलावलेहः ॥ १८ ॥

धात्रीफलानि भव्यानि तीक्ष्णलोहैश्च वेधयेत् ॥
विश्वाम्भरणपत्रैर्वा फलैः संस्वेदयेद्भृशम् ॥ १ ॥
ततो दुग्धेन संस्वेद्य पानीयेन ततः परम् ॥
मधुमध्ये क्षिपेद्भाण्डे स्थापयेद्दिनविंशतिः ॥ २ ॥
विनष्टं मधु संत्यज्य मधुमध्ये पुनः क्षिपेत् ॥
शर्करां विन्यसेद्भाण्डे उपरिष्टात्फलानि च ॥ ३ ॥
सिता धात्री फलान्येवमुपर्युपरि धारयेत् ॥
दिनानामष्टतो दद्यात्क्षीणे बालेऽक्षमे नरे ॥ ४ ॥
प्रमेहं मूत्रकृच्छ्रं च नाशयेत्तत्क्षणादपि ॥
रक्तपित्तप्रकोपं च शमं याति न संशयः ॥ ५ ॥
वीर्य्यवृद्धिकराण्याहुर्वह्निसंदीपनानि च ॥
रक्तपित्तं शमं याति धात्रीफलनिषेवणात् ॥ ६ ॥
इति मधुपक्वधात्रीफलावलेहः ॥ १८ ॥

उत्तम पके विना रेसेवाले आंवलों को तीक्ष्ण सूजियों से कोंच

डाले और मेहँदी के पत्तों या फलों से अच्छी तरह स्वेदन करे ॥१॥ पुनः दूध में और फिर पानी में बफावे फिर २० दिन सहत में रक्खे ॥ २ ॥ बिगड़े हुए सहत को निकाल डाले और फिर अच्छे सहत में छोड़ दे, प्रथम पात्र में शक्कर डाले फिर आंवले बिछावे ॥ ३ ॥ फिर शक्कर फिर आंवले इसी तरह पुनः पुनः नीचे ऊपर रक्खे इसी तरह सब आंवला धरकर ऊपर फिर शक्कर का पर्त देदे जब आठ दिन व्यतीत होजावें तब क्षीण पुरुष, बालक और निर्बल पुरुषों को देवे ॥ ४ ॥ प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, रक्त व पित्तप्रकोप शांत हो जाता है ॥ ५ ॥ वीर्य्य का बढ़ानेवाला और अग्नि का दीपक है इन आंवलों के सेवन से रक्तपित्त शीघ्र नाश होजाता है ॥६॥

इति मधुपक्वधात्रीफलावलेहः ॥ १८ ॥

सालिमपाकः ॥ १९ ॥

क्षीरद्रोणयुतं त्वसालकुडवं मंदाग्निना पाचितं
यावत्पाकमुपागतं परिहितं प्रस्थं गुडं निक्षिपेत् ॥
चातुर्जातलवंगजातिफलकं मुस्ता तुगा धान्यकं
शुंठीमागधिकोषणाश्वसभयालौहैश्च मिश्रीकृतम् १
हृद्रोगक्षयकासमारुतगदान् हिक्कामसृक्शोषकान्॥
विंशन्मेहशिरोविकारशमनो रोगानशेषाञ्जयेत् ॥२॥

इति सालिमपाकः ॥ १९ ॥

॥।ऽ२ गाई का दूध और ऽ।। सालिम मिश्री के चूर्ण को मिला मन्दाग्नि से पकावे जब पाक हो जाय तब अच्छा ऽ२ गुड़ छोड़

देवे फिर तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, लवंग, जायफल, नागरमोथा, वंशलोचन, धनिआँ, सोंठि, पीपरि, मिर्च, असगंध, हड़, कान्तीसार भस्म इन सबका दो दो तोले चूर्ण मिलावे ॥ १ ॥ हृदय के रोग, क्षय, कास, वातरोग, हिचकी, रक्तदोष, शोषरोग, बीसों प्रमेह, शिर के विकार और सम्पूर्ण रोगों का नाशक है ॥ २ ॥

इति सालिममिश्रीपाकः ॥ १९ ॥

एरण्डपाकः ॥ २० ॥

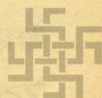
निस्तुषं बीजमैरण्डं पयस्यष्टगुणे पचेत् ॥
तस्मिन् शुष्यति दुग्धे च तद्बीजं परिशोषयेत् ॥ १ ॥
पश्चाद्घृतसमं युक्तं संपचेन्मृदुवह्निना ॥
कटुत्रिकं लवंगं च एलात्वक्पत्रकेशरम् ॥ २ ॥
अश्वगंधा शिफा रास्ना षड्ग्रंथा रेणुका वरी ॥
लोहं पुनर्नवा श्यामा उशीरं जातिपत्रकम् ॥ ३ ॥
जातीफलं मृताभ्रश्च सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥
एतत्कर्षद्वयं चैव समं खंडं विमिश्रयेत् ॥ ४ ॥
मात्रा पलार्द्धकं तस्य प्रातरुत्थाय भक्षयेत् ॥
अशीतिर्वातजान् रोगांश्चत्वारिंशच्चपैत्तिकान् ॥५॥
उदराणि तथा चाष्टौ ह्यंत्रवृद्धिं निहंति च ॥
विंशतिं मेहजान् रोगानामवातं सुदारुणम् ॥ ६ ॥

हन्त्यष्टादशकुष्ठानि क्षयरोगांश्च सप्त च ॥
पंचैव पाण्डुरोगांश्च पंचश्वासान्प्रणाशयेत् ॥ ७ ॥
चतुरो ग्रहणीरोगान् हृद्रोगं च गलग्रहम् ॥
एतान् रोगसमूहान्वै नाशयेदविकल्पतः ॥ ८ ॥

इत्यामवातादौ एरण्डपाकः ॥ २० ॥

छिले हुये अंडी बीजों को अठगुने गाई के दूध में पकावे जब दूध खोवा हो जाय तब बीजों को सुखा लेवे ॥१॥ पश्चात् घृत डाल कर मृदु अग्नि से पकावे, सोंठि, पीपरि, मिर्च, लवंग, इलायची तज, पत्रज, नागकेशर ॥२॥ असगंध, रास्ना, पिपलामूल, सँभालू के, बीज, शतावरी, कान्तीसार, गदापुरैना की जड़, गुजराती इलायची, निशोथ, खसखस, जावित्री ॥३॥ जायफल, अभ्रक रस यह चार २ तोले लेकर इन सबका चूर्ण करै और सबकी बराबर खांड़ मिलावे ॥ ४ ॥ प्रातःकाल ४) प्रतिदिन खाने से ८० वातरोग, ४० पित्त-रोग ॥ ५ ॥ ८ उदररोग और अन्त्रवृद्धि नाश होते हैं २० प्रमेह, दारुण आमवात ॥ ६ ॥ अठारह प्रकार के कुष्ठ, सात प्रकार का क्षय, पांच प्रकार के पाण्डुरोग, पांच तरह के श्वास रोग ॥ ७ ॥ चार प्रकार के ग्रहणी रोग, हृदय के रोग और गलग्रह इन सब रोग-समूहों को यह नाश कर डालता है ॥ ८ ॥

इति एरण्डपाकः ॥ २०. ॥



आर्द्रकावलेहः ॥ २१ ॥

चूर्णितं चार्द्रकप्रस्थं गुडप्रस्थेन पाचयेत् ॥
सर्पिषः कुडवं दत्त्वा चूर्णं तत्रेदमावपेत् ॥ १ ॥
चातुर्जातं पलं व्योषं त्रिफलात्वर्धभागिका ॥
लवंगमभया भार्ङ्गी वृषभूनिंबपौष्करम् ॥ २ ॥
देवदार्वश्वगन्धा च जातीपत्रफलागुरु ॥
गायत्रीसारमृद्वीका द्विगुणायोरजः क्षिपेत् ॥ ३ ॥
कासं श्वासं क्षयं शोषं षाण्ढ्यैकादशरूपकः ॥
श्लेष्मप्रकोपमामं च मन्दाग्निमुदरग्रहम् ॥ ४ ॥
हृद्रोगं रक्तदोषं च हन्ति वर्णाग्निवृद्धिकृत् ॥
बलपुष्टिप्रदो वृष्यो ह्यार्द्रको लेह उच्यते ॥ ५ ॥

इति आर्द्रकावलेहः ॥ २१ ॥

ऽ२ चूर्ण की हुई अदरख ऽ२ गुड़ में पकावे और ऽ॥ घी ॥१॥ तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, सोंठि, पीपरि, मिर्च, आँवला, हड़, बहेरा, लवंग, बड़ी हड़, भारंगी, रूसा के जड़ की बकली, चिरायता, पोहकरमूल ॥ २ ॥ देवदारु, असगन्ध, जावित्री, जाय-फल, अगर, खैरसार, दाख प्रत्येक चार चार तोला, कान्तीसार आठ तोला डालै ॥ ३ ॥ यह अवलेह कास, श्वास, क्षयी, शोष, और गेरह तरह की नपुंसकता, श्लेष्मकोप, आम, मन्दाग्नि, उदर-ग्रह ॥ ४ ॥ हृद्रोग, रक्तदोष इन सबको नाश करता है । वर्ण

अग्नि बढ़ानेवाला, बल्य, पुष्टप्रद और वृष्य यह अर्द्रकावलेह है ॥५॥

इत्यार्द्रकावलेहः ॥ २१ ॥

आर्द्रकपाकः ॥ २२ ॥

आर्द्रकं खंडशः कृत्वा तत्समं सुरभीघृतम् ॥
लोहे विशाले सुदृढे मृण्मये वा विचक्षणः ॥ १ ॥
यावन्मात्रार्द्रकाः खंडास्तावन्मात्रो गुडः स्मृतः ॥
दार्वीप्रलेपनं यावत्पाचयेन्मृदुवह्निना ॥ २ ॥
सम्यक् पक्कं ततो ज्ञात्वा कल्कानीमानि दापयेत् ॥
विश्वाजाज्यूषणं नागकेशरं जातिपत्रिका ॥ ३ ॥
एला त्वक्पत्रमगधा धान्यकं कृष्णजीरकम् ॥
ग्रंथिकं च विडंगं च तस्मिञ्छीते प्रदापयेत् ॥ ४ ॥
तुर्य्यभागं च सर्वाणि स्निग्धभाण्डे निधापयेत् ॥
पलार्द्धमुपभुञ्जीत शीतकाले विशेषतः ॥ ५ ॥
श्वासं कासं स्मृतिभ्रंशं स्वरभंगमरोचकम् ॥
कर्णनासास्यरोगं च क्षयरोगमुरःक्षतम् ॥ ६ ॥
हृद्रोगं ग्रहणीशूलं गुल्मशोषान्निवारयेत् ॥ ७ ॥

इत्यार्द्रकपाकः ॥ २२ ॥

अदरख के टुकड़े २ करके उसके बराबर गाई का सुगन्धित घी ॥ १ ॥ और अदरख ही के बराबर गुड़ डालकर लोहे के पात्र में

या मिट्टी के पात्र में करछी में चिपकने तक मन्दाग्नि से पकावे ॥ २ ॥ जब अच्छी तरह पक जावे तब इन ओषधियों का चूर्ण डाले-सोंठि, जीरा, मिर्च, नागकेशर, जावित्री ॥ ३ ॥ इलायची, तज,पत्रज, पीपरि, धनियां, स्याहजीरा, पिपलामूल, वायबिडंग यह सब मिला-कर अदरख की चौथाई लेवे पाक ठंढा हो जाने पर औषधैं मिलावे और चिकने बर्तन में रक्खे शीतकाल में ४) खावे ॥४ । ५ ॥ तो श्वास, कास, स्मृतिनाश, स्वरभंग, अरोचक, कान और नासिका के रोग, क्षय, उरःक्षत ॥ ६ ॥ हृद्रोग, संग्रहणी, शूल, गुल्म और शोष आदि को निवारण करै ॥ ७ ॥

इत्यार्द्रकपाकः ॥ २२ ॥

लशुनपाकः ॥ २३ ॥

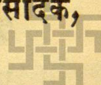
निस्तुषं लशुनं कृत्वा रात्रौ तक्रे विनिक्षिपेत् ॥
तदुग्रगंधनाशाय प्रातर्ग्राह्यं जलाप्लुतम् ॥ १ ॥
प्रस्थमात्रं तु तत्पिष्ट्वा क्षीरप्रस्थचतुष्टये ॥
विपाच्य सांद्रीभूतेऽस्मिन् सर्पिषः कुडवं क्षिपेत् ॥ २ ॥
रास्ना शतावरी छिन्ना शटी विश्वा सुरद्रुमम् ॥
वृद्धदारुकदीप्याग्निः शताह्वा सपुनर्नवा ॥ ३ ॥
फलत्रयं पिप्पली च कृमिघ्नः कर्षसंमितः ॥
विचूर्ण्य शीते कुडवं मधुनस्तत्र योजयेत् ॥ ४ ॥

सिताप्रस्थचतुष्कं च पंच लौहं रसेन्द्रकम् ॥
कर्पूरं मृगनाभिं च यथाभागं विमिश्रयेत् ॥ ५ ॥
पालकीं भक्षयेन्मात्रामाढ्यवाते हनुग्रहे ॥
आक्षेपकादिभंगेषु कटथ्रूरुस्तंभदुःसहे ॥ ६ ॥
सर्वांगे संधिभंगे च प्रबले मारुते हितः ॥
लशुनस्य सुपाकोऽयं वर्णायुःपुष्टिकारकः ॥ ७ ॥

इति लशुनपाकः ॥ २३ ॥

ऽ२ छिले हुए लहसुन को रात्रि समय मट्ठे में भिगो दे जिससे उसकी उग्र गंध का नाश हो जाय और प्रातःकाल निकाल पानी में धोकर पीस ले ॥ १ ॥ और ऽ८ दूध में पकावै जब गाढ़ा होजाय तब ऽ॥ घी डाले ॥ २ ॥ रास्ना की जड़, शतावरि, गुर्च, कचूर, सोंठि, देवदारु, विधारा, जीरा सफ़ेद, चीत, सौंफ, गदापुरैना ॥ ३॥ त्रिफला, पीपरि, बायबिडंग प्रत्येक दो २ तोला लेकर चूर्ण करै और पूर्वोक्त सिद्ध किये हुये लहसुन में मिलावे जब ठंढा होजाय तब ऽ॥ सहत डालै ॥ ४ ॥ ऽ८ शक्कर, कान्तीसार आदि पञ्चभस्म रससिंदूर, कपूर, कस्तूरी यथालाभ डालै ॥ ५ ॥ ८) तोला मात्र, प्रतिदिन प्रातःकाल खावे तो आढ्यवात, हनुग्रह, आक्षेप, पक्षवध कटि और दुःसह ऊरुस्तम्भ ॥ ६ ॥ सर्वांगवात, संधियों का भंग और प्रबल वातव्याधि नष्ट होजाय यह लहसुन पाक वर्णप्रसादक, आयुवर्द्धक और पुष्टिकारक है ॥ ७ ॥

इति लशुनपाकः ॥ २३ ॥



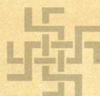
कशेरुपाकः ॥ २४ ॥

कशेरुं कुडवं गव्यं घृतं ग्राह्यं च तत्समम् ॥
गोक्षीरं भाजनं देयं पचेत्सम्यग्भिषग्वरः ॥ १ ॥
उत्तार्य्य प्रक्षिपेत्तत्र गुडं कोलद्वयं शुभम् ॥
खंडं प्रस्थद्वयं चैव पाकं कृत्वा क्षिपेत्पुनः ॥ २ ॥
पाषाणभेदं त्रिकटुं लोध्रं जातिशतावरीम् ॥
मंजिष्ठा धातकी माजू बिल्वं मोचरसं तथा ॥ ३ ॥
एतेषां शुक्तिमात्रं च चतुःकर्षं च मोदकम् ॥
प्रदराणि निहंत्याशु योनिदोषं शमं नयेत् ॥ ४ ॥

इति कशेरुपाकः ॥ २४ ॥

ऽ॥ कसेरू का चूर्ण ऽ॥ गाई का घी ऽ८ गाई का दूध मिलाकर मंदाग्नि में पकावे ॥ १ ॥ फिर उतार कर २) गुड़ मिलावे और ऽ४ खांड़ की चासनी करके उसमें पूर्वोक्त खोवा मिलाकर ॥ २ ॥ पुनः पाषाणभेद, सोंठि, पीपरि, मिर्च, लोध, जावित्री, शतावरि, मँजीठ, धव के फूल, माजूफल, बेलगिरी, मोचरस ॥ ३ ॥ यह सब चार २ तोला लेकर चूर्ण करे सबको मिलाकर आठ ८ तोला प्रमाण मोदक बनाकर खावे, यह प्रदर और योनिदोष को नाश करता है ॥ ४ ॥

इति कशेरुपाकः ॥ २४ ॥

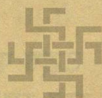


चतुर्थांश शेष रहे तब छान कर उसी के तुल्य गाई के दूध में पकावे ॥२॥ दूध का नवमांश घी मिलाके गाढ़ा कर लेवे और ⟩२ मिश्री का जलाव बनाकर मिलावे और सोंठि, पीपरि, मिर्च, त्रिफला, कपूर, जटामांसी, तज, पत्रज, इलायची, वंशलोचन, खैरसार, गुर्च का सत ॥ ३ ॥ चन्दनसफ़ेद, अकरकरा, उशीर, रूसा की जड़ की बकली, लवंग, सफेद मुसली, स्याह मुसली, कंकोल, मरोरफली, नागकेशर, स्याहजीरा, सफेदजीरा, तगर, कड़वा कूट, गज पीपरि ॥४॥ विदारीकंद, जायफल, जावित्री, रूमीमस्तगी, हाऊ-बेर, जीरा, अगर, समुद्रशोष, मेदा, महामेदा, कान्तीसार, रससिंदूर, वंग, केशर यह सब दो २ तोले लेवे ॥ ५ ॥ और चूर्ण कर मिलावे और सात दिन धर रक्खे फिर अग्निबल के अनुसार मात्रा खिलावे तो यह सम्पूर्ण विकार और सब कुष्ठों को जीत लेता है दृष्टि कान्ति और बल देता है ॥ ६ ॥ इससे विशीर्ण दाँत कान अँगुली और नासिका दृढ़ हो जाती हैं । अमृत से अधिक इसका प्रभाव है । इसके सेवन में अन्नपानादि का कोई परहेज नहीं है ॥ ७ ॥ बुद्धि-मान्, बली, रोगरहित, बलीस्वरूप, बुद्धि में बृहस्पति से अधिक कान्ति में काम से अधिक सुखी हो जाता है ॥८॥ मनुष्य को सौ वर्ष की आयुवाला करता है । यह सब रसायनों का राजा है ॥ ९ ॥

इत्यमृतभल्लातपाकः ॥ २५ ॥

वासापाकः ॥ २६ ॥

तुलामादाय वासायाः पचेदष्टगुणे जले ॥



तेन पादावशेषेण पाचयेदाढकं भिषक् ॥ १ ॥
हरीतकीनां चूर्णस्य खंडा शुद्धा तथा शतम् ॥
शीतीभूते क्षिपेत्तत्र क्षौद्रस्याष्टौ पलानि च ॥ २ ॥
वंशोद्भवायाश्चत्वारि पिप्पल्यष्टपलं तथा ॥
चातुर्जातं पलं चैकं लेहोऽयं संप्रणाशयेत् ॥ ३ ॥
रक्तपित्तं क्षयं कासं श्वासमग्नेश्च मन्दताम् ॥ ४ ॥

इति वासापाकः ॥ २६ ॥

।ऽ२॥ रूसा की जड़ की बकली को २॥ऽ जल में पकावे जब ॥ऽ५ बाकी रहे तब ॥१॥ऽ८ हरड़ की बकली का चूर्ण और ।ऽ२॥ शुद्ध खाँड़ की चासनी में मिलावे और ठंढा होने पर ऽ१ सहत ॥२॥ ऽ॥ वंशलोचन, ऽ१ पीपरि छोटी, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर प्रत्येक आठ २ तोले लेकर चूर्ण करे और सब एक में मिलाकर सिद्ध करै ॥ ३ ॥ इसके खाने से रक्तपित्त, क्षय, कास, श्वासमन्दाग्नि नाश हो जाती है ॥ ४ ॥

इति वासापाकः ॥ २६ ॥

सूरणपाकः ॥ २७ ॥

त्रिवृत्तेजोवती दन्ती श्वदंष्ट्रा चित्रकं शटी ॥
गवाक्षी विश्वमुस्ता च विडंगानि हरीतकी ॥ १ ॥
पलोन्मितानि चैतानि पलान्यष्टावरुष्करा: ॥

जटामांसी, सोंठि, पीपरि, मिर्च, आँवला, बड़ी हड़, बहेरा, बड़ी इलायची, तज, पत्रज यह सब दो २ तोले लेवे ऽ॥ आध २ सेर तिल का और सरसों का तेल ऽ१ निशोथ ॥ १ ॥ ॥ऽ७॥ सेर आँवला का रस ऽ६। गुड़ इन सबको पाकविधि से पकाकर और भोजन के पूर्व खावे तो इससे संग्रहणी, बवासीर खाँसी, श्वास दमा शोथ, उदरव्याधिनाश हो जाते हैं । इसमें वैद्यलोग निशोथ को तेल में किंचित् भूनकर डालते हैं ॥ २ ॥

इति कल्याणगुडः ॥ २८ ॥

मधुपक्कहरीतक्यवलेहः ॥ २९ ॥

सुपक्कपथ्यापलपंचकं च
मूत्रे गवां प्रस्थमिते विपाच्य ॥
प्रस्थे पुनः काञ्जिकदुग्धतक्रे
पक्त्वा ततो निष्कालिका विधेयाः ॥ १ ॥
व्योषं यवानी कुटजस्य बीजं
मुस्ताजलं दाडिममम्लवेतसम् ॥
सधातकीपुष्पमजाजियुग्मं
कणा जटा मोचरसं सबिल्वम् ॥ २ ॥
सौवर्चलं सैंधवमश्मवल्कं
जम्ब्वाम्रमज्जातिविषा च पाठा ॥

लवंगजातीफलतूर्यजाता-
न्येतानि तुल्यानि च तत्र जातम् ॥ ३ ॥
कपित्थमंडूरमयोदशांश-
समस्तचूर्णार्द्धमिता सिता च ॥
अनेन पथ्या परिपूरणीयाः
सूत्रेण युक्तो परिवेष्टनीयाः ॥ ४ ॥
स्थाल्यां ततस्ताः क्रमशो निधाय
तृणानि युक्त्या परितो विमुच्य ॥
मन्दाग्निना याममथो विशुष्य
विधाय शीता मधुनि क्षिपेच्च ॥ ५ ॥
तास्सेव्यमाना ग्रहणीप्रमेह-
श्वासापहा वह्निकराश्च वृष्याः ॥
पाण्ड्वामवातापहराश्च पुष्टि-
प्रदायकाः क्षौद्रमयाः प्रदिष्टाः ॥ ६ ॥
इति मधुपक्कहरीतक्यवलेहः ॥ २६ ॥

ऽ॥ॽ अच्छी पकी बड़ी हड़ैं, ऽ२ गोमूत्र में ऽ२ कांजी में ऽ२ दुग्ध में पुनः ऽ२ माठा में पका कर गुठली निकाल डाले ॥ १ ॥ सोंठि, पीपरि, मिर्च, जवाइनि, इन्द्रयव, नागरमोथा, सुगंधबाला, अनारदाना, अम्लवेतस, धव के फूल, सफेदजीरा, स्याहजीरा, पिपलामूल, मोचरस, बेलगिरी ॥ २ ॥ कालानमक, सेंधानमक, पाषाण-

मेद, जमुनी की गूदी, आम की गूदी, अतीस, पाढ़ा, लवंग, जायफल, तज, पत्रज, छोटी इलायची, नागकेशर यह सब बराबर २ लेवे ॥ ३ ॥ कैथा की गूदी, मंडूर, कान्तीसार यह तीनों चूर्ण के दशांश और समस्त चूर्ण की आधी मिश्री मिलाकर हड़ों में भर युक्ति से उस की टोपी बंदकर सूत से बांध देवे ॥ ४ ॥ कड़ाही में बिछाकर ऊपर से तृण फैला दे फिर हड़ैं फैलावे फिर तृण फैलावे इसी तरह से सब हड़ों को फैला कर ऊपर से तृण मूंद कर मंदाग्नि में एक याम पका के सुखावे फिर ठंढा करके सहत में रख देवे ॥ ५ ॥ इस तरह की बनी हुई हड़ैं संग्रहणी, प्रमेह और श्वास को नाश करती हैं अग्नि बढानेवाली और वीर्य बढानेवाली हैं । पांडुरोग आमवात हरनेवाली पुष्टिदायक हैं ॥ ६ ॥

इति मधुपक्कहरीतक्यवलेहः ॥ २९ ॥

केशरावलेहः ॥ ३० ॥

प्रस्थार्द्धं च कणाचूर्णं काश्मीरं च तदर्द्धकम् ॥
द्वादशप्रस्थमात्रं तु गोदुग्धं तत्र निक्षिपेत् ॥ १ ॥
लोहे कटाहे सुदृढे एकीकृत्य निधापयेत् ॥
मृद्वग्निना पचेत्तत्र घृतं दद्यात्पलत्रयम् ॥ २ ॥
शर्करायां विशुद्धायाः पलानि दश निक्षिपेत् ॥
शीतीभूते ततः पश्चाच्चूर्णानीमानि दापयेत् ॥ ३ ॥

चातुर्जातं देवपुष्पं पिप्पलीमूलचित्रकम् ॥
जातीफलं जातिपत्री कुबेराक्षं केवाचकम् ॥ ४ ॥
शतावरी वाजिगंधा गोक्षुरं हबुषा शटी ॥
वृक्षाम्लं नागरं धान्यं कबरी वंशलोचनम् ॥ ५ ॥
शृङ्गाटकं कशेरुं च मुस्ता मोचरसं तथा ॥
वृद्धदारुर्देवदारुस्तगरं च यवानिका ॥ ६ ॥
कृष्णागुरु पद्मफलं तथा चेक्षुरबीजकम् ॥
सर्वाण्येतानि संचूर्ण्य पृथगर्द्धाक्षसंमितम् ॥ ७ ॥
अभ्रकं च तथा शुल्वं नागं वंगं मृतायसम् ॥
पयसा शोधितं नागं पूर्वांशेन विनिक्षिपेत् ॥ ८ ॥
काश्मीरकावलेहो ऽयं दुर्बलानां बलप्रदः ॥
बलमोजश्च पुष्ट्यायुः सौकुमार्यस्य वर्द्धनम् ॥ ९ ॥
क्षीणेन्द्रिया नष्टशुक्रा बलमांसविवर्जिताः ॥
व्यवायरहिताश्चैव धातुवृद्धा भवन्ति हि ॥ १० ॥
वातिकाः श्लैष्मिकाश्चैव व्याधयः सम्भवन्ति ये ॥
तेषां नाशकरः क्षिप्रं तिमिराणां यथा रविः ॥ ११ ॥

इति केशरावलेहः ॥ ३० ॥

ऽ१ पीपरि का चूर्ण, ऽ॥ केशर, ॥ऽ ४ गाई का दूध ॥ १ ॥
सुदृढ लोहे की कड़ाही में इन सबको मिला मंदाग्नि में पकाकर

खोवा करै और ऽ।॥ घी डाल कर भून लेवे॥ २॥ ऽ१। शुद्ध शर्करा मिलावे और ठंढा करके इन ओषधियों का चूर्ण डाले॥ ३॥ तज, पत्रज, छोटी इलायची, नागकेशर, लवंग पिपलामूल, चीत, जायफल, जावित्री, इन्द्रयव, कौंचबीज॥ ४॥ शतावरि, असगंध, गोखुरू, हाऊबेर, कचूर, अम्लवेतस, सोंठि, धनियां, बबई के बीज, वंशलोचन॥ ५॥ सिंघाड़ा, कसेरू, नागरमोथा, मोचरस, बिधारा, देवदारु, तगर, अजवायन॥६॥ स्याह अगर, कमलबीज, तालमखाना के बीज यह सब दवाइयां एक एक तोले लेकर चूर्ण करै॥ ७॥ अभ्रक, ताम्रेश्वर, नागेश्वर, वंग, कांतीसार, दूध में शोधित चिकनी दक्षिणी सुपारी एक २ तोला॥ ८॥ यह केशरपाक दुर्बलों को बल देनेवाला बल ओज और दीर्घायु सुकुमारता का वर्द्धक॥ ९॥ क्षीणेन्द्रिय नष्टशुक्र बल और मांसरहित नपुंसकों को हितकारी, धातु और पुष्टि बढानेवाला है॥ १०॥ अंधकार को नाश करने में सूर्य के समान वातिक और श्लैष्मिक व्याधियों का नाशक है॥ ११॥

इति केशरावलेहः॥ ३०॥

भल्लातपाकः॥ ३१॥

भल्लातकं च द्विप्रस्थं दुग्धद्रोणे विपाचयेत्॥
प्रस्थद्वयं घृतं दद्यात्प्रस्थं शुद्धा च शर्करा॥ १॥
त्रिफला त्रिगुणं मुस्ता मंजिष्ठा धान्यजीरकम्॥
चातुर्जातक ह्रीवेर यष्टीपद्मक केशरम्॥ २॥

लवंगं जातिकंकोलं विदारीकन्दमुत्पलम् ॥
वंशजं लोहताम्रं च कर्पूरं खदिरं तथा ॥ ३ ॥
प्रस्थार्द्धं निक्षिपेच्चूर्णं भक्षयेत्पलमात्रकम् ॥
रक्तपित्तं च कुष्ठं च दद्रू पामा विचर्चिका ॥ ४ ॥
वक्रतां वातरक्तं च प्रवहत्पूयशोणितम् ॥
अंगविस्फुरणंबाधिर्यं शैथिल्यं बलहीनताम् ॥५॥
विजयेत्सर्वपित्तानि वातव्याधिविनाशनम् ॥
भल्लातकानां पाकोयं रसायनवरं स्मृतम् ॥ ६ ॥

इति भल्लातपाकः ॥ ३१ ॥

ऽ४ भिलावों को ॥ऽ२ सेर दूध में पकावे पुनः ऽ४ घी और ऽ२ शुद्ध शर्करा देकर पकावे ॥१॥ तिगुनी त्रिफला (आंवला, हड़ बहेड़ा) लेवे, नागरमोथा, मँजीठ, धनियाँ, जीरास्याह, तज, पत्रज, छोटी इलायची, नागकेशर, नेत्रवाला, जेठीमधु, कमल की रज ॥२॥ लवंग, जावित्री, कंकोल, विदारीकन्द, नीलोफर, वंशलोचन, कान्तीसार, ताम्रेश्वर, कपूरशुद्ध, खैर ॥ ३ ॥ यह सब चूर्ण ऽ१ लेकर मिलावे और आठ तोला खावे तो रक्तपित्त, कुष्ठ, दाद, खाज, विचर्चिका ॥४॥ टेढ़ापन, वातरक्त, पीब और रुधिर बहना, अंगोंका फरकना, बहिरापन, शिथिलता, कमजोरी ॥५॥ सब पित्त और वातव्याधि नाश होती हैं यह भिलावाँपाक श्रेष्ठ रसायन है ॥६॥

इति भल्लातपाकः ॥ ३१ ॥

द्राक्षापाकः ॥ ३२ ॥

द्राक्षाप्रस्थं क्षालयित्वा जलेन-
च्छायाशुष्कं प्रक्षिपेद्भाण्डमध्ये ॥
गोक्षीरे तत्पाचयेदष्टगुण्ये
दार्व्यालोड्य स्थापयेत्पाकशेषम् ॥ १ ॥
तस्मिन्पाके प्रक्षिपेदौषधानि
चूर्णीकृत्वा वस्त्रपूतानि तानि ॥ २ ॥
पर्पटातिविषामूर्वापटोलं घनबालकम् ॥
हरीतक्यास्तथा चूर्णं विदार्याः कर्षसंमितम् ॥३॥
तेन क्षीरेण योज्यं तत् समं शर्करया युतम् ॥
घृतेन नवनीतेन पिण्डीकृत्वा तु भक्षयेत् ॥ ४ ॥
पित्तसंग्रहणी पाण्डुकामलातितृषापहम् ॥
भ्रमं मूर्च्छां तृषा हिक्का तमकोन्मादचाश्मरीन् ॥५॥
मेहपित्तार्शकुष्ठांश्च नाशयत्याशुनिश्चितम् ॥ ६ ॥

इति द्राक्षापाकः ॥ ३२ ॥

ऽ२ दाख जल में धोकर छाया में सुखाकर मट्टीके पात्र में अष्ट-गुण गऊ के दूध में पकावे और करछी से चलावे और उस पाक में ॥१॥ कपड़छान की हुई आगे की ओषधियाँ डाले ॥२॥ पित्त-पापड़ा, अतीस, मुरहरी, परवर की पत्ती, नागरमोथा, सुगन्धबाला,

बड़ी हड़ का बकला और बिदारीकन्द यह दो २ तोले और सम भाग शर्करा ॥ ३ ॥ मिलावे और घी नेनू (मक्खन) से गोली बनावे ॥४॥ यह पित्तरोग, संग्रहणी, पांडु, क्षयाँवर, भ्रम, मूर्च्छा, तृषा, हिक्का, तमकश्वास, उन्माद, पथरी ॥५॥ प्रमेह, पित्तार्श, कुष्ठादि को शीघ्र ही नाश करता है ॥ ६ ॥

इति द्राक्षापाकः ॥ ३२ ॥

जातीफलपाकः ॥ ३३ ॥

जातीफलानां शतपंचकं च
द्रोणेन दुग्धेन विपाच्य सम्यक् ॥
सिता तुलां चात्र घृतं तुलांशं
दद्यात्तुगायाः कुडवैकमेव ॥ १ ॥
कर्पूरकंकोललवंगचूर्णं
त्रिजातकं मोचरसं पृथक् पलम् ॥
भक्ष्यश्च कर्षं सकलामयघ्नं
सश्वासकासं ग्रहणीप्रमेहम् ॥ २ ॥
दुर्नामकं चौरयमतिक्षयश्च
निहन्ति कुर्याद् बलवीर्यपुष्टिम् ॥ ३ ॥



इति जातीफलपाकः ॥ ३३ ॥

---

५०० पुष्ट जायफलों को ॥।/२ दुग्ध में अच्छी तरह पकाकर खोवा कर ।/२॥ मिश्री, /३= घी, /॥ वंशलोचन ॥ १ ॥ शुद्ध कपूर, कंकोल, लवंग, तज, पत्रज, छोटी इलायची, मोचरस अलग २ आठ २ तोला मिलाकर पाक सिद्ध कर दो २ तोला खावे तो सब प्रकार के रोग श्वास, कास, ग्रहणी, प्रमेह ॥ २ ॥ बवासीर, क्षीणता और क्षय रोग को नाशकरे और बल वीर्य को पुष्ट करता है ॥ ३ ॥

इति जातीफलपाकः ॥ ३३ ॥

बृहदेरण्डपाकः ॥ ३४ ॥

वातारिबीजप्रस्थं तु सुपक्कं निस्तुषीकृतम् ॥
क्षीरद्रोणार्द्धसंयुक्तं भिषङ्मन्दाग्निना पचेत् ॥ १ ॥
घृतप्रस्थार्द्धकं दत्त्वा खंडप्रस्थद्वयं क्षिपेत् ॥
त्र्यूषणं सचतुर्जातं ग्रंथिकं वह्निचव्यकौ ॥ २ ॥
छिन्ना मिसिः शटी बिल्वं दीप्यौ जीरानिशायुगम् ॥
अश्वगन्धा बला पाठा हबुषा वेल्लपुष्करम् ॥ ३ ॥
श्वदंष्ट्रावत्सकं दारु वृद्धकं बालकं वरी ॥
एतानि पिचुमात्राणि चूर्णितानि विनिःक्षिपेत् ॥४॥
भक्षयेच्च यथा सात्म्यं प्रभाते नित्यमादरात् ॥
वातव्याधिभवं शूलं शोफवृद्धिं तथोदरम् ॥ ५ ॥

आनाहं चाश्मरीगुल्ममामवातं कटीग्रहम् ॥
तथा हिध्माश्वासकासवातव्याधिगलामयान् ॥६॥
अर्दिताक्षेपविश्वाचीगृध्रसीश्चापतंत्रकम् ॥
पक्षाघातं पंगुवातं भग्नं दण्डापतानकम् ॥ ७ ॥
मन्यास्तंभं हनुस्तंभं नाशयेदतिवेगतः ॥
आमवातगजेन्द्रेषु केसरी कथितः शुभः॥ ८ ॥
बलकृत् बृंहणो वृष्यः पुष्टिदो धातुसात्म्यकृत् ॥ ९ ॥

इति बृहदेरण्डपाकः ॥ ३४ ॥

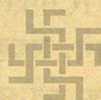
८२ अच्छे पके छिले हुये अंडी के बीज ।८६ गाई के दूध में मंदाग्नि से पकावे ॥१॥ ८१ घी में एरंड के खोवा को भून के उसमें, ८४ उत्तम खाँड़ की चासनी बनाकर उसी में सोंठि, पीपरि, मिर्च, तज, पत्रज, छोटी इलायची, नागकेशर, पिपलामूल, चीत, चाब ॥२॥ गुर्च का सत, सौंफ, कचूर, बेलगिरी, अजवाइन, अजमोदा, सफेद जीरा, स्याह जीरा, हल्दी, दारुहल्दी, असगंध, बरियारी के बीज, पाढ़ी, हाऊबेर, बायबिड़ंग, पोहकरमूल ॥ ३ ॥ गोखुरू, कुरैया की छाल, देवदारु, बिधारा, सुगन्धबाला, शतावरि यह सब दो २ तोले का चूर्ण कर डाले ॥ ४ ॥ प्रतिदिन प्रातःकाल बल और समय के अनुसार खावे तो वातव्याधिजनित शूल, शोथ, उदर-रोग, अंडवृद्धि ॥ ५ ॥ अफारा, पथरी, बायगोला, आमवात, कटि ग्रह, श्वास, खाँसी, वातव्याधि, गले के रोग ॥ ६ ॥ अर्दितवात, आक्षेपक, विश्वाची, गृध्रसी, अपतंत्रक, पक्षाघात, लुंजापना भग्न

दण्डापतानक ॥७॥ मन्यास्तंभ, जबड़े का जकड़ना व आमवातरूपी गजेन्द्रों में सिंह के समान है ॥ ८ ॥ यह पाक बलबृंहण, पौष्टिक, धातुसात्म्य करनेवाला है ॥ ६ ॥

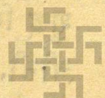
इति बृहदेरण्डपाकः ॥ ३४ ॥

बृहत्कपिकच्छूपाकः ॥ ३५ ॥

वनेचरीबीजान्क्षिपेद्‌द्विप्रस्थ-
मुष्णोदके यामचतुष्टयञ्च ॥
विघर्षयेद्वस्त्रदृढे च गाढे
यावद्भवेन्निस्तुषनिर्मलञ्च ॥ १ ॥
छायाविशुष्कं च तदेव चूर्णं
क्षीरे पचेद् द्रोणसशेषपादम् ॥
दद्याद् घृतं प्रस्थयुतं च तस्मि-
न्विपाचयेन्मंदहुताशनेन ॥ २ ॥
चूर्णं क्षिपेच्चागुरुजातिपत्री
जातीफलं नागरदेवपुष्पम् ॥
आकल्लकं जीरकपिप्पली च
त्रिजातकं केसरहस्तिसंज्ञम् ॥ ३ ॥
कर्पूरकंकोलसमुद्रशोषं
भल्लातकं केसरहंसपादम् ॥



विषं कुबेराम्बुरसोनजातं
चीनीकबाबेच्छुरकं च बीजम् ॥ ४ ॥
सर्वं क्षिपेच्चैव पलार्द्धमानं
तुर्य्यांशमानेन च नागवंगौ ॥
दद्यात्तथा मौशलकं च कंद-
मयःसुकिट्टं च तथाहिफेनम् ॥ ५ ॥
पलप्रमाणानि विनिक्षिपेच्च
प्रस्थद्वयं तत्र सितां च दद्यात् ॥
शीते च क्षौद्रं भिषजा प्रयोज्यं
यद्वार्द्धपाके कुडवद्वयं च ॥ ६ ॥
स्थितं सुभांडे च सुधूपिते तु
खादेत्ततो वह्निबलानुसारतः ॥
द्राक्षाफलं वा कदलीफलं वा
प्रियालुमज्जा ह्यथ शर्करा वा ॥ ७ ॥
घृतेन युक्ताश्च तिलाश्च भक्ष्या
विवर्जयेदम्लरसांस्तथैव ॥
वश्यां च रामां कुरुते सकामां
मेधाकरं पुष्टिकरं नितांतम् ॥ ८ ॥
अनेन शाम्यन्ति च सर्वरोगाः



श्वासश्च पांड्वामयराजयक्ष्मा: ॥
कासश्च हिक्का श्वयथुश्च मेद:
सर्वे प्रणश्यन्ति च वायुरोगा: ॥ ६ ॥
दिने दिने कामसमानरूपो
जयेन्नरः कामिनिकामयूथम् ॥
ये क्षीणवीर्या अपि नष्टशुक्रा
ये चैव खंजा बहुवायुयुक्ता: ॥ १० ॥
तेषां विकारा: प्रशमं प्रयान्ति
नरो भवेद्भीमपराक्रमश्च ॥ ११ ॥
इति बृहत्कपिकच्छूपाक: ॥ ३५ ॥

चार पहर गर्म जल में ऽ४ कौंच के बीज डालकर जब तक छिलकारहित निर्मल न हो जायँ तबतक दृढ़ वस्त्र में अच्छी तरह से रगरै ॥ १ ॥ छाया में सुखा चूर्ण कर ॥ऽ२ दूध में पकाकर जब खोवा हो जाब तब ऽ२ घी डाल कर मन्दाग्नि से पकावे ॥ २॥ फिर यह चूर्ण अगर, जावित्री, जायफल, सोंठि, लवंग, अकरकरा, सफेदजीरा, पीपरि, तज, पत्रज, छोटी इलाइची, नागकेशर, गजपीपरि ॥ ३ ॥ कपूर शुद्ध, कंकोल, समुद्रशोष, भिलावाँ, केशर, शुद्ध सिंगरफ, विष शुद्ध, इन्द्रयव, सुगन्धवाला, लहसुन, कवाबचीनी, तालमखाने के बीज ॥ ४ ॥ यह सब चार २ तोला नागेश्वर वंग दो २ तोले लेवे और सफेद मूसली, मंडूर, अफीम, आठ २

तोला ॥ ५ ॥ ऽ४ मिश्री की चासनी मिलावे ठंढा हो अथवा अर्द्धपाक होतब ऽ१ सहत डाले ॥ ६ ॥ धुपाये हुए पात्र में रखकर अग्नि के अनुसार खावे। दाख, केला की फली, चिरौंजी, शक्कर ॥७॥ वा घी मिले तिल पीछे खावे और खट्टे रस सदा वर्जित करे तो सकाम रमणियों को वश कर सक्ता है और यह अत्यन्त बुद्धि और पुष्टिकारक है ॥८॥ इससे सर्वरोग श्वास, पाण्डु, राजयक्ष्मा, कास, हिचकी, शोथ, मेदा और सर्व वातरोग नाश हो जाते हैं ॥९॥ काम के समान रूपवाला मनुष्य कामिनी के कामयूथ को जीतता है जो क्षीणवीर्य्य नष्टशुक्र और खंजवातयुक्त हैं ॥ १०॥ उनके सब विकार नाश हो जाते हैं तथा मनुष्य भी अत्यन्त पराक्रमी हो जाता है ॥ ११ ॥

इति बृहत्कपिकच्छूपाकः ॥ ३५ ॥

धनञ्जयहरीतकी ॥ ३६ ॥

निक्षिपेत्त्रिदिनं मूत्रे गवां गुर्वीं हरीतकीम् ॥
ततस्तक्रे गवामेव त्रिदिनं तां विभावयेत् ॥१॥
स्वेदयेद्दिनमेकन्तु दशमूलांभसा सह ॥
निर्मज्जां च ततः कृत्वाचूर्णेनापि विडादिना॥२॥
संपूर्य वेष्टयेत्सूत्रैर्निम्बुकानां रसेषु च ॥
मज्जयेद्दिनमेकन्तु धनञ्जयहरीतकी ॥ ३ ॥

प्रत्यहं भक्षयेदर्द्धप्रमाणेन नरः सदा ॥
वर्द्धिनी जठरस्याग्नेरामातीसारपाचिनी ॥४॥

इति धनञ्जयहरीतकी ॥ ३६ ॥

अच्छी गरू हरैं तीन दिन गाई के मूत्र में डाल रक्खे पुनः गाई के मट्ठा में तीन दिन भावना देवे ॥ १ ॥ पुनः दशमूल के काढ़े में १ दिन पकावे फिर युक्ति से उनकी मज्जा निकाल बिड़ंगादि चूर्ण से ॥ २ ॥ उनको भरके सूत्र से बाँध कर कागजी नींबू के रस में एक दिन भिगोवे और यह धनञ्जयहरीतकी ॥ ३ ॥ आधी प्रमाण मनुष्य प्रतिदिन खावे तो जठराग्नि की बढ़ानेवाली और आमातीसार को पकानेवाली है ॥ ४ ॥

इति धनञ्जयहरीतकी ॥ ३६ ॥

जीरकपाकः ॥ ३७ ॥

जीरकं प्रस्थमेकन्तु क्षीरमाढकमेव च ॥
घृतप्रस्थार्द्धसंयुक्तं शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥ १ ॥
सुशीते शर्कराप्रस्थद्वयमत्र विनिक्षिपेत् ॥
चातुर्जातकणाविश्वामजाजीदहनं जलम् ॥ २ ॥
दाडिमं रसजं धान्यं रजनीद्वयवासकम् ॥
वंशजातं तवाक्षीरं प्रत्येकन्तु पलार्द्धकम् ॥ ३ ॥
जीरकस्यावलेहोऽयं प्रदरापहरः परः ॥

रक्तपित्तं मुखगदं प्रमेहं कृच्छ्रकाश्मरीम् ॥ ४ ॥
जीर्णज्वरं तथा दाहं पीनसार्शांसि नाशयेत् ॥
अंगपुष्टिबलारोग्यजनको वीर्य्यवर्द्धनः ॥ ५ ॥
इति जीरकपाकः ॥ ३७ ॥

ऽ२ सफेद जीरा का चूर्ण, ऽ८ दुग्ध और ऽ१ घी इन सबको मिलाकर धीरे २ मन्दाग्नि में पकावे ॥ १ ॥ जब अच्छी तरह ठंढा होजाय तब ऽ४ शक्कर मिलावे और तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, छोटीपीपली, सोंठि, जीरास्याह, चीत, सुगन्धबाला ॥ २ ॥ अनार का शर्बत, धनियां, हल्दी, दारुहल्दी, रूसा की जड़ की बकली, वंशलोचन, तवाखीर यह सब चार २ तोला लेकर ॥३॥ एकै में मिलाकर खावे तो यह जीरकावलेह कठिन प्रदररोग, रक्तपित्त, मुख के रोग, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी ॥४॥ जीर्णज्वर, दाह, पीनस और बवासीर इनको नाश करता है और अंगपुष्टि, बल आरोग्यजनक और वीर्यवर्द्धक है ॥ ५ ॥

इति जीरकपाकः ॥ ३७ ॥

शतपत्रिकापाकः ॥ ३८ ॥

श्वेतपुष्पसहस्रन्तु घृतप्रस्थे विपाचयेत् ॥
घृतपक्वीकृते पश्चादधो क्षिप्त्वा तथौषधम् ॥ १ ॥
सिताप्रस्थचतुष्कन्तु चातुर्जातं पलं पलम् ॥
द्विषट्पलं च मृद्वीका माक्षिकं पलमेव च ॥ २॥

धारासत्वपलान्यष्टौ पश्चात्स्थाप्यं सुकुम्भके ॥
जीर्णज्वरे क्षये कासे वह्निमांद्ये प्रमेहजे ॥ ३ ॥
प्रदरे रक्तदोषे च कुष्ठार्शःसु प्रशस्यते ॥
नेत्ररोगे सुदुष्टे च मुखरोगेषु पूजितः ॥ ४ ॥

इति शतपत्रिकापाकः ॥ ३८ ॥

१००० सेवती के फूलों को ऽ२ घी में पकावे और जब घृत पक होजाय तब नीचे की औषधैं छोड़ै ॥ १ ॥ ऽ८ मिश्री, तज, पत्रज, छोटी इलायची, नागकेशर, आठ २ तोला ऽ१॥ मुनक्का और ऽ= सहत॥ २ ॥ ऽ१ गुर्च का सत लेवे इन सबको मिलाकर अच्छे घड़े में रक्खै और खावे तो यह पाक जीर्णज्वर, क्षयी, खाँसी, मन्दाग्नि, प्रमेह, प्रदर, रक्तदोष, कुष्ठ, बवासीर, बिगड़े हुये नेत्र और मुखरोग में अच्छा है ॥ ३।४ ॥

इति शतपत्रिकापाकः ॥ ३८ ॥

पुनर्नवावलेहः ॥ ३९ ॥

पुनर्नवामृता दारु दशमूलं जलाढके ॥
आर्द्रकस्य रसप्रस्थं गुडस्य च तुलां पचेत् ॥ १ ॥
तत्सिद्धौ व्योषपत्रैलात्वक्चव्यं कार्षिकैः पृथक् ॥
चूर्णीकृतैः क्षिपेच्छीते मधुनः कुडवं क्षिपेत् ॥२॥

लेहः पौनर्नवो नाम शोफशूलनिषूदनः ॥
कासश्वासारुचिहरो बलवर्णाग्निवर्धनः ॥ ३ ॥

इति पुनर्नवावलेहः ॥ ३९ ॥

गदापुरैना, गुर्च, देवदारु और दशमूल इनको आठ सेर जल में ऽ२ अदरख का रस और ।ऽ२॥ गुड़ डालकर पकावै ॥ १ ॥ जब सिद्ध होजाय तब मिर्च, सोंठि, पीपल, पत्रज, छोटी इलायची, तज, चाब दो २ तोला चूर्ण करके और ऽ॥ सहत डाले ॥ २ ॥ यह पुनर्नवावलेह शोथ, शूल, कास, श्वास, अरुचि का नाश करने वाला और बल, वर्ण और अग्निवर्द्धक है ॥ ३ ॥

इति पुनर्नवावलेहः ॥ ३९ ॥

खर्जूरपाकः ॥ ४० ॥

खर्जूरं द्वादशपलं गुडस्य च पलाष्टकम् ॥
पलानि सप्तखण्डस्य शुण्ठ्याश्चैकपलं तथा ॥१॥
पिप्पली मरिचं चैव कर्षद्वित्रिप्रमाणतः ॥
सुगन्धिप्रतिकर्षं च चव्यचित्रकयोः पिचुः ॥ २ ॥
सुसिद्धे निक्षिपेत्तत्र द्रव्याणीमानि भक्षयेत् ॥
खर्जूरपाको बलकृत् क्षयकासनिवारणः ॥ ३ ॥
कम्पवाताख्यहिक्कारुकश्वासकासनिवारणः ॥
बालानां पुष्टिजननो मेहप्रदरनाशनः ॥ ४ ॥

रूपदो बृंहणो वृष्यः कामसंजननः परः ॥ ५ ॥

इति खर्जूरपाकः ॥ ४० ॥

ऽ१॥ छोहारा, ऽ१ गुड़, ऽ॥।≈ खांड़, ऽ≈ सोंठि ॥ १ ॥ ऽ- पीपरि छोटी, ऽ-॥ मिर्च, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर यह चारों दो २ तोला, चाब, चीत दोनों १ तोला ॥ २ ॥ सिद्ध होने पर इन द्रव्यों को डालकर भक्षण करै यह खजूरपाक बलकारी, क्षय-कास ॥ ३ ॥ कम्पवात, हिचकी, श्वास और कास निवारण करता है । बालकों को पुष्ट करनेवाला, प्रमेह, प्रदरनाशक है ॥ ४ ॥ अच्छा रूप, मोटा करनेवाला, वृष्य और कामोत्पादक है ॥ ५ ॥

इति खजूरपाकः ॥ ४० ॥

पडवासपाकः[1] ॥ ४१ ॥

पडवासप्रस्थमेकं क्षीरद्रोणे विपाचयेत् ॥
घृतप्रस्थसमायुक्तं पाचयेन्मृदुवह्निना ॥ १ ॥
सान्द्रीभूते क्षिपेत्तत्र प्रस्थार्द्धं मधु चैव हि ॥
खण्डप्रस्थद्वयं चैव स्निग्धभाण्डे विनिक्षिपेत् ॥ २ ॥
घनीभूते क्षिपेत्तत्र चूर्णानीमानि यत्नतः ॥
चातुर्जातलवङ्गानि पिप्पली च पुनर्नवा ॥ ३ ॥
नागार्जुनी स्वयंगुप्ता गोक्षुरं पिचुमात्रकम् ॥

---

१ पडवासः-माचिका, वृक्षविशेषः 'मोइया' इति ख्यातः ।

मञ्जिष्ठां चाश्वगन्धां च द्व्यक्षमात्रां पृथक्पृथक् ॥ ४ ॥
आकल्लकं तथा कर्षं गुडश्चार्द्धपलाष्टकम् ॥
निर्गुण्डी केवुकं मूलं पलमात्रं प्रयोजयेत् ॥ ५ ॥
नागबला समेतश्च वङ्गाभ्रकसमन्तथा ॥
लोहं शुल्वं समं चैव विचूर्ण्य शाणकद्वयम् ॥ ६ ॥
धारासत्त्वं तुगाक्षीरी पलार्द्धश्च प्रकल्पयेत् ॥
बालकं चंदनं मांसी कर्पूरं वंशलोचनम् ॥ ७ ॥
जातीफलं जातिपत्री केशरं रक्तचन्दनम् ॥
पलमात्रं च दातव्यं भक्षयेन्मात्रया नरः ॥ ८ ॥
श्वासं कासं तथा पाण्डुं प्रमेहश्च विनाशयेत् ॥
योनिदोषं रजोदोषं प्रदरं पञ्चधा तथा ॥ ९ ॥
बहुमूत्रं भवेद्यस्य प्रणाश्यति न संशयः ॥
स्त्रीणां च कुरुते पुष्टिं बालानां चांगवर्द्धनम् ॥ १० ॥
बलवीर्य्यकरं पुंसां पडवासं सदोत्तमम् ॥ ११ ॥

इति पडवासपाकः ॥ ४१ ॥

ऽ२ माई को ॥ऽ२ गोदुग्ध में पकावे ऽ२ सेर घी मिलाकर मृदुवह्नि में पकावे ॥ १ ॥ गाढ़ा होने पर ऽ१ सेर सहत ऽ४ सेर खांड़ डालकर चिकने पात्र में रक्खे ॥ २ ॥ जब गाढ़ा होजाय तब यह चूर्ण डालै तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, लौंग, पीपरि

छोटी, गदापुरैना ॥ ३ ॥ छोटी दुधिया, केवांच बीज, गोखुरू यह दो २ तोले; मँजीठ, असगंध यह दोनों चार २ तोले ॥ ४ ॥ अकरकरा दो तोले, ऽ॥ गुड़, मेउड़ी के बीज, केला की कंद, गुरशकरी यह ऽ॥ आध २ पाव ॥ ५ ॥ वंग, अभ्रक, कांतीसार, ताम्रेश्वर आध २ तोला ॥ ६ ॥ गुर्च का सत, तवाखीर दोनों अलग अलग ऽ॥ सुगन्धबाला, चंदन सफेद, जटामांसी, कपूर, वंशलोचन ॥ ७ ॥ जायफल, जावित्री, केशर, लालचंदन यह सब ८ तोला डालकर खावे ॥ ८ ॥ तो श्वास, कास, पांडुरोग, प्रमेह योनिदोष, रजोदोष, पांच प्रदररोग ॥ ९ ॥ बहुमूत्र नाश होवे । यह पाक स्त्रियों को पुष्टकर, बालकों का अंगवर्धक ॥ १० ॥ पुरुषों का बलवीर्यकर है । यह पडवासपाक सदैव ही उत्तम है ॥ ११ ॥

इति पडवासपाकः ॥ ४१ ॥

शुण्ठीखण्डः ॥ ४२ ॥

नागरस्य पलान्यष्टौ घृतस्य कुडवं तथा ॥
क्षीराढकसमायुक्तं खण्डस्यार्द्धशतं पलम् ॥ १ ॥
व्योषत्रिजातकं द्रव्यात्प्रत्येकं च पलं पलम् ॥
निक्षिपेच्चूर्णितं तत्र खादेदग्निबलं यथा ॥ २ ॥
आमवातप्रशमनं धातुपुष्टिकरं परम् ॥
बल्यमायुष्यमोजस्यं बलीपलितनाशनम् ॥ ३ ॥

इति शुण्ठीखण्डः ॥४२॥

ऽ१ सोंठि, ऽ॥ घी, ऽ८ दूध, ।ऽ८॥ खांड़ ॥ १ ॥ मिर्च, सोंठि, पीपल, तज, पत्रज, छोटी इलायची प्रत्येक आठ २ तोले का चूर्ण कर पाकविधि से मिलावे और अग्निबल के अनुसार खावे ॥ २॥ तो यह आमवातनाशक, धातुपुष्टिकारक, बलकारक, आयुवर्द्धक और बलीपलितनाशक है ॥ ३ ॥

इति शुण्ठीखण्डः ॥ ४२ ॥

मेथिकापाकः ॥ ४३ ॥

मेथिकायाः पलान्यष्टौ शुण्ठी चाष्टपलानि च ॥
तयोश्चूर्णं पटे पूतं दुग्धं मृद्वग्निना पचेत् ॥ १ ॥
दुग्धाढकयुतं गव्यं घृतमष्टपलं क्षिपेत् ॥
तावत्तत्तु पचेद्यावद्भवेदतिघनं पयः ॥ २ ॥
पुनः पचेच्छनैस्तत्र दत्त्वाढकमितां सिताम् ॥
ततः पाके सुविज्ञाते ज्वलनादवतारयेत् ॥ ३ ॥
मरिचं पिप्पली शुण्ठी कणामूलं सचित्रकम् ॥
यवानी जीरकं धान्यं कारवी शतपुष्पिका ॥ ४ ॥
जातीफलं शटी त्वक् च पत्रकं भद्रमुस्तकम् ॥
गृह्णीयात्पलमेतेषां सर्वेषां च पृथक् पृथक् ॥ ५ ॥
षडक्षं नागरं तत्र मरिचं च षडक्षकम् ॥

एषां चूर्णं परिक्षिप्य सम्यक् संमिश्रय रक्षयेत् ॥ ६ ॥
एतत्तु भेषजं प्रोक्तं मेथिकापाकसंज्ञकम् ॥
भक्षयेत्पलमात्रं तद्यथा चाग्निबलं तथा ॥ ७ ॥
आमवातं निहन्त्येतत्सर्वांश्च पवनामयान् ॥
ज्वरांश्च विषमान् हन्ति पाण्डुरोगं सकामलाम् ॥ ८ ॥
हन्त्युन्मादमपस्मारं प्रमेहान् वातशोणितम् ॥
अम्लपित्तं शीतपित्तं शिरःपीडादृढामयम् ॥ ९ ॥
प्रदरं सूतिकारोगं हन्यादेतन्न संशयः ॥
वपुषः पुष्टिकृद् बल्यं वीर्य्यवृद्धिकरं परम् ॥ १० ॥

इति मेथिकापाकः ॥ ४३ ॥

ऽ१ मेथी, ऽ१ सोंठि इन दोनों के चूर्ण को कपड़छानकर मृदु अग्नि में ॥ १ ॥ ऽ८ गोदुग्ध, ऽ१ घी डालकर गाढ़ा होने तक पकावे ॥ २ ॥ पुनः ऽ८ मिश्री डालकर धीरे २ पकावे जब पाक होजाय तब आग पर से उतार लेवे ॥ ३ ॥ मिर्च, पीपल, सोंठि, पिपलामूल, चीत, जवाइनि, जीरा, धनियां, कलौंजी, सौंफ ॥४॥ जायफल, कचूर, तज, पत्रज, नागरमोथा यह सब आठ २ तोला ॥ ५ ॥ और ऽ=॥ सोंठि, ऽ=॥ मिर्च इन सबके चूर्ण को डालकर अच्छी तरह मिलाके रख लेवे ॥ ६ ॥ यह मेथिकापाक कहलाता है इसको अग्निबलानुसार ऽ= खावे ॥ ७ ॥ तो यह आमवात, सर्व प्रकार की वातव्याधि, सर्व विषमज्वर, पांडुरोग, क्यांवर॥८॥

उन्माद, मिरगी, प्रमेह, वातरक्त, अम्लपित्त, शीतपित्त, शिरपीड़ा आदि कठिन रोग ॥ ९ ॥ प्रदर, सूतिकारोग इन सबको नाश करता है; शरीर पुष्टि करनेवाला, बलकारी और अत्यन्त वीर्य्यवर्धक है ॥ १० ॥

इति मेथिकापाकः ॥ ४३ ॥

लघुकूष्माण्डावलेहः ॥ ४४ ॥

पुराणं पीनमानीय कूष्माण्डस्य दृढं फलम् ॥
तद्बीजाधारबीजत्वक्छिराशून्यं समाचरेत् ॥ १ ॥
ततस्तस्य तुलां नीत्वा पचेज्जलतुलाद्वये ॥
तस्मिन्नीरेऽर्धशिष्टे तु यत्नतः शीतलीकृते ॥ २ ॥
तानि कूष्माण्डखण्डानि पीडयेद् दृढवाससा ॥
यत्नतस्तज्जलं नीत्वा पुनः पाकाय धारयेत् ॥ ३ ॥
कूष्माण्डं शोषयेद्घर्मे ताम्रपात्रे ततः क्षिपेत् ॥
क्षिप्त्वा तत्र घृतप्रस्थं कूष्माण्डं तेन भर्जयेत् ॥ ४ ॥
मधुवर्णं तदालोक्य तज्जलं तत्र निक्षिपेत् ॥
सितायाश्च तुलां तत्र क्षिप्त्वा तल्लेहवत्पचेत् ॥ ५ ॥
सुपक्वे पिप्पली शुण्ठी जीराणां द्वे पले पृथक् ॥
पृथक् पलार्द्धधान्याकपत्रैलामरिचं त्वचम् ॥ ६ ॥

चूर्णमेषां क्षिपेत्तत्र घृतार्द्धं क्षौद्रमावपेत् ॥
एतत्पलमितं खादेदथवाग्निबलं यथा ॥ ७ ॥
खण्डकूष्माण्डलेहोऽयं रक्तपित्तविनाशकः ॥
पित्तज्वरं तथा दाहं प्रदरं कृशतां वमिम् ॥ ८ ॥
स्वरभेदं सहृद्रोगं कासं श्वासं क्षयं क्षतम् ॥
नाशयत्येव वृद्धोऽपि बृंहणो बलवर्द्धनः ॥ ९ ॥

इति लघुकूष्माण्डावलेहः ॥ ४४ ॥

पुराने मोटे दृढ़ कुम्हड़े के बीजाधार छिलके और नसुरों को निकाल ॥ १ ॥ ।ऽ२॥ साफ किये हुये कुम्हड़े को ॥ऽ५ जल में पकावे जब आधा जल रहे तब यत्न से ठंढाकर ॥ २ ॥ कुम्हड़े के टुकड़ों को गाढ़े वस्त्र से निचोड़ कर जल पाक के अर्थ अलाहिदा रख छोड़े ॥ ३ ॥ कुम्हड़े के टुकड़ों को घाम में सुखा ताम्रपात्र में ऽ२ घी डालके भूने ॥ ४ ॥ जब कुम्हड़ा सहत के रंग का सा हो जाय निचोड़े हुए जल को उसमें छोड़े और उसमें ।ऽ२॥ मिश्री डालके अवलेह की तरह पकावे ॥ ५ ॥ जब अच्छी तरह पक जाय पीपरि, सोंठि, सफेद जीरा ऽ। पाव २ और धनियाँ, पत्रज, इलायची, मिर्च, तज यह ऽ– एक २ छटांक लेकर ॥ ६ ॥ चूर्ण करे और ऽ१ सहत छोड़कर पाक सिद्ध करे और ऽ= या जैसा अग्नि बल हो खावै ॥ ७ ॥ यह खंडकूष्माण्ड रक्तपित्त, पित्तज्वर, दाह, प्रदर, कृशता, वमी ॥ ८ ॥ स्वरभेद, हृद्रोग, कास, श्वास, क्षयी,

और उरःक्षत इनको नाश करता और इसके सेवन से वृद्ध भी बली होता है और यह पाक अत्यंत बलवर्द्धक है ॥ ६ ॥

इति लघुकूष्माण्डावलेहः ॥ ४४ ॥

बृहत्कूष्माण्डावलेहः ॥ ४५ ॥

पुराणं पीनमानीय कूष्माण्डस्य फलं दृढम् ॥
तद्बीजाधारबीजत्वक्छिराशून्यं समाचरेत् ॥ १ ॥
ततोऽतिसूक्ष्मखण्डानि कृत्वा तस्य तुलां पचेत् ॥
गोदुग्धस्य तुलायुग्मे मन्दाग्नौ चालयेच्छनैः ॥ २ ॥
शर्करायास्तुलामर्द्धां गोघृतं प्रस्थमात्रकम् ॥
प्रस्थार्द्धं माक्षिकं चापि कुडवं नारिकेरतः ॥ ३ ॥
प्रियालफलमज्जानं द्विपलं त्रपुसीफलम् ॥
क्षिपेदेकत्र विपचेल्लेहवत्साधु साधयेत् ॥ ४ ॥
भिषक् पक्वं समालोक्य ज्वलनादवतारयेत् ॥
कोष्णे तत्र क्षिपेदेषां चूर्णं तत् प्रवदाम्यहम् ॥ ५ ॥
एकोऽक्षः शतपुष्पाया अथ क्षीरी यवानिका ॥
गोक्षुरः क्षुरकः पथ्या कपिकच्छुफलानि च ॥ ६ ॥
सप्तमी त्वक्च सर्वेषामेषामक्षयुगं पृथक् ॥
धान्याकपिप्पलीमुस्तमश्वगन्धा शतावरी ॥ ७ ॥



तालमूली नागबला बालकं पत्रकं शटी ॥
जातीफलं लवंगं च सूक्ष्मैला बृहदेलिका ॥ ८ ॥
शृंगाटकाः पर्पटकं सर्वं पलमितं पृथक् ॥
चन्दनं नागरं धात्रीफलं वापि कशेरुकम् ॥ ९ ॥
प्रत्येकं पञ्च कर्षाणि चत्वार्य्येतान निक्षिपेत् ॥
पलद्वयमुशीरस्य माषाणस्योषणस्य च ॥ १० ॥
कर्पूरवासिते पात्रे स्थापयेत्सर्वमौषधम् ॥
पश्चात्स्थाप्यः प्रयत्नेन भाजने मृन्मये स च ॥ ११ ॥
कूष्माण्डस्यावलेहोऽयं भक्षितः पलमात्रया ॥
यथावह्निबलं वाथ भुंक्ते रोगान् विनाशयेत् ॥ १२ ॥
रक्तपित्तं शीतपित्तमम्लपित्तमरोचकम् ॥
वह्निमान्द्यं तथा दाहं तृष्णां प्रदरमेव च ॥ १३ ॥
रक्ताशोंऽपि तथा छर्दिं पाण्डुरोगांश्च कामलाम् ॥
उपदंशं विसर्पं च जीर्णं च विषमज्वरम् ॥ १४ ॥
लेहोऽयं परमो वृष्यो बृंहणो बलवर्द्धनः ॥
क्लीबत्वनाशनश्चायं वाजीकरण उत्तमः ॥ १५ ॥

इति बृहत्कूष्माण्डावलेहः ॥ ४५ ॥

पुराने मोटे दृढ़ कुम्हड़े के बीजाधार बीजे छिलके और नसों को निकाल डाले ॥ १ ॥ ।52॥ साफ़ किये हुये कुम्हड़े के टुकड़ों को

॥ ऽ५ दूध में डालकर मंदाग्नि में धीरे २ चलाते हुये पकावे ॥२॥ ऽ६। शक्कर, ऽ२ गाई का घी, ऽ१ सहत और ऽ।। नारियर की गरी ॥३॥ चिरौंजी और मगज खीरा पाव २ भर एकत्र करके अवलेह की तरह साधन करे ॥ ४ ॥ जब पक जाय तब अग्नि से उतार किंचिदुष्ण में इन औषधियों का चूर्ण डारे ॥ ५ ॥ सौंफ २ तो०, वंशलोचन, जवाइनि, गुखुरू, तालमखाने के बीज, हड़ छोटी, केवाँच बीज ॥६॥ और तज इन सबको चार २ तोले ले; धनियां, पीपरि, नागरमोथा, असगन्ध, शतावरि ॥ ७ ॥ मुसली, गुरशकरी, सुगंधबाला, पत्रज, कचूर, जायफल, लवंग, छोटी इलायची, बड़ी इलायची ॥ ८ ॥ सिंघाड़ा, पित्तपापड़ा यह सब आध २ पाव; चन्दन, सोंठि, आँवला, कसेरू ॥ ९ ॥ यह चारों ऽ=॥ अढ़ाई २ छटांक; उशीर, मखाना, मिर्च ऽ। पावभर लेवे ॥१०॥ पहले कपूर-वासित पात्रमें सब औषधैं रक्खे पीछे यत्न से सिझये माटी के पात्र में स्थापन करे ॥११॥ यह कूष्माण्डावलेह ऽ= या अग्निबलानुसार खाने से ॥१२॥ रक्तपित्त, शीतपित्त, अम्लपित्त, अरुचि, अग्नि-मांद्य, दाह, तृष्णा, प्रदररोग ॥ १३ ॥ रक्तार्श, छर्दि, पाण्डुरोग, कामला, उपदंश, विसर्प, जीर्णज्वर, विषमज्वर आदि रोगों को नाश करता है ॥१४॥ यह अवलेह परमवृष्य, बृंहण, बलवर्द्धक, क्लीबदोषनाशक और महान् वाजीकर है ॥ १५ ॥

इति बृहत्कूष्माण्डावलेहः ॥ ४५ ॥

खण्डकूष्माण्डावलेहः ॥ ४६ ॥



कूष्माण्डकस्य स्वरसं पलानां शतमात्रकम् ॥

रसतुल्यं गवां क्षीरं धात्रीचूर्णं पलाष्टकम् ॥ १ ॥
मृद्वग्निना पचेत्तावद्यावद्भवति पिण्डवत् ॥
धात्रीतुल्या सिता योज्या पलार्द्धं लेहयेदनु ॥ २ ॥
खण्डकूष्माण्डकं ह्येतद्भुक्तमभ्यासतो हरेत् ॥
रक्तपित्तं ह्यम्लपित्तं दाहं तृष्णां च कामलाम् ॥ ३ ॥

इति खण्डकूष्माण्डावलेहः ॥ ४६ ॥

।5२॥ कुम्हड़ा का स्वरस और ।5२॥ गाई का दूध 5१ आँवला का चूर्ण ॥ १ ॥ इन सबको मिलाकर मृदु अग्नि में गाढ़ा होने तक पकावे और 5१ मिश्री मिलाकर 5- चाटा करे ॥ २ ॥ इस खण्ड-कूष्माण्ड के खाने से रक्तपित्त, अम्लपित्त, दाह, तृष्णा और कामला नाश हो जाता है ॥ ३ ॥

इति खण्डकूष्माण्डावलेहः ॥ ४६ ॥

खण्डखाद्यलौहम् ॥ ४७ ॥

शतावरी छिन्नरुहा वृषो मुण्डतिका बला ॥
तालमूली च गायत्री त्रिफलायास्त्वचस्तथा ॥ १ ॥
भार्गी पुष्करमूलं च पृथक् पंचपलानि च ॥
जलद्रोणे विपक्तव्यमष्टभागावशेषितम् ॥ २ ॥
दिव्यौषधिहतस्यापि माक्षिकेण हतस्य वा ॥
पलं द्वादशकन्देयं रुक्मलोहस्य चूर्णितम् ॥ ३ ॥
खण्डतुल्यं घृतं देयं पलं षोडशकं बुधैः ॥

पचेत्ताम्रमये पात्रे गुडपाको मतो यथा ॥ ४ ॥
प्रस्थार्द्धं मधुना देयं शुभाश्मजतुकं त्वचम् ॥
शृंगी कृष्णा विडंगं च शुण्ठी जातीफलं पलम् ॥ ५ ॥
त्रिफला धान्यकं पत्रं कणामरिचकेशरम् ॥
चूर्णं दत्त्वा सुमथितं स्निग्धभाण्डे निधापयेत् ॥ ६ ॥
यथाकालं प्रयुञ्जीत बिडालपदमात्रकम् ॥
गव्यक्षीरानुपानं च ततो भुञ्जीत सात्म्यतः ॥ ७ ॥
रक्तपित्तं क्षयं कासं पक्तिशूलं विशेषतः ॥
वातरक्तं प्रमेहं च शीतपित्तं वमिं क्रिमिम् ॥ ८ ॥
श्वयथुं पाण्डुरोगं च कुष्ठं प्लीहोदरं तथा ॥
आनाहं मूत्रसंस्रावमम्लपित्तं निहन्ति च ॥ ९ ॥
चक्षुष्यं बृंहणं वृष्यं मांगल्यं प्रीतिवर्द्धनम् ॥
आरोग्यं पुत्रदं श्रेष्ठं कामाग्निबलवर्द्धनम् ॥ १० ॥
श्रीकरं लाघवकरं खण्डखाद्यं प्रकीर्तितम् ॥
ककारपूर्वकं यच्च मांसं चानूपसम्भवम् ॥
वर्जनीयं प्रयत्नेन खण्डखाद्यं समश्नता ॥ ११ ॥
लोहान्तरवदत्रापि पुटनादिक्रियेष्यते ॥
न पुनर्माक्षिकेणैव शिलयैव हि मारणम् ॥ १२ ॥

इति खण्डखाद्यलौहम् ॥ ४७ ॥

शतावरि, गुर्च, रूसा की जड़, गुलमुण्डी, बरियारी, मुसली' खैरसार, त्रिफला (आँवला, हर्र, बहेरा) का बक्कल ॥ १ ॥ भारंगी, पोहकरमूल यह सब दश २ छटांक ऽ।।= लेकर ।।।ऽ२ जल में पकावे जब ऽ४ बाकी रहे ॥ २ ॥ तब छानकर उसमें ४८ तोला मैनशिल अथवा सोनामाखी से भस्म किया हुआ कांतीसार ॥३॥ ऽ१॥ खांड़ ऽ१॥ घी मिलाकर ताम्रपात्र में पकावे जब गुड़ पाक के समान होजाय ॥ ४ ॥ तब ऽ१ सहत, वंशलोचन, तज, काकरा-सिंगी, पीपरि, वायबिड़ंग, सोंठि, जायफल ॥५॥ त्रिफला, धनियां, पत्रज, पीपल, मिर्च, नागकेसर यह सब ऽ= आध २ पाव ले अच्छी तरह से मिलाकर चिकने सिझये पात्र में रख लेवे ॥ ६ ॥ यथाकाल दो तोला खाकर ऊपर से गाई का दूध पीवे तदनन्तर सात्म्य भोजन करै ॥ ७ ॥ तो यह रक्तपित्त, क्षयी, खांसी, पक्ति-शूल, वातरक्त, प्रमेह, शीतपित्त, वमन, कृमिरोग ॥ ८ ॥ शोथ, पाण्डुरोग, कुष्ठ. प्लीहोदर, अफारा, मूत्रस्राव, अम्लपित्त का नाश करता है ॥९॥ नेत्रों की ज्योतिवर्द्धक, बृंहण, वृष्य, मांगल्य, प्रीति वर्द्धन, आरोग्यप्रद, पुत्रप्रद, कामाग्नि और बलवर्द्धक है ॥१०॥ यह खण्डखाद्य लक्ष्मीकारक, हलका, फुरतीला कहा गया है। इसका सेवन करनेवाला ककारपूर्व पदार्थ, जलप्रदेश के (अनूप) मांस यत्न से वर्जित करै ॥ ११ ॥ मैनशिल और सोनामाखी की ही पुट देकर कांतीसार न सिद्ध करै बल्कि अन्य लौह की तरह इसमें भी पुटपाकादि क्रिया करना चाहिये ॥ १२ ॥

इति खण्डखाद्यलौहम् ॥ ४७ ॥



शतावरीपाकः ॥ ४८ ॥

शतावरीमूलकल्कं कल्कात्क्षीरं चतुर्गुणम् ॥
क्षीरतुल्यं घृतं गव्यं सितया कल्कतुल्यया ॥ १ ॥
घृतशेषं पचेत्तत्त पलार्द्धं लेहयेत्सदा ॥
रक्तपित्तं ह्यम्लपित्तं क्षयं श्वासं च नाशयेत् ॥ २ ॥
इति शतावरीपाकः ॥ ४८ ॥

शतावरि के मूल का कल्क और उसका चौगुना दूध, दूध के बराबरि गाई का घी और कल्क के तुल्य मिश्री छोड़कर पकावे॥१॥ जब घी निकलने लगे तब उतारकर ऽ॥ सदा चाटे तो रक्तपित्त अम्लपित्त, क्षयी और श्वास को नाश करै ॥ २ ॥

इति शतावरीपाकः ॥ ४८ ॥

नारिकेरखण्डः ॥ ४९ ॥

कुडवं नारिकेरस्य सूक्ष्मं दृषदि पेषितम् ॥
शुभ्रखण्डस्य कुडवं सर्वमेतच्चतुर्गुणम् ॥ १ ॥
आलोड्य नारिकेरस्य जलं मृद्वग्निना पचेत् ॥
नारिकेरजलालाभे गव्ये पयसि तत्पचेत् ॥ २ ॥
धान्याकं पिप्पलीमूलं चातुर्जातं विचूर्णितम् ॥
प्रत्येकं टङ्कमात्रन्तु शीते तस्मिन्विनिःक्षिपेत् ॥३॥

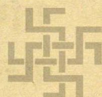
पलमात्रस्तदर्द्धोऽपि भक्षितः प्रत्यहं नरैः ॥
नारिकेरस्य खण्डोयं पुंस्त्वनिद्राबलप्रदः ॥ ४ ॥
अम्लपित्तं रक्तपित्तं शूलं च परिणामजम् ॥
क्षयं क्षपयति क्षिप्रं शुष्कं दावानलो यथा ॥ ५ ॥

पलमात्रगव्यघृतेन नारिकेरस्य भर्जनं कर्तव्यमिति संप्रदायः ॥

इति नारिकेरखण्डः ॥ ४९ ॥

ऽ॥ ताजे नारियल की गरी को अतिसूक्ष्म बांट ले और (ऽ= गाई के घी में भूनकर अलग रखलेवे) यह साम्प्रदायिक प्रक्रिया है। ऽ॥ सफेद शक्कर ऽ२ नारियर के जल में घोलकर ॥ १ ॥ मन्दाग्नि में पकावे फिर पूर्वोक्त भुनी नारियर की गरी मिलावे (यदि नारियर का जल न मिले तो गाई के दूध में चासनी करे) ॥२॥ और उसमें धनियां, पिपलामूल, तज, पत्रज, इलायची, नागकेसर प्रत्येक आधा २ तोला चूर्णकर मिलावे ॥ ३ ॥ प्रतिदिन एक ऽ या २) तोला खाने से यह नारिकेरखण्ड पुरुषार्थ, निद्रा और बल को बढ़ाता है ॥ ४ ॥ अम्लपित्त, रक्तपित्त, परिणामशूल और क्षयी इनको अतिशीघ्र नाश करता है जैसे सूखे पदार्थों को अग्नि नाश करता है ॥ ५ ॥

इति नारिकेरखण्डः ॥ ४९ ॥



बृहन्नारिकेरखण्डः ॥ ५० ॥

प्रस्थन्तु नारिकेरस्य सूक्ष्मं दृषदि पेषितम् ॥
निष्कुलीकृत्य कूष्माण्डखण्डानामर्द्धमाढकम् ॥१॥
तद्द्वयं भर्ज्जयेद्द्रव्ये घृते तु कुडवोन्मिते ॥
ततस्तत्र क्षिपेच्छुद्धं गोदुग्धं चाढकोन्मितम् ॥२॥
तत्रैव निक्षिपेद्द्रव्ये सितां प्रस्थद्वयोन्मिताम् ॥
पचेत्सर्वाणि चैकत्र मृदुना वह्निना भिषक् ॥ ३ ॥
सुपक्के शीतले तत्र चूर्णीकृत्य विनिःक्षिपेत् ॥
सूक्ष्मैलां धान्यकं धात्रीं पर्पटं जलदं जलम् ॥ ४ ॥
उशीरं चन्दनं द्राक्षां शृङ्गाटञ्च कशेरुकम् ॥
त्वक्पत्रं च सकर्पूरं कर्षयुग्मं पृथक् पृथक् ॥ ५ ॥
सर्वं संमिश्रयेद्दक्षेद्भाजने मृण्मये नवे ॥
पलमात्रमिदं प्रातर्भक्षयेद्वा यथानलम् ॥ ६ ॥
एतन्निषेवितं हन्ति रोगान्नेतान्न संशयः ॥
अम्लपित्तं ज्वरं पित्तं रक्तपित्तमरोचकम् ॥ ७ ॥
वातरक्तं तृषां दाहं पाण्डुरोगं च कामलाम् ॥
क्षयं क्षपयति क्षिप्रं शूलं च परिणामजम् ॥ ८ ॥
नारिकेरस्य खण्डोयमश्विभ्यां भाषितः पुरा ॥

वर्णदो बृंहणो वृष्यः पुंस्त्वनिद्राबलप्रदः ॥ ९ ॥

इति बृहन्नारिकेरखण्डः ॥ ५० ॥

ऽ२ ताजे नारियर की गरी को शिलापर अतिसूक्ष्म बाँट लेवे और ऽ४ साफकर छिला हुआ कुम्हड़ा ॥ १ ॥ इन दोनों को ऽ॥ गाई के घी में भूने और उसी में ऽ८ शुद्ध गोदुग्ध डाले ॥ २ ॥ पुनः ऽ४ मिश्री मिलाकर सबको मन्दाग्नि में पकावे ॥ ३ ॥ सुपक्क शीतल करके उसमें इन ओषधियों का चूर्ण गुजराती इलायची, धनियां, आँवला, पित्तपापरा, नागरमोथा, सुगन्धबाला ॥ ४ ॥ खसखस, चन्दनश्वेत, दाख, सिघारा, कशेरू, तज, पत्रज, भीमसेनी कपूर प्रत्येक चार २ तोला ले ॥ ५ ॥ सबको मिलाकर नवीन मट्टी के इमर्तबान में रखकर प्रातःकाल एकपल अग्निबल के अनुकूल खावे ॥ ६ ॥ यह सेवन करने से अम्लपित्त, ज्वर, पित्त, रक्तपित्त, अरोचकता ॥ ७ ॥ वातरक्त, तृषा, दाह, पाण्डुरोग, काँवर, क्षयी, परिणामशूल इतने रोगों को नाश करता है ॥८॥ अश्विनीकुमारों का कहा हुआ यह नारिकेरखण्ड वर्णकारक, बृंहण, वृष्य, पुरुषार्थ, निद्रा और बल का देनेवाला है ॥ ९ ॥

इति बृहन्नारिकेरखण्डः ॥ ५० ॥

बृहन्मधुपक्कहरीतकी ॥ ५१ ॥

दशमूलकषायाह्विकपिकच्छुविभीतकम् ॥

कट्फलं मारिचं चैव पिप्पलीमूलसंयुतम् ॥ १ ॥

रक्तरोहितकं दन्ती द्राक्षा जाती निशाद्वयम् ॥
धात्री जन्तुघ्नशिखरी शृङ्गी दारुपुनर्नवा ॥ २ ॥
धान्यकं देवकुसुमं राजवृक्षस्त्रिकंटकम् ॥
वृद्धदारुः कुबेराक्षौ मूलं वीरणिकाभवम् ॥ ३ ॥
एतेषां पलयुग्मन्तु भेषजां च पृथक् पृथक् ॥
आढकं चैव पथ्यानां जलद्रोणे पचेद्भिषक ॥ ४ ॥
सुस्विन्ना च यदा पथ्या मधुमध्ये विनिःक्षिपेत् ॥
गुरूपदेशाद्विधिवत्त्रिदिनं च ततः परम् ॥ ५ ॥
पुनः क्षिपेत्पंचदिनं तथा च दशवासरम् ॥
नीरसासाभया पश्चाद् घृतभाण्डे निधापयेत्॥६॥
विमले सुदृढे क्षौद्रे परिपूर्णे च यत्नतः ॥
चातुर्जातकणानान्तु चूर्णमष्टपलोन्मितम् ॥ ७ ॥
पश्चात्पूर्वोक्तभाण्डे तु क्षिपेद्बुद्धिपरायणः ॥
धन्वन्तरिकृतो योगो लोकानां हितकाम्यया ॥८॥
भक्षयेद्यो नरो नित्यं रोगा नश्यन्ति सर्वशः ॥
श्वासं कासं क्षयं चैव छर्दिमूर्च्छामदभ्रमम् ॥ ९ ॥
मुखरोगं तथा तृष्णामरुचिं वह्निमांद्यताम् ॥
यकृत्प्लीहोदराणां च वृद्धिं च विषमज्वरम् ॥ १० ॥
मूत्रकृच्छ्रं प्रमेहं च वातरक्तं सुदारुणम् ॥

रुजं च वातसम्भूतं तथा बद्धगुदोद्भवम् ॥ ११ ॥
रक्तपित्तं श्लेष्मपित्तं सिध्मदद्रुविचर्चिकाः ॥
कुष्ठमर्शस्त्वपस्मारं पाण्डुरोगं सकामलम् ॥ १२ ॥
मधुपक्वेति विख्याता लोकानां हितकाम्यया ॥
सेवते यो नरो नित्यं पूर्वोक्तान्नैव पश्यति ॥ १३ ॥

इति बृहन्मधुपक्वहरीतकी ॥ ५१ ॥

सरवन, पिथवन, छोटी भटकटैया, बनभाँटा की जड़, गोखुरू, बेलगिरी, अरनी की छाल, सोनापाठा, पाढ़रि, पीपरि, चीत, कौंचबीज, बहेरा, कैफरा, मिर्च, पिपलामूल ॥ १ ॥ लाल रोहेड़ा, जमालगोटा की जड़, दाख, चमेली के फूल, हल्दी, दारुहल्दी, आँवला, बायबिड़ंग, लटजीरा मूल, ककरासिंगी, देवदारु, गदापुरैना ॥ २ ॥ धनियां, लवंग, अमलतास का गूदा, गोखुरू, विधारा, इन्द्रयव, बहेड़ा का बक्कल, खसखस ॥ ३ ॥ यह प्रत्येक ऽ। पावभर, ऽ८ छोटी हड़ैं इनको ॥ऽ२ जल में पकावै ॥ ४ ॥ जब हड़ैं अच्छी तरह पक जावें सहत में छोड़दे। गुरूपदेश के अनुसार तीन दिन उसी में रहने दे ॥ ५ ॥ फिर नवीन सहत में पाँच दिन पुनः दशदिन रक्खे बाद केवल हड़ों को घृत के पात्र में रख देवे ॥ ६ ॥ निर्मल दृढ़पात्र में सहत डालकर उसमें यत्न से तज, पत्रज, इलायची, नागकेसर, पीपरि इनका चूर्ण ऽ१ बुद्धिमान् वैद्य पूर्वोक्त पात्र में एकत्र मिलादे लोकहित कामना से यह योग धन्वन्तरिजी ने रचा है ॥ ७ । ८ ॥ प्रतिदिन खाने से सर्वरोग नाश हो जायँ

अर्थात् श्वास, कास, क्षयी, छर्दि, मूर्च्छा, मद, भ्रम ॥ ९ ॥ मुखरोग, तृष्णा, अरुचि, अग्निमन्दता, यकृद्वृद्धि, प्लीहवृद्धि, उदरवृद्धि, विषमज्वर ॥ १० ॥ मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, दारुण वातरक्त, वात व्याधि, बद्धगुदोदर ॥ ११ ॥ रक्तपित्त, श्लेष्मपित्त, सिध्म, दाद, विचर्चिका, कोढ़, बवासीर, मृगी, पांडुरोग, क्यावर ॥ १२ ॥ लोक के हित की कामनासे रची हुई इन मधुपक्कहरीतकी को जो सेवन करता है वह पूर्वोक्त व्याधियों को फिर नहीं देखता है अर्थात् समूल रोग नष्ट होजाते हैं ॥ १३ ॥

इति बृहन्मधुपक्कहरीतकी ॥ ५१ ॥

दशमूलहरीतकी ॥ ५२ ॥

दशमूलकषायस्याष्टांशे पथ्याशतं पचेत् ॥
तुलागुडाद्घने दद्याद्व्योषं क्षारं चतुःपलम् ॥ १ ॥
त्रिजातकं सुवर्णांशं प्रस्थार्द्धमधुनो हिमे ॥
दशमूलहरीतक्यः शोफान् घ्नन्ति सुदुस्तरान् ॥ २ ॥

इति दशमूलहरीतकी ॥ ५२ ॥

अष्टांश दशमूल के काढ़े में १०० छोटी हड़ें पकावे ।5२॥ गुड़ डाल गाढ़ाकर उसमें सोंठि, मिर्च, पीपल, सज्जीक्षार 5॥ आध २ सेर ॥ १ ॥ तज, पत्रज, इलायची दो २ तोला ले और 5१ सहत पाक शीत होने पर डालै । यह दशमूल हरीतकी सुदुस्तर शोथ को नाश करती है ॥ २ ॥

इति दशमूलहरीतकी ॥ ५२ ॥

मेथिकामोदकः ॥ ५३ ॥

त्रिकटु त्रिफला मुस्तजीरकद्वयधान्यकम् ॥
कट्फलं पौष्करं शृङ्गी यवानी सैंधवं विडम् ॥ १ ॥
तालीसं केसरं पत्रं त्वगेला च फलं तथा ॥
जातीकोशं लवंगं च मुरा कर्पूरचन्दनम् ॥ २ ॥
यावन्त्येतानि चूर्णानि तावत्येव तु मेथिका ॥
संचूर्ण्य गुटिकाः कार्य्याः पुरातनगुडेन तु ॥ ३ ॥
घृतेन मधुना किंचित् खादेदग्निबलं प्रति ॥
अग्निं च कुरुते दीप्तं मेदः श्वासे महौषधम् ॥ ४ ॥
बलवर्णप्रदो ह्येष स्वरसंधानकारकः ॥
मेहान्विंशतिकांश्चैव मूत्राघातं तथाश्मरीम् ॥ ५ ॥
पाण्डुरोगं तथार्शांसि यक्ष्माणं हन्ति कामलाम् ॥
स्तनौ च पतितौ गाढौ स्यातां तालफलोपमौ ॥ ६ ॥
दृष्टिप्रसादनं चैव नारीणामुदयप्रदः ॥
प्रोक्तो गहननाथेन मेथिकामोदकः शुभः ॥ ७ ॥

इति मेथिकामोदकः ॥ ५३ ॥

सोंठि, पीपरि, मिर्च, आँवला, हड़, बहेड़ा, नागरमोथा, स्याहजीरा, सफेदजीरा, धनियां, कैफरा, पोहकरमूल, ककरासिंगी, अजवाइन, सेंधानोन, बिड़नमक ॥१॥ तालीस, नागकेसर, पत्रज,

तज, गुजरातीइलायची, जायफल, जावित्री, लवंग, मुरहरी, शुद्ध कपूर, सफेद चन्दन ॥ २ ॥ इन सब चूर्णों की बराबर मेथी का चूर्ण मिलाकर पुराने गुड़ से गोली बांधकर ॥ ३ ॥ अग्नि बल अनुसार घी और सहत के साथ खावे तो अग्नि दीप्त हो और मेदा व श्वास रोग नाश हो ॥ ४ ॥ बलवर्णकारी, स्वर सन्धानकारक है, बीस प्रमेह, मूत्राघात, पथरी ॥ ५ ॥ पाण्डुरोग, बवासीरों, क्षयी और कांवरों को नाश कर गिरे हुये स्त्रियों के स्तनों को कठिन और ताड़फल के सदृश कर देता है ॥ ६ ॥ इस दृष्टिप्रसादक स्त्रियों का उदयकारी मेथिका-मोदक को गहननाथ ने कहा है ॥ ७ ॥

इति मेथिकामोदकः ॥ ५३ ॥

पञ्चजीरकपाकः ॥ ५४ ॥

जीरकं हबुषा धान्यं शताह्वा बदराणि च ॥
यवानी राजिका हिंगुपत्रिका कासमर्दकम् ॥ १ ॥
पिप्पली पिप्पलीमूलमजमोदातिलाम्बिका ॥
चित्रकं च पलांशानि तथा धान्यं चतुःपलम् ॥ २ ॥
कशेरुं तगरं कुष्ठं तथा दीप्यकमेव च ॥
गुडस्य च शतं दद्याद् घृतं प्रस्थं तथैव च ॥ ३ ॥
क्षीरप्रस्थसमायुक्तं शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥
पञ्चजीरक इत्येष सूतिकानां प्रशस्यते ॥ ४ ॥



गर्भार्थिनीनां नारीणां गर्भदो वातनाशकः ॥
विंशतिर्व्यापदो योनेः कासं श्वासं क्षयं तथा ॥ ५ ॥
हलीमकं पाण्डुरोगं दौर्गंध्यं मूत्रकृच्छ्रताम् ॥
हन्ति पीनोन्नतकुचाः पद्मपत्रायतेक्षणाः ॥
उपयोगात्स्त्रियो नित्यमलक्ष्मीमलवर्जिताः ॥ ६ ॥

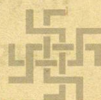
इति पञ्चजीरकपाकः ॥ ५४ ॥

जीरा, हाऊबेर, धनियां, सौंफ, बेरफल, जवाइनि, राई, हिंगुपत्री, कसौंदी ॥ १ ॥ पीपरि, पिपलामूल, अजमोद, कबीला, चीत यह प्रत्येक ऽ= आध २ पाव धनियां ॥ २ ॥ कसेरू, तगर, कूट, खुरासानी जवाइनि यह प्रत्येक ऽ॥ आध २ सेर गुड़ ।ऽ२॥. घी ऽ२ सेर ॥ ३ ॥ ऽ२ दूध इन सबको मिलाकर शनैः २ मन्दाग्नि में पकावे । यह पंचजीरकपाक सूतिकावाली स्त्रियों के लिये हितकारी है ॥ ४ ॥ गर्भार्थिनी स्त्रियों को गर्भ देनेवाला और वातनाशक है । योनि की बीस व्याधियाँ, कास, श्वास, क्षयी ॥ ५ ॥ हलीमक, पाण्डुरोग, गात्रदौर्गन्ध्य और मूत्रकृच्छ्र इनको नाश करता है । इसके उपयोग से स्त्रियां पीनोन्नत कुचवाली, कमलनयनी, अलक्ष्मी और मल से वर्जित होजाती हैं ॥ ६ ॥

इति पञ्चजीरक पाकः ॥ ५४ ॥

हरिद्राखण्डः ॥ ५५ ॥

हरिद्रायाः पलान्यष्टौ षट्पलं हविषस्तथा ॥



खण्डं द्विप्रस्थसंयुक्तं क्षीरस्यार्द्धतुलां तथा ॥ १ ॥
व्योषत्रिजातकं चैव त्रिवृन्मुस्तं तथैव च ॥
जीरकं च विडंगं च देवदारु सयष्टिकम् ॥ २ ॥
एतानि समभागानि चूर्णयित्वा पलानि च ॥
प्रक्षिप्य विपचेत्तावद्यावद्दार्वीप्रलेपनम् ॥ ३ ॥
तद्यथाग्निबलं खादेत्कुष्ठरोगं व्यपोहति ॥
कण्डूविस्फोटदद्रूणां नाशनं परमौषधम् ॥ ४ ॥
अर्शांसि षट्प्रकाराणि रक्तपित्तं सुदारुणम् ॥
अम्लपित्तं निहन्त्याशु पाण्डुरोगं हलीमकम् ॥ ५ ॥
अश्विभ्यां निर्मितं श्रेष्ठं हरिद्राखण्डमुत्तमम् ॥ ६ ॥

इति हरिद्राखण्डः ॥ ५५ ॥

ऽ१ हलदी ऽ॥ घी ऽ४ खांड ऽ६। दूध ॥ १ ॥ सोंठि, मिर्च, पीपल, तज, पत्रज, इलायची, निशोथ, नागरमोथा, जीरा स्याह, बायबिड़ंग, देवदारु, मुरेठी ॥ २ ॥ यह सब ऽ= आध २ पाव चूर्ण कर एक में मिलाकर कर्छी में लेप होनेतक पकावै ॥ ३ ॥ अग्नि-बलानुसार खावे तो कुष्ठरोग, कण्डू, विस्फोटक, दाद ॥ ४ ॥ छः प्रकार के बवासीर, दारुण रक्तपित्त, अम्लपित्त, पाण्डुरोग, हलीमक नाश हों ॥ ५ ॥ यह हरिद्राखण्ड अश्विनीकुमारों का बनाया हुआ अतिश्रेष्ठ है ॥ ६ ॥

इति हरिद्राखण्डः ॥ ५५ ॥



आध पाव पाकसिद्ध होनेपर छोड़ ठंढा करके ऽ२ सेर सहत डाल गोली बना शुभपात्र में रक्खे ॥ ५ ॥ ऽ॑ भोजन करने से पहिले खावें तो यह अत्युग्र अरोचकता, श्वास, कास क्षयी, व्रण ॥ ६ ॥ पीनस, जुखाम, पिलही, यकृत्, अम्लपित्त, रक्तपित्त, तालुनाश, स्वररोग ॥७॥ सब प्रकार के बवासीर, पांडुरोग, कामला, हृद्रोग, शिरःशूल, दारुण अफारा ॥ ८ ॥ पाण्डुता, शीतपित्त इनको अतिशीघ्र नाश करता है यह दवा सेवन करने से वृद्ध भी तरुण ॥ ९ ॥ धीर, सब गुणों से युक्त, सौवर्ष जीनेवाला और नीरोग होजाता है । मृतगर्भा स्त्री और जिसके गर्भपात होजाते हैं ॥ १० ॥ नारायण-परायण पुत्र उत्पन्न करती है, बांझ भी पुत्र पाती है, वृद्धा स्त्री भी तरुणी होजाती है ॥ ११ ॥ तुरंग के समान प्रहृष्ट, मत्त हाथी के समान पराक्रमी, कन्दर्पदर्प से युक्त, राग वेग से आकुल पुरुष ॥ १२ ॥ सौ वा हजार स्त्रियों को सुखी कर सक्ता है । सदा सेवन करने वाला पुरुष मारुत के समान बली होजाता है ॥१३ ॥ इस खण्डाम्र को ब्रह्माजी ने भार्गव च्यवन के लिये कहा था । यह वृष्य, मेधाजनक आयुवर्धक, पापनाशक है ॥ १४ ॥ ग्रह, यक्ष, पिशाच, अपस्मार का नाशक, बल्य और रसायन श्रेष्ठ यह खण्डाम्रनामक पाक है ॥ १५ ॥

इति खण्डाम्रपाकः ॥ ५६ ॥

लघुकामेश्वरो मोदकः ॥ ५७ ॥



त्रिकटु त्रिफला जातीफलं पत्री लवंगकम् ॥

त्वगेलाभ्रसमं सर्वं चूर्णार्द्धां विजयां क्षिपेत् ॥ १ ॥
सर्वेभ्यो द्विगुणां श्वेतां मिश्रयेन्मधुनाज्यतः ॥
कर्षकर्षप्रमाणास्तु गुटिकाः कारयेत्सुधीः ॥ २ ॥
प्रातःखादेद्वातिध्वस्त्यै निशायां कामवृद्धये ॥
दुग्धताम्बूलभाक् पश्चाद्वीर्यस्तम्भः प्रजायते ॥ ३ ॥
श्वासे कासे क्षये मेहे पूजिता च रसायनी ॥
लघुकामेश्वरस्येयं गुटी गोरखनिर्मिता ॥ ४ ॥

इति लघुकामेश्वरो मोदकः ॥ ५७ ॥

सोंठि, पीपरि, मिर्च, आंवला, हड़, बहेरा, जायफल, जावित्री, लवंग, तज, इलायची, नागरमोथा यह सब बराबर लेकर चूर्ण की आधी भांग ॥ १ ॥ सबकी दूनी मिश्री, सहत और घी मिलाकर दो २ तोला की गोली बना ले ॥ २ ॥ प्रातःकाल खाने से वातव्याधिनाशक और सायंकाल खाने से काम की वृद्धिकारक है । गोली खाके पीछे दूध पीवे और ताम्बूल खावे तो वीर्य्यस्तम्भ हो ॥ ३ ॥ श्वास, कास, क्षयी और प्रमेह में गुणकारी और रसायनी है । यह लघु कामेश्वरमोदकगुटी गोरख की बनाई हुई है ॥ ४ ॥

इति लघुकामेश्वरो मोदकः ॥ ५७ ॥

गुडूचीमोदकः ॥ ५८ ॥



आर्द्रां गुडूचीमादाय खण्डयित्वा सुपेषयेत् ॥

शिलायां जलयोगेन सुसूक्ष्मं कल्कवद्दृढम् ॥ १ ॥
सुवस्त्रे जलयोगेन स्रावयेत्तच्छनैः शनैः ॥
विमलीकृत्य तत्तोयमच्छमच्छं जलं नयेत् ॥ २ ॥
अधःस्थं तु घनीभूतं छायाशुष्कं विधाय च ॥
शुभ्रं शंखनिभं चूर्णं गुडूच्याः सत्त्वमुच्यते ॥ ३ ॥
उशीरं बालकं पत्रं कुष्ठं धात्री च मौसली ॥
एला हरेणुकं द्राक्षा कुंकुमं नागकेशरम् ॥ ४ ॥
पद्मकन्दं च कर्पूरं चन्दनद्वयमिश्रितम् ॥
व्योषं च मधुना लाजं वाजिगन्धा शतावरी ॥ ५ ॥
गोक्षुरं कर्कटीबीजं जातीकंकोलचोरकम् ॥
रसाभ्रवंगलोहैश्च संमिश्रं कारयेद् बुधः ॥ ६ ॥
एतानि समभागानि द्विगुणाऽमृतशर्करा ॥
मत्स्यराड्याज्यमधूपेतं भक्षयेत्प्रातरुत्थितः ॥ ७ ॥
क्षयं च रक्तपित्तं च पाददाहमसृग्दरम् ॥
मूत्राघातं मूत्रकृच्छ्रं वातकुण्डलिकां तथा ॥ ८ ॥
प्रमेहान्दारुणान्सोमरोगं चैव तथाविधम् ॥
जीर्णज्वरादिकांश्चैव निहन्यान्मोदकः सदा ॥ ९ ॥
बल्यो वृष्यतरो मेध्यो जराव्याधिविनाशकः ॥
देवानाममृतं यद्वन्मनुष्याणां तथैव च ॥ १० ॥

गुडूचीसत्त्वपिण्डोऽयं सततप्यादिनिषेवितः ॥
संवत्सरप्रयोगोऽस्य ह्युत्तमः परिकीर्त्तितः ॥ ११ ॥
षाण्मासिके मध्यमस्तु शेषे हीनफलः स्मृतः ॥
पथ्यं गोधूमशाल्यन्नमुद्गाढकिमसूरिकाः ॥ १२ ॥
शाकं त्वग्दोषलं स्वल्पं चाराम्लादित्यजेद्बहु ॥
दुग्धं सशर्करं सेव्यं स्वादुस्वल्पं तु गोदधि ॥ १३ ॥

इति गुडूचीमोदकः ॥ ५८ ॥

ओदी गुर्च का छिलका उतार सूक्ष्म टुकड़े कर जल डाल २ कर सिलपर अच्छीतरह बांट लेवे ॥ १ ॥ नवीन खपरी में वस्त्र रख पानी डाल २ कर अच्छी तरह छानले, ढांप कर रखदे और जब पानी ऊपर निर्मल होजाय और सत नीचे बैठ जाय तब पानी धीरे २ निकाल देवे ॥ २ ॥ जो नीचे गाढ़ा रहे उसको छाया में सुखा लेवे यह शंख के समान सफेद गुर्च का सत कहलाता है ॥ ३ ॥ खसखस, सुगन्धबाला, पत्रज, कूटमीठा, आंवला, सफेद दिल्लीवाली मुसली, छोटी इलायची, रेणुका, दाख, केशर, नागकेशर ॥ ४ ॥ कमल की जड़, कपूर, सफेदचन्दन, लालचन्दन, सोंठि, मिर्च, पीपल, सहत, लाई, असगन्ध, शतावरि ॥ ५ ॥ गुखुरू, मगजककड़ी, जावित्री, कंकोल, चोरपुष्पी, रससिन्दूर, अभ्रक, वंग, कांतीसार सब समभाग लेकर मिलाले ॥ ६ ॥ सबकी दूनी गुर्च का सत मिला कर मिश्री, घी और सहत मिलाकर प्रातःकाल रोज खावे तो ॥ ७ ॥ क्षयी, रक्तपित्त, पाददाह, रक्तप्रदर, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, वातकुण्ड-

लिका ॥८॥ दारुणप्रमेह, सोमरोग, जीर्णज्वरादिक व्याधियों को यह मोदक सदा नाश करता है ॥९॥ बली अत्यन्त वृष्य मेधाजनक जरा-व्याधि विनाशक है। देवताओं के लिये जैसे अमृत है वैसे ही मनुष्यों के लिये यह मोदक है॥ १०॥ इस गुडूचीसत्त्व मोदक को सप्तऋषि आदिकों ने खाया है इसका एक वर्ष सेवन करना उत्तम है ॥११॥ छः मास मध्यम और शेष हीनफलदायी है पथ्य गेहूं, शालीके चावल, मूंग, अरहर और मसूर है ॥ १२ ॥शाकादि दोषल हैं और खटाई खारी चीजें हानिकारक हैं। मिश्री मिलाकर दुग्ध सदैव सेवनकरै इच्छा हो तो गाई का दही मीठा स्वल्प खावे ॥ १३ ॥

इति गुडूचीमोदकः ॥ ५८ ॥

बृहन्मुसलीकन्दपाकः ॥ ५९ ॥

मुसलीकन्दचूर्णन्तु क्षीरेऽष्टगुणिते पचेत् ॥
प्रस्थं च तत्र दातव्यं चूर्णमेषां पृथक्पलम् ॥ १ ॥
व्योषं त्रिजातं हबुषा शताह्वा शतमूलिका ॥
अजाजी दीप्यकश्चैव चित्रको गजपिप्पली ॥ २ ॥
यवानी ग्रन्थिकं धात्री शटी गोक्षुरधान्यकम् ॥
अश्वगन्धाभया मेघासिंधुशोषो लवङ्गकम् ॥ ३ ॥
जातीफलं जातिपत्री नागकेसरकेक्षुरौ ॥
बला चातिबला नागबला मर्कटबीजकम् ॥ ४ ॥

यष्टी शाल्मलिनिर्यासः शृंगाटाम्बुजबीजकम् ॥
त्वक्क्षीरिका बालकश्च कंकोलं कल्लकं हिमम् ॥ ५ ॥
लुञ्चितानां तिलानां तु प्रस्थार्द्धमिह योजयेत् ॥
भस्मसूतपलार्द्धं तु पलमभ्रकलोहयोः ॥ ६ ॥
सर्वाद्विगुणखण्डस्य पाकं कृत्वा प्रयोजयेत् ॥
भैषज्यानां गणं सर्वं वटीः कुर्य्याद्विचक्षणः ॥ ७ ॥
अर्द्धमुष्टिमितास्तास्तु शुभेहनि विचक्षणः ॥
इष्टदेवं समभ्यर्च्य खादेदेकामहर्मुखे ॥ ८ ॥
ततः किञ्चित्पयः पेयं खादेद्वटकमुत्तमम् ॥
मन्दाग्निगुल्ममेहार्शः श्वासकासव्रणक्षयान् ॥ ९ ॥
कामलां पाण्डुरोगं च शुक्रक्षैण्यं च हृक्क्षयम् ॥
वातरोगं पित्तरोगं कफरोगं तथैव च ॥ १० ॥
षाण्ढ्यं च प्रदरं स्त्रीणां शुक्रदोषमुरः क्षतम् ॥
रजोदोषं मूत्रकृच्छ्रं मूत्राघातं तथाश्मरीम् ॥ ११ ॥
मेहदोषं तथानाहं कृशिमाबल्यमुल्बणम् ॥
वातरक्तं च हन्त्येष मुसलीकन्दलेहकः ॥ १२ ॥
अग्निकृत्कान्तिकृत्तेजोवृद्धिकृत्कामवृद्धिकृत ॥
अश्विभ्यां निर्मितो योगो बलीपलितनाशनः ॥ १३ ॥
क्षीणशुक्रान्नरान्दृष्ट्वा नारीश्च क्षीणवीर्य्यकाः ॥

तालमूल्याः प्रपाकोयं निर्मितो धरणीतले ॥ १४ ॥
नास्त्यनेन समो योगो विशेषाच्छुक्रवृद्धये ॥ १५ ॥
इति बृहन्मुसलीकन्दपाकः ॥ ५६ ॥

ऽ२ सफेद दिल्लीवाली मुसली के चूर्ण को ।ऽ६ गाई के दूध में पकावै और नीचे की ओषधियों का ऽ= आध२पाव चूर्ण डालै ॥ १ ॥ सोंठि, मिर्च, पीपल, तज, पत्रज, छोटी इलायची, हाऊबेर, सौंफ, शतावरि, स्याहजीरा, सफेदजीरा, चीत, गजपीपरि ॥ २ ॥ जवाइन, पिपलामूल, आँवला, कचूर, गुखुरू, धनियां, असगन्ध, हड़, नागरमोथा, समुद्रशोष, लवंग ॥ ३ ॥ जायफल, जावित्री, नागकेशर, तालमखाने के बीज, बरियारी, ककई, गुड़शकरी, केवाँचवीज ॥ ४ ॥ मुरेठी, मोचरस, सिघाड़े, कमलगट्टा, खिरनी की छाल, सुगन्धबाला, कंकोल, अकरकरा, कपूर ॥ ५ ॥ ऽ१ धोये हुये तिल, पारा की भस्म, अभ्रक और कांतीसार चार २ तोले ॥ ६ ॥ खांड़ ॥ऽ४ मिलाकर पाक सिद्ध कर गोली बनावे॥ ७ ॥ शुभदिन इष्टदेव का पूजनकर प्रातःकाल खावे ॥ ८ ॥ ऊपर से कुछ दूध पीवै, बरे खावे तो मंदाग्नि, गुल्म, प्रमेह, अर्श, श्वास, कास, व्रण, क्षयी ॥ ९ ॥ क्ष्यांवर, पांडुरोग, शुक्रक्षैण्य, दृष्टिनाश, वातरोग, पित्तरोग, कफरोग ॥ १० ॥ नपुंसकता, प्रदर-रोग, स्त्रियों के शुक्रदोष, उरःक्षत, रजोदोष, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, अश्मरी ॥ ११ ॥ प्रमेह, अफारा, कृशता, निर्बलता, वातरक्त इन रोगों को यह मुसलीकन्द नाश करता है ॥ १२ ॥ यह अग्निकारी,

कान्तिकारी,तेजोवर्द्धक,कामवर्द्धक और बलीपलितनाशक है ॥ १३ ॥ क्षीणवीर्य्य नरों तथा क्षीणवीर्य्या स्त्रियों को देखकर इस मुसली-कन्दपाक को पृथ्वीतल में अश्विनीकुमारों ने बनाया है ॥ १४ ॥ इस के सदृश और योग शुक्रवृद्धि के लिये नहीं है ॥ १५ ॥

इति बृहन्मुसलीकन्दपाकः ॥ ५९ ॥

खारिकपाकः ॥ ६० ॥

खारिकद्वयसेटं च गोदुग्धं चतुराढकम् ॥
कुडवं गोघृतं चैव शर्करा समभागिका ॥ १ ॥
जीरके द्वे विडंगानि चातुर्जातं सकेशरम् ॥
सूतं वंगं मृतं ताम्रं कर्पूरं कनकाभ्रकम् ॥ २ ॥
पलमानं प्रदातव्यमुशीरं लोहसारकम् ॥
सत्त्वं गुडूच्याः शैलेयं सूक्ष्मचूर्णानि मिश्रयेत् ॥ ३ ॥
वातरक्ते रक्तपित्ते ह्यन्तर्दाहे विशेषतः ॥
धातुक्षये च मन्दाग्नौ सर्वव्याधौ विशिष्यते ॥ ४ ॥

इति खारिकपाकः ॥ ६० ॥

ऽ२ छुहारा, ।।।ऽ२ गोदुग्ध, ऽ।। गोघृत, ।ऽ शक्कर ॥ १ ॥ सफेद जीरा, स्याहजीरा, बायबिडंग, तज, पत्रज, छोटी इलायची, नागकेशर, केशर, रससिंदूर, वंग, ताम्रेश्वर, कपूर, स्वर्णभस्म, अभ्रक ॥ २ ॥ खस, कांतीसार, गुर्च का सत, शिलाजीत यह प्रत्येक आठ २ तोले लेकर सूक्ष्म चूर्णकर मिलावे ॥ ३ ॥ वातरक्त, रक्त-

पित्त, विशेषकर अन्तर्दाह, धातुक्षय, मंदाग्नि और सब कठिन व्याधियों में यह उत्तम है ॥ ४॥

इति खारिकपाकः ॥ ६० ॥

लवंगपाकः ॥ ६१ ॥

प्रस्थार्द्धं देवकुसुमं गव्यं दुग्धं तथाढकम् ॥
घृतं च कुडवोन्मानं शर्कराप्रस्थमेव च ॥ १ ॥
शनैर्मन्दाग्निना पाच्यं चूर्णानीमानि योजयेत् ॥
नीलोत्पलं पलं त्वेलाचन्दनं च पलार्द्धकम् ॥ २ ॥
कर्षांशं रसकर्पूरमगुरुं तारकासमम् ॥
एतैश्चूर्णैः प्रदातव्यं पञ्चामृतसमायुतम् ॥ ३ ॥
रोगाणां शमनं त्वेतज्जर्जरीकृतवर्ष्मणाम् ॥
राजयक्ष्ममहाश्वासं कासं पंचविधं तथा ॥ ४ ॥
वलीपलितमन्यच्च रोगजालं व्यपोहति ॥ ५ ॥

इति लवंगपाकः ॥ ६१ ॥

ऽ१ लवंग, ऽ= गाई का दूध, ऽ॥ घी, ऽ२ शर्करा ॥ १ ॥ इनको धीरे २ मंदाग्नि से पकाकर नीचे के चूर्ण डालै ऽ= नीलोफर, इलायची, चन्दनसफेद ये चार२ तोला ॥ २ ॥ रसकपूर, अगर, चांदी के वर्क यह प्रत्येक दो २ तोला इन सबका चूर्णकर † पञ्चामृत

---

† दुग्धं सशर्कराश्चैव घृतं दधि तथा मधु । पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं विधेयं पाककर्मसु ॥ १ ॥

(घी, शक्कर, दूध, दही, शहद) के साथ एक में मिलावे ॥ ३ ॥ और खावे तो यह पुराने रोगों, राजयक्ष्मा, महाश्वास, पांच प्रकार की कास ॥ ४ ॥ बलीपलित और सब तरह के रोगों को दूर कर देता है ॥ ५ ॥

इति लवंगपाकः ॥ ६१ ॥

राजयक्ष्मादौ महाकामेश्वरः ॥ ६२ ॥

कंकोलो बृहदेलिका गजबला वीरा वरेन्दीवरी
श्यामा वत्सकबीजवारणकणा विश्वोपकुल्योषणम् ॥
बीजानि त्रपुसात्रिकराटककशेरुखड्डेक्षुराणां तथा
मज्जानोबदरी विभीतकशिवाधात्रीप्रियालोद्भवाः ॥१॥
तालीसं शिवकंदलामृतलता गांगेरुकीबीजकं
शृङ्गी धान्यकचित्रकं ससुलभं हीराशटी मेथिका ॥
दीर्घायुर्ऋषभोथ मेदसुमहामेदोथ काकोलिका
तद्वत्क्षीरकवायसी निगदिता वृद्धिस्तथा ऋद्धिरुक् ॥२॥
शालूकाद्वयरूमिकाह्वयकटू जीरा जमोदाह्वयं
ह्यब्धेः शोषमुशीरकं च मुसलीमांसीसवासामिसिः ॥
जातीपत्रलवंगमर्ककरभः काश्मीरकं वानरी
चातुर्जातकलोणिकाकुमुदिका जातीफलं यष्टिका ॥३॥
द्राक्षा खाखसवल्कजं मदनकं शृंगाटशुभ्रोषणं

ज्वर, हृद्रोग, कृमिरोग, कामला, पांडुरोग, हलीमकादि सबको नाश करता है ॥ ६ ॥ यह वीर्यवृद्धिकारक और कामान्ध और युक्ति से गुरु भोजन करनेवाले कामियों को पुष्टिकारक है, इसके सेवनसे पुरुष गरुड़के समान पराक्रम में, अश्व सदृश वेग में, कांति में चन्द्र समान, बल में हाथी के तुल्य, नाद में मयूर समान, बुध के सम बुद्धि में ॥ ७ ॥ देह की सुंदरता और लक्ष्मीवान् होकर वृद्ध भी श्रीकामेश्वर के सेवन से युवा की श्री को प्राप्त कर लेता है ॥ ८ ॥

इति महाकामेश्वरो मोदकः ॥ ६२ ॥

"मुफरवा" इतिप्रसिद्धं यवनकृतावलेहः ॥६३॥

जातीपल्लवनागकेशरकणा कंकोलमज्जाफलं
श्यामा कट्फलशारिवागुरुत्वचा मुस्तंशटी मस्तकी ॥
मांसी शाल्मलि धातकी कटुलता मेथी वरी गोक्षुरो
बीजं वानरिकोकिलाक्षि च गुहाधूर्तः परं पंकजम् ॥ १ ॥
कुष्ठं चोत्पलकेसरं च मधुकं श्रीखण्डजातीफलं
चूर्णं कन्दविदारिमूसलियुता रम्भाप्रियंगोः फलम् ॥
जीवद्वन्द्वसविश्वभेषजवरास्थूलात्वचोधान्यकं
चीनीचोपसमुद्रशोषशिखरं चाकारकर्भं कचम् ॥ २ ॥
इन्दुः कुंकुमनाभिजं सगगनं चूर्णं समं कारयेत्

स्वर्णं तारभुजंगवंगमयसा वज्रं तथा ताम्रकम् ॥
मुक्ताशंभवतालकामिविधिना शुद्धं मृतं योजयेत्
तूर्य्यांशं विजयादलस्य विमलं चूर्णं ततो दापयेत् ॥ ३ ॥
तेषामर्द्धांशयुक्ता विमलतरसिता चौद्रमेवं सितांशं
तोयं स्वल्पं प्रदेयं मृदुतरदहनैर्लेहसिद्धिर्विधेया ॥
शीते क्षिप्त्वा तु चूर्णं घृतपरिलुलितंघट्टयेत्तच्च दार्व्या
म्लेच्छैनोक्तःसुलेहोमुफर्* इतिमतः सेव्यतां सर्वकालम् ४
काम्यं वामाप्रमोदं सकलगदहरं राजयोग्यं प्रदिष्टम्॥ ५ ॥

इति मुफरवावलेहः ॥ ६ ३ ॥

आवित्री, नागकेशर, पीपरि, कंकोल, माजूफल, शारिवा, कायफर, अनन्तमूल, अगर, मीठी बच, नागरमोथा, कचूर, रूमी-मस्तगी, जटामांसी, सेमर का मुसला, धव के फूल, कुटकी, मुश्क-दाना, मेथी, शतावरि, गोखुरू, कौंचबीज, तालमखाना के बीज, पिथवन, धतूर, कमल ॥ १ ॥ कूट, कमलकेशर, मुरेठी, चन्दन सफेद, जायफल, बिदारीकंद, सफेद मुसली, केला की कंद, गूंदनी के फल, जीवक, ऋषभक, सोंठि, त्रिफला, इलायची, दालचीनी, धनियां, चोपचीनी, हिज्जलबीज, अपामार्ग (लटजीरा), अकरकरा, सुगन्धबाला ॥ २ ॥ कपूर, केशर, कस्तूरी, अभ्रक, स्वर्णभस्म, चांदी की भस्म, वंग, कान्तीसार, हीरा की भस्म, ताम्रभस्म, मोती की भस्म, पारा की भस्म, हरतालकी भस्म, विधि से शोधित और भस्म किये हुये

* तुरुष्कभाषायां "मुफ" इति ।

सब रस जावित्री से हरतालभस्म पर्य्यन्त ६१ औषधें समभाग युक्त करै और सबकी चौथाई निर्मल भंग का चूर्ण मिलावे ॥ ३ ॥ और सबकी आधी मिश्री और मिश्री का आधा सहत मिलावे और थोड़ा जल छोड़कर मंदाग्नि में अवलेह सिद्ध करै । शीत होने पर घृत से तर चूर्ण छोड़कर करछी से गाढ़ा करै । यह यवनकृत मुफरवा सर्वदा सेवन करै तो ॥ ४ ॥ काम्य, कामवर्द्धक, स्त्रियों को आनंद देनेवाला, सकल रोगनाशक, राजयोग्य यह मुफरवा है ॥ ५ ॥

इति मुफरवावलेहः ॥ ६३ ॥

चोपचीनीपाकः ॥ ६४ ॥

चोपचीन्या दशपलं गोदुग्धे चाढके क्षिपेत् ॥
दुग्धे जीर्णे क्षिपेत्तत्र सिताकर्षशतद्वयम् ॥ १ ॥
एलालवंगकर्पूरं चातुर्जातं कटुत्रयम् ॥
काश्मीरं जातिपत्री च मालती सुतमर्कटम् ॥ २ ॥
काकोली मृगनाभिश्च शृंगाटं वंशजं तथा ॥
विदारीमुसलीकंदं कंकोलं च शतावरी ॥ ३ ॥
एतानि शुक्तिमात्राणि मृतं ताम्राभ्रकं तथा ॥
द्विकर्षमोदकं कुर्य्यादेकैकं भक्षयेन्नरः ॥ ४ ॥
वातव्याधिषु सर्वासु संधिपीडाकटिग्रहे ॥
अरोचके प्रतिश्याये कासे श्वासे क्षये तथा ॥ ५ ॥

धातुक्षीणे बलक्षीणे ओजःक्षीणे विशेषतः ॥
उपयोगेषु सर्वेषु योजनीयो भिषग्वरैः ॥ ६ ॥
पथ्यं दुग्धरसं मांसं पथ्यं निर्वातसेवनम् ॥
चोपचीन्यास्त्वयं पाको भारद्वाजेन भाषितः ॥७॥

इति चोपचीनीपाकः ॥ ६४ ॥

ऽ१। चोपचीनी ऽ८ गाई के दूध में पकावे जब दुग्ध खोवा हो जाय तब ऽ६। मिश्री ॥ १ ॥ इलायची छोटी, लवंग, शुद्धकपूर, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, सोंठि, पीपली, मिर्च, केशर, जावित्री, जायफल, कौंचबीज ॥ २ ॥ काकोली, कस्तूरी, सिंघाड़ा, वंशलोचन, विदारीकंद, सफेद मुसली, कंकोल, शतावरि ॥ ३ ॥ ताम्रेश्वर, अभ्रक यह सब चार २ तोला लेवे। चार २ तोलाके मोदक बनाकर एक २ खावे ॥४॥ तो सब तरह की वातव्याधियों में सन्धियों की पीड़ा और कमर के जकड़ जाने में अरोचक, जुखाम, कास, श्वास, क्षयी ॥ ५ ॥ धातुक्षीण, बलक्षीण और ओजःक्षीण में विशेषकर उपयोग करै ॥ ६ ॥ दुग्ध, मांसरस, निर्वात सेवन पथ्य है। यह चोपचीनीपाक श्रीयुतभारद्वाजजी का कहा हुआ है ॥ ७ ॥

इति चोपचीनीपाकः ॥ ६४ ॥

मञ्जिष्ठापाकः ॥ ६५ ॥

मञ्जिष्ठां च पलान्यष्टौ गोदुग्धे चाढके पचेत् ॥
दुग्धे जीर्णे क्षिपेत्तत्र खण्डं च पलत्रिंशकम् ॥ १ ॥

घृतं च माक्षिकं देयं मात्रा चार्द्धशरावकम् ॥
चातुर्जातं लवंगैला मांसी जातीफलं तथा ॥ २ ॥
धात्री खदिरसारं च घनसारं तथैव च ॥
अश्वगंधा बला मूलं शाल्मली च शतावरी ॥ ३ ॥
विदारीमुसलीकंदं त्र्यूषणं च फलत्रिकम् ॥
धान्यकं जीरकं लोध्रं द्राक्षा खर्ज्जूरवंशजम् ॥ ४ ॥
चंदनागुरुकस्तूरी प्रत्येकं पिचुमात्रकम् ॥
द्विकर्षमोदकं कुर्य्यात् प्रातःकाले च भक्षयेत् ॥ ५ ॥
योनिरक्तप्रवाहं च योनिशूलं त्रिदोषजम् ॥
स्त्रीणां पुष्टिकरं चैव नाशयेत्प्रदरं परम् ॥ ६ ॥
एकमासप्रयोगेण वृद्धापि तरुणी भवेत् ॥ ७ ॥

इति मञ्जिष्ठापाकः ॥ ६५ ॥

ऽ१ मँजीठ ऽ८ गोदुग्ध में पकावे जब दुग्ध का खोवा होजाय तब ऽ३॥। खांड़ ॥ १ ॥ घी और सहत आध २ सेर मिलावे तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, लवंग, इलायची, जटामांसी, जायफल ॥ २ ॥ आंवला, खैरसार, कपूर, असगंध, बरियारी की जड़, सेमर का मुसला, शतावरी ॥ ३ ॥ विदारीकन्द, सफेद मुसली, सोंठि, पीपरि, मिर्च, त्रिफला, धनियां, स्याहजीरा, पठानी-लोध, दाख, छुहारा, वंशलोचन ॥ ४ ॥ चंदन, अगर, कस्तूरी, प्रत्येक दो २ तोला लेकर, चार २ तोले भर के मोदक बना प्रातः-

काल खावे ॥ ५ ॥ तो रक्तप्रदर (योनि-रक्तप्रवाह), सान्निपातिक योनिशूल, प्रदरादि को नाश करता है और स्त्रियों को पुष्टिकारक है॥ ६ ॥ एक मास सेवन करने से वृद्धा स्त्री तरुणी होजाती हैं॥ ७॥

इति मञ्जिष्ठापाकः ॥ ६५ ॥

शाल्मलीपाकः ॥ ६६ ॥

शाल्मल्यायाः रसप्रस्थं प्रस्थार्द्धं गोक्षुरस्य च ॥
तस्यार्द्धं वानरीबीजं बीजार्द्धं च शतावरी ॥ १ ॥
द्रोणार्द्धं माहिषं क्षीरं खण्डं कर्षशतद्वयम् ॥
पाचयेदायसे पात्रे तच्चूर्णं च विनिक्षिपेत् ॥ २ ॥
जातीपत्रलवंगैला मांसीत्वङ्नागकेशरम् ॥
कालीयकं त्रिकटुकं तालीसं च फलं त्रिकम् ॥ ३ ॥
जातीफलं च काश्मीरं कर्पूरं च वटांकुरम् ॥
कोकिलाक्षस्य बीजानि मज्जात्रीणि सपत्रकम् ॥ ४ ॥
एतानि शुक्तिमात्राणि भंगं दद्याच्चतुष्पलम् ॥
पारदं च मृतं लोहं चाभ्रकं च पलार्द्धकम् ॥ ५ ॥
द्विकर्षमोदकं कुर्य्यादेकैकं भक्षयेद् बुधः ॥
निहन्ति सर्वमेहांश्च कामं दद्याच्चतुर्गुणम् ॥ ६ ॥



नारीशतं च रमते कान्ताप्रीतिविवर्द्धकः ॥
भारद्वाजेन संप्रोक्तो नारीणां च सुखप्रदः ॥ ७ ॥
इति शाल्मलीपाकः ॥ ६६ ॥

ऽ२ सेमर का गोंद ऽ१ गोखुरू बड़ी ऽ॥ कौंचबीज ऽ। शतावरि ॥ १ ॥ भैंस का दूध ।ऽ६। खांड़ ऽ६ इनको लोहे के पात्र में पकाकर वक्ष्यमाण औषधियों का चूर्ण डालै ॥ २ ॥ जावित्री, लवंग, इलायची, जटामांसी, कलमीतज, नागकेसर, दारुहल्दी, सोंठि, पीपरि, मिर्च, तालीस, त्रिफला, (आमला, हड़, बहेड़ा) ॥ ३ ॥ जायफल, केशर, शुद्धकपूर, बरगद के अंकुर, तालमखाने के बीज, मज्जात्रय (गरी, बादाम, चिरौंजी), पत्रज ॥ ४ ॥ यह सब चार २ तोले ले ऽ॥ भांग, पारा, कांतीसार, अभ्रक चार २ तोला डालकर ॥ ५ ॥ चार २ तोले के मोदक बनाकर एक २ खावे तो सर्व प्रमेह नाश हों और काम की चतुर्गुण वृद्धि हो ॥ ६ ॥ सौ स्त्रियों का संतोषकारक कान्ताओं को प्रीतिवर्द्धक होवे। यह भारद्वाज का कहा हुआ स्त्रियों को सुखप्रद शाल्मलीपाक है ॥ ७ ॥

इति शाल्मलीपाकः ॥ ६६ ॥

माषपाकः ॥ ६७ ॥

तुलार्द्धं माषपिष्टं च द्रोणक्षीरेऽवतारयेत् ॥
खण्डं पलशतं क्षिप्त्वा भेषजानि प्रयोजयेत् ॥ १ ॥

जातीफलं कुबेराक्षं वरांगं जातिपत्रकम् ॥
हंसपादं लोहचूर्णं षष्टिका नागकेशरम् ॥ २ ॥
पिप्पली देवकुसुमं शुक्तिमात्रं च कल्पयेत् ॥
प्रक्षिप्य शोभने पात्रे भक्षयेत्प्रातरुत्थितः॥ ३ ॥
बलपुष्टिकरं हृद्यं चक्षुष्यं सर्वमेहजित् ॥
पंचकासं क्षयं श्वासं हन्ति माषं प्रकल्पितम् ॥४॥

इति माषपाकः ॥ ६७ ॥

ऽ६। उर्द का आटा ।॥ऽ२ गऊ के दूध में ।ऽ२॥ खांड़ डाल पकावे॥ १ ॥ जायफल, इन्द्रयव, तजकलमी, जावित्री, शुद्ध शिगरफ, लोहभस्म, सांठी के चावल, नागकेसर॥ २ ॥ पिप्पली, लवंग यह सब चार २ तोला लेकर मिलावे और शुभ पात्र में रख कर प्रातःकाल खावे ॥ ३ ॥ तो यह बल की वृद्धि, हृदय को लाभकारी, नेत्रज्योतिवर्द्धक, सर्वप्रमेहनाशक, पंच कास, क्षयी और श्वास को नाश करता है ॥ ४ ॥ इति माषपाकः ॥ ६७ ॥

मुसलीपाकः ॥ ६८ ॥

मुसल्याश्च पलान्यष्टौ तुलाक्षीरे विपाचयेत् ॥
सर्पिर्द्विकुडवं देयं खण्डं कर्षशतं तथा ॥ १ ॥
गुन्द्रापलचतुष्कं च मज्जात्रीणि पलत्रयम् ॥
जातीफलं लवंगं च कुङ्कुमं चव्यतुम्बुरुम् ॥ २ ॥

मांसी मर्कटबीजानि चातुर्जातं कटुत्रयम् ॥
जातीपत्रकरंभं च प्रत्येकं पिचुमात्रकम् ॥ ३ ॥
द्विकर्षमोदकं कुर्य्यादेकैकं भक्षयेन्नरः ॥
धातुक्षीणबलं क्षीणवीर्य्यं मन्दानलं तथा ॥ ४ ॥
कासश्वासारुचीपाण्डुदौर्बल्यं विषमज्वरम् ॥
षण्डोऽपि रमते नारीं शतं वा नात्रसंशयः ॥ ५ ॥
शुष्कगात्रं भवेत्पुष्टं मनोज्ञं कान्तिवर्द्धनम् ॥
वातव्याधिषु सर्वेषु हितोयं नात्र संशयः ॥ ६ ॥
प्रमेहशुक्रहृच्चैव बलीपलितनाशनः ॥
मुसल्यादिरयं पाको बन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥७॥

इति मुसलीपाकः ॥ ६८ ॥

ऽ१ सफेद दिल्लीवाली मुसली ।ऽ२॥ गोदुग्ध में पकावे फिर ऽ१ घी में उस खोवे को भूनकर ऽ३= खांड़ ॥ १ ॥ ऽ॥ बबूल का गोंद, मज्जात्रय (गरी, बादाम, चिरौंजी) यह सब ऽ।= अर्थात् प्रत्येक आध २ पाव, जायफल, लवंग, केशर, चाब, धनियां ॥ २ ॥ जटामांसी, कौंचबीज, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, सोंठि, पीपरि, मिर्च, जावित्री, अकरकरा यह प्रत्येक दो २ तोले ले चूर्ण को मिलावे ॥ ३ ॥ और चार २ तोला के मोदक बना एक २ मोदक खावे तो धातुक्षीणता, बल की क्षीणता, क्षीणवीर्य्य, मन्दाग्नि ॥ ४ ॥ कास, श्वास, अरुचि, पाण्डुरोग,

दुर्बलता, विषमज्वर नाश हो और नपुंसक भी सौ स्त्री के प्रसन्न करने में समर्थ हो इसमें सन्देह नहीं है ॥ ५ ॥ सूखागात्र पुष्ट होकर मनोज्ञ और कान्तिमान् होजाता है ॥ ६ ॥ यह प्रमेह, शुक्रहत्, सब वात-व्याधियों में हितकारी और बलीपलितनाशक मुसल्यादि पाक है जिसके सेवन से बांझ भी पुत्रवती होजाती है ॥ ७ ॥

इति मुसलीपाकः ॥ ६८ ॥

नारिकेरपाकः ॥ ६९ ॥

कनको मुसलीकन्दो तुरुष्कोहिषरस्तथा ॥
उटंगणं वानरीबीजं चूर्णयित्वा पृथक् पृथक् ॥ १ ॥
कर्पासमज्जा दुग्धेन क्षेप्याः स्युस्सप्तभावनाः ॥
सूर्य्यातपे सुचूर्णेन नारिकेरन्तु पूरयेत् ॥ २ ॥
द्वात्रिंशद्गुणदुग्धेन विपाच्यं मृदुवह्निना ॥
चूर्णयित्वा घृते पाच्यं भेषजैस्सहचूर्णितैः ॥ ३ ॥
चातुर्जातं लवंगं च जात्रीपत्रफलं तथा ॥
पलार्द्धं खण्डकुडवं गृहीत्वाऽनुपिबेत्पयः ॥ ४ ॥
वातरोगान्प्रमेहांश्च कासं बलक्षयं तथा ॥
वृद्धो युवायते कामी नारिकेरस्य पाकतः ॥ ५ ॥

इति नारिकेरपाकः ॥ ६९ ॥

शुद्ध धतूरे के बीज, सफेद मुसली, खुरासानी अजवाइनि



बीजबन्द, उटंगण के बीज, कौंचबीज इनको समभाग लेकर जुदा २ चूर्ण करे ॥ १ ॥ कपास के बिनौलों को दूध में पकाकर शिला पर बाँटकर छान ले फिर उसे दूध में मिलाकर सब चूर्ण की सात भावना देकर घाम में सुखा लेवे और उस चूर्ण को नारियर के गोले में भरकर ॥ २ ॥ बत्तीस गुने दूधमें मंदाग्नि से पकावे फिर सबको बाँटकर चूर्ण की हुई दवाइयों को घी में पकावे ॥ ३ ॥ तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, लवंग, जावित्री, जायफल प्रत्येक चार २ तोले और ऽ॥ खांड़ मिलाकर मोदक बनाकर खावे और ऊपर से दूध पीवे ॥ ४ ॥ तो सब वातरोग प्रमेह, कास, बलक्षय नाश होजायँ और वृद्ध भी इस नारिकेरपाक से जवान और कामी होजाता है ॥ ५ ॥

इति नारिकेरपाकः ॥ ६९ ॥

अन्य नारिकेरपाकः ॥ ७० ॥

द्वौ प्रस्थौ किल गोलकान् घृततुला प्रस्थं च चारूद्रवं
गोदुग्धे च तुलाद्वये परिपचेच्छुभ्रासिता चाढकम् ॥
जातीपत्रपलं च देवकुसुमं शृंगाटकं वानरी
जाती चम्पकधान्यकं मदनिका गांगेरुकी दाडिमम् ॥ १ ॥
वाराही च विदारिगोक्षुरशटी मांस्यश्वगन्धासमं
चातुर्जातशतावरी त्रिकटुकं मुस्तं हिमं त्रैफलम् ॥
मिश्रेयाकुशकासचूर्णितमिदं भाव्यं रसैः शाल्मलेः

पात्रे ताम्रमये विपाच्यमपि तं स्निग्धेच भांडे क्षिपेत्॥ २॥
खादेत्तस्य पलद्वयं प्रकुरुते वर्णाग्निवीर्यं बलं
एतस्यानुपिबेत्तदेव कथितं दुग्धं यथेष्टं सुधीः ॥ ३ ॥-

इति अन्य नारिकेरपाकः ॥ ७० ॥

ऽ४ नारियर के गोला, ।ऽ२॥ घी, ऽ२ चिरौंजी, ॥ऽ५ गाई का दूध, ऽ८ मिश्री मिलाकर पकावे फिर नीचे लिखी हुई औषधियों का चूर्ण मिलावे, जावित्री, लवंग, सिंघारा, कौंचबीज, चमेली के फूल, चम्पा के फूल, धनियां, मोतिया के फूल, गंगेरुआ, अनार के दाने ॥ १ ॥ वाराहीकंद, विदारीकंद, गोखुरू, कचूर, जटामांसी, अश्वगंध, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, शतावरि, सोंठि, पीपरि, मिर्च, नागरमोथा, कर्पूरशुद्ध, त्रिफला (आमला, हड़, बहेड़ा), मेथी, कुश की जड़, कास की जड़ प्रत्येक आठ २ तोले लेकर चूर्णकर सेमर के रसमें भावना देकर ताम्र के पात्र में पकाकर स्निग्ध पात्र में रख लेवे ॥ २ ॥ उसमें से दो पल प्रतिदिन खाने मे वर्ण, अग्नि, वीर्य्य, बल, बढ़ जाता है, इसको खाकर ऊपर से इच्छानुसार औटाया दूध पीवे ॥ ३ ॥

इति अन्य नारिकेरपाकः ॥ ७० ॥

अहिफेनपाकः ॥ ७१ ॥

अकालकं केसरदेवपुष्प-
जातीफलं त्वक् च सहस्रवेधम् ॥



एतानि कुर्वीत समानि चार्द्ध-
माफूकमत्राङ्गगुणा सिता स्यात् ॥ १ ॥
विमर्द्य कुर्य्याद् गुटिका निशायां
मुखे कृता कामयते शतानि ॥
आसेवनं यः प्रकरोति नित्यं
दृढोन्नतांगः स च मानवः स्यात् ॥ २ ॥
समस्तमातंगबलः सकामी
व्रजन्ति रोगाः क्षयजाश्च सर्वे ॥ ३ ॥
इत्यहिफेनपाकः ॥ ७१ ॥

अकरकरा, नागकेशर, लवंग, जायफल, तज, हींगभुनी यह सब सम भाग, सबकी आधी शुद्ध अफीम, सबकी छः गुनी मिश्री मिलावे ॥ १ ॥ मर्दन कर गुटिका बना रात्रि को मुखमें रखके स्त्री सेवन करनेसे वीर्य्यस्तंभन होता है और मैथुनशक्ति बढ़ती है, जो मनुष्य सदैव सेवन करता है वह दृढ़ उन्नतांग ॥ २ ॥ हाथी के समान बलवाला, कामी होता है और उसके सब रोग नाश होजाते हैं ॥ ३ ॥

इति अहिफेनपाकः ॥ ७१ ॥

इति श्रीमच्चिकित्सकवर्य्यद्विवेदिपुरनिवासिपाण्डेयोपपदगुरुदीनलाल शर्म्मसूनुविद्वद्वरश्रीयुतगंगाप्रसादशर्म्मविरचिता मनोहरी टीकासहिता बृहत्पाकावली समाप्ता ॥

पन्नालाल भार्गव द्वारा—तेजकुमार-प्रेस, लखनऊ में मुद्रित।